# इहलोक और परलोक

## आत्मा

### (१)

### आत्मा के सम्बन्ध में प्रमुख विद्वानों के मत

संसार के सभी प्रमुख धर्ममतों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि प्रत्येक मनुष्य के स्थूल शरीर के भीतर अत्यन्त सूक्ष्म देहधारी ऐसी एक सत्ता है, जो अमर है और जिसका कभी विनाश नहीं होता। इस अमर सत्ता को **"आत्मा"** कहा जाता है।

किसी भी धर्म को आत्मा की अमरता के विषय में संदेह नहीं है। परन्तु देह त्यागने के बाद आत्मा की गति अथवा परिणति के विषय में विभिन्न धर्मों में अलग-अलग मत दिखाई देते हैं।

हिन्दू और बौद्ध कहते हैं कि मनुष्य की मृत्यु के बाद उसकी अपूर्ण अथवा अतृप्त इच्छाएँ आत्मा के साथ-साथ परलोक में जाती हैं। यदि वहाँ भी इन इच्छाओं का विनाश न हो, तो आत्मा को पुनः जन्म ग्रहण करके इन सभी इच्छाओं की पूर्ति करनी पड़ती है।

मृत्यु के बाद और पुनर्जन्म से पहले आत्मा जिस लोक में रहती है, उसे **प्रेतलोक** कहा जाता है।

जो आत्माएँ वासनारहित होकर उस पार जाती हैं, वे बहुत थोड़े समय में प्रेतलोक को छोड़कर उच्च लोक में चली जाती हैं। और इस प्रकार की आत्माओं की संख्या अत्यन्त कम है।

ऊपर हमने अत्यन्त संक्षेप में जो कुछ कहा है, वह केवल शास्त्रों की बात नहीं है। परलोकगत आत्माओं के निकट से भी हमें ठीक इसी प्रकार की बातें ज्ञात हुई हैं। मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति किसी अनुभवी गुरु की सहायता से परलोक-तत्त्व का अनुसंधान करे, तो वह परलोक की आत्माओं के साथ अपनी इच्छानुसार भावों का आदान-प्रदान कर सकता है और परलोक के सम्बन्ध में अनेक अद्भुत एवं नवीन बातें जान सकता है।

पृथ्वी पर एक श्रेणी के लोग ऐसे हैं, जो स्वयं अपनी आँखों से न देखें तो किसी अदृष्टपूर्व घटना पर विश्वास नहीं करते; और यदि कोई दूसरा व्यक्ति कहे कि उसने उसे अपनी आँखों से देखा है, तो वे हँसकर उस बात को उड़ा देते हैं।

यहाँ मैं अपनी कहानी संक्षेप में बताना आवश्यक समझता हूँ। क्योंकि मैं भी आरम्भ में बहुत बड़ा आस्तिक नहीं, बल्कि इसके विपरीत, अत्यन्त संदेहवादी था।

जब मैं पुराने क्वीन्स कॉलेज में पढ़ता था, तब सुप्रसिद्ध **विनिस साहब** वहाँ के अध्यापक थे। उन्होंने परलोक के विषय में यथासम्भव बहुत अनुभव प्राप्त किया था और उन्हें पूर्ण विश्वास था कि परलोकगत आत्माओं को सहज ही इस लोक में वापस लाया जा सकता है और हम अपनी इच्छानुसार उनसे बातचीत तथा परिचय कर सकते हैं।

जब भी उन्हें समय मिलता, वे हमें परलोक के सम्बन्ध में तरह-तरह की बातें बताते थे। एक बार उन्होंने अपने बंगले में परलोकगत आत्माओं के अस्तित्व के सम्बन्ध में एक अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत किया। इसका विस्तृत विवरण मैंने अपनी दूसरी पुस्तक **"मृत्यु के बाद"** में दिया है।

विनिस साहब के सम्पर्क में आने से पहले मैं परलोक के सम्बन्ध में किसी भी बात पर बिल्कुल विश्वास नहीं करता था। यहाँ तक कि यदि कोई कहता—"अमुक देश-प्रसिद्ध व्यक्ति इस बात पर विश्वास करते हैं"—तो मैं कहता, "देखो, वह देश-प्रसिद्ध व्यक्ति हो सकता है, लेकिन देवता तो नहीं है। केवल

उसके प्रसिद्ध होने के कारण उसके प्रत्येक मत को वेदवाक्य मान लेना तो केवल हठ की बात है।"

लेकिन विनिस साहब की कृपा से मेरा वह **"हामबड़ा" अर्थात् अपने ज्ञान पर अत्यधिक गर्व करने वाला भाव** शीघ्र ही दूर हो गया।

इसका परिणाम यह हुआ कि आज लगभग चालीस वर्षों से मैं इस **प्रेत-तत्त्व** का अध्ययन और अनुसंधान कर रहा हूँ। जिस प्रकार इसकी खोज चल रही है और इसके सम्बन्ध में नित नये-नये तथ्य सामने आ रहे हैं, उससे मुझे लगता है कि शीघ्र ही ऐसा समय आएगा, जब घर-घर में इसकी चर्चा आरम्भ हो जाएगी।

इस संसार में मनुष्य के लिए मृत्यु का विचार ही सबसे भयानक प्रतीत होता है। मृत्यु का नाम सुनकर हम जिस प्रकार भय से अभिभूत हो जाते हैं, उतना किसी और बात से नहीं होते।

इसका एकमात्र कारण यह है कि हम मृत्युलोक को अत्यन्त रहस्यमय मानते हैं। साधारणतः हम नहीं जानते कि मृत्यु के बाद क्या होता है। हम देखते हैं कि मृत्यु के बाद कोई वापस नहीं आता।

दुनिया के लगभग सभी धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि जो लोग पाप करते हैं, उन्हें मृत्यु के बाद अत्यन्त भयानक नरक-यातना भोगनी पड़ती है। नरक को इस प्रकार चित्रित किया गया है कि उसमें यातना न पाने वाला व्यक्ति अत्यन्त दुर्लभ है।

लेकिन यूरोप और अमेरिका की नयी **प्रेततत्त्व-अनुसन्धान समितियों** ने अब पूर्णतः वैज्ञानिक ढंग से यह प्रमाणित किया है—या प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है—कि मृत्यु के बाद की नरक-कथा पूरी तरह वास्तविक नहीं है।

मृत्यु के बाद हम अपने आपको ठीक इसी पार के समान पाते हैं। केवल स्थूल शरीर हमारे पास नहीं रहता, इसलिए इन्द्रियग्राह्य भौतिक पदार्थों का उपभोग हम नहीं कर सकते। जिनकी यहाँ की वासनाएँ पूरी नहीं हुई हैं, वे वासनाएँ भी आत्मा के साथ-साथ उस पार चली जाती हैं। वहाँ स्थूल शरीर न होने के कारण उन वासनाओं की भी पूर्ति नहीं हो पाती और आत्मा को मन-ही-मन भयंकर यन्त्रणा भोगनी पड़ती है। **एक अर्थ में यही उस पार की नरक-यातना है।**

मृत्यु के बाद हम आत्मा को अपनी इच्छानुसार इस पार बुला सकते हैं, उसके साथ बातचीत कर सकते हैं, यहाँ तक कि उसे देखने में भी समर्थ हो सकते हैं। हमारी यह बात कोई **अरबी**

**उपन्यास की कल्पना** नहीं है। इसके अनेक प्रत्यक्ष उदाहरण हम इस पुस्तक में उचित स्थान पर प्रस्तुत करेंगे।

यदि हम सभी यह जान सकें कि मृत्यु के बाद हमारे स्थूल शरीर के नष्ट होने के अतिरिक्त हमारा और कोई परिवर्तन नहीं होता और स्थूल शरीर न होने के कारण हम उस पार इस संसार के विभिन्न कष्टों और असुविधाओं से मुक्त हो जाते हैं, तो मृत्यु से हम तनिक भी भयभीत नहीं होंगे। बल्कि जब वह सामने आएगी, तब हम उसका स्नेहपूर्वक स्वागत करेंगे।

मृत्यु के सम्बन्ध में सभी के मन में ऐसी ही धारणा उत्पन्न हो—इसी उद्देश्य से आज हम पाठकों के सामने उपस्थित हुए हैं। हमारी प्रार्थना है कि वे हमारी बातों और घटनाओं का **पूर्णतः निष्पक्ष होकर विचार करें।**

---

## यीशु और आत्मा की अमरता

यीशु मसीह एक युगावतार हैं। उनके धर्ममत को आज समस्त संसार के करोड़ों लोग मानते हैं। वे एक महामानव थे, इसे कोई भी अस्वीकार नहीं करेगा।

इसी यीशु ने आत्मा की अमरता को स्वीकार किया था। उनकी मृत्यु के तीन दिन बाद उनकी **ज्योतिर्मय आत्मा** उनके शिष्यों के सामने प्रकट हुई थी।

इस घटना से यह बात स्पष्ट रूप से ज्ञात होती है कि मृत्यु के बाद समय-समय पर आत्मा फिर से इस संसार में लौटकर आ सकती है—इस बात का उन्हें ज्ञान था।

इस्लाम धर्म में मृत्यु को **"इन्तेकाल"** कहा जाता है। इसका अर्थ है—**परिवर्तन**। इस मत के अनुसार आत्मा का नाश नहीं होता।

कुरआन शरीफ के एक स्थान पर कहा गया है—

"हम इस संसार में खिलौने के समान सृष्ट नहीं किये गये हैं। तुम्हारे देहत्याग के बाद अनन्त जीवन आरम्भ होगा।"
*(अध्याय 23, आयत 115)*

अन्यत्र कहा गया है—

"मनुष्य के कर्मफल उसे कभी नहीं छोड़ते। अन्तिम न्याय के दिन ये सभी कर्मफल ईश्वर के सामने प्रस्तुत किये जाएँगे।"
*(अध्याय 17, आयत 14)*

एक अन्य स्थान पर कहा गया है—

“तुम्हारी वासनाएँ और रिपु सदा तुम्हारे साथ परलोक में जाएँगे। यदि तुम्हें दिव्य-दृष्टि प्राप्त होती, तो तुम देख सकते कि उस पार कुकर्म का क्या फल होता है।”
*(अध्याय 102)*

इससे यह बात बिल्कुल स्पष्ट होती है कि **आत्मा अमर है**, इस बात को इस्लाम ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है।

---

**बौद्ध धर्म में कर्मफल**

बौद्ध धर्म में **कर्मफल** को इतना अधिक महत्व दिया गया है कि बौद्धों ने इस बात पर विचार करना भी आवश्यक नहीं समझा कि ईश्वर है या नहीं।

वे कहते हैं—यदि कोई व्यक्ति पापकर्म करता है, तो उसे उसके लिए दण्ड अवश्य भोगना पड़ेगा; ईश्वर भी उसे उस कर्म के फल से बचा नहीं सकता।

जो लोग कर्म को इस प्रकार देखते हैं, उनके लिए आत्मा की अमरता और जन्मान्तर को स्वीकार करना बहुत स्वाभाविक बात है।

यहाँ यह भी कह देना आवश्यक है कि बौद्ध धर्म का यह **कर्मयोग** हमारे हिन्दू धर्म की ही एक शाखा है। अन्तर केवल इतना है कि हम कहते हैं—यदि ईश्वर के प्रति भक्ति हो, निःस्वार्थ भाव से अच्छे कर्म किये जाएँ और पाप करने के बाद सच्चा पश्चात्ताप किया जाए, तो बुरे कर्मों के फल से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। बौद्ध इसे स्वीकार नहीं करते।

---

**गीता में आत्मा**

हमारे नव्य सम्प्रदाय के बहुत-से लोगों के मत में **गीता इस युग का महावेद** है। आइए देखें कि आत्मा के विषय में गीता का क्या मत है।

इसके दूसरे अध्याय में कहा गया है—

**न जायते म्रियते वा कदाचित्**
**नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।**
**अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो**
**न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥**

अर्थात् आत्मा का न तो जन्म होता है और न मृत्यु। जन्म ग्रहण किये बिना भी उसका अस्तित्व बना रहता है। वह सदा

विद्‌यमान है; वह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और सनातन है। शरीर नष्ट हो जाने पर भी उसका नाश नहीं होता।

---

**परमहंसदेव, विवेकानन्द और विजयकृष्ण गोस्वामी**

आधुनिक युग के **परमहंसदेव, विवेकानन्द और विजयकृष्ण गोस्वामी** का नाम न सुना हो, ऐसे लोग बंगाल में बहुत कम हैं, ऐसा कहना उचित होगा।

आध्यात्मिक जगत में इनके समान उन्नति प्राप्त करने वाले शायद केवल बांग्लादेश में ही नहीं, बल्कि पूरे संसार में भी बहुत कम हुए हैं।

ये सभी कहते थे कि आवश्यकता होने पर **परलोकगत आत्मा को हम सहज ही इस लोक में बुला सकते हैं...**

...बुला सकते हैं। गोस्वामीजी स्वयं अपने स्थूल शरीर से इच्छा के अनुसार बाहर निकलकर उसे इच्छित स्थान पर ले जा सकते थे। इस प्रकार की एक घटना मैंने अपनी आँखों से देखी थी। इसका विस्तृत विवरण मैंने **“मृत्यु के बाद”** नामक पुस्तक में दिया है।

ऊपर हमने संक्षेप में जो कुछ बताया, उससे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि **आत्मा अमर है**—इस बात को संसार के तीन प्रमुख धर्मों ने स्वीकार करने में तनिक भी संकोच नहीं किया है।

हम इस पुस्तक में यह दिखाएँगे कि आत्मा अमर है—इसे हम सभी **प्रत्यक्ष रूप से अपनी आँखों से देख सकते हैं।**

---

## प्रथम खण्ड

### प्रथम परिच्छेद

इस पुस्तक के आरम्भ में ही मैंने कहा है कि **प्रोफेसर विनिस साहब** की कृपा से प्रेततत्त्व की ओर मेरा ध्यान पहली बार गया। उनकी शिक्षा और उत्साह न मिला होता, तो प्रेततत्त्व के अनुसन्धान के लिए मैं कभी पश्चिमी देशों की यात्रा नहीं करता।

यूरोप जाने के समय प्रेततत्त्व में मेरा विश्वास अत्यन्त कमजोर था। मैं मन-ही-मन सोचता था कि जब विनिस जैसे विद्वान व्यक्ति इसका समर्थन करते हैं, तब शायद इसमें कुछ सच्चाई अवश्य है; लेकिन जब वे भी इस विषय में मेरे मन में पूर्ण

विश्वास उत्पन्न नहीं कर सके, तो यूरोप जाकर इससे अधिक और क्या हो सकेगा!

लेकिन यूरोप और अमेरिका में मैंने इस विषय में जो कुछ **प्रत्यक्ष रूप से अपनी आँखों से देखा**, उससे मुझे पूरी तरह विश्वास हो गया कि मनुष्य की मृत्यु के बाद उसका अस्तित्व बिल्कुल समाप्त नहीं होता।

जिस प्रकार वह इस लोक में था, उसी प्रकार उस लोक में भी रहता है। अन्तर केवल इतना है कि उसका शरीर अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थ से निर्मित होता है, इसलिए हम उसे अपनी स्थूल आँखों से देख नहीं सकते।

लेकिन ऐसे उपाय हैं, जिनके द्वारा हम उसे **देख सकते हैं, स्पर्श कर सकते हैं और उसके साथ बातचीत भी कर सकते हैं।**

## प्रथम परिच्छेद

भारतवर्ष लौटने के बाद मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि घोर जड़वादी यूरोप और अमेरिका के बहुत-से लोग आजकल प्रेततत्त्व पर विश्वास कर रहे हैं और इस विषय के वैज्ञानिक अनुसन्धान के लिए अनेक प्रकार के उपाय अपना रहे हैं। तो

फिर भारत के लोग इस विषय में इतने उदासीन क्यों हैं? क्या हमारे पूर्वज परलोक में विश्वास नहीं करते थे?

मेरा जन्म से ही विश्वास रहा है कि हमारे प्राचीन ऋषि सर्वज्ञ थे। पश्चिमी जगत् अब अनुसन्धान के द्वारा जिन बातों को जान सका है, क्या हमारे ऋषि उन्हें नहीं जानते थे? यह बात मैं अपने मन में स्वीकार नहीं कर सका।

मेरा विश्वास है कि **गीता के समान पुस्तक संसार में दूसरी नहीं है।** इसमें जिस प्रकार निष्पक्ष भाव से सभी धर्मों का समन्वय किया गया है, वैसा अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। जिस महामानव की लेखनी से यह ग्रन्थ निकला, वे भविष्यद्रष्टा थे— यह स्वीकार करना ही होगा।

इसके दूसरे अध्याय के बीसवें और बाईसवें श्लोक में आत्मा और स्थूल शरीर के सम्बन्ध में जो कुछ कहा गया है, वह अविस्मरणीय है। दोनों श्लोक इस प्रकार हैं—

**न जायते म्रियते वा कदाचिन्**
**नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।**
**अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो**
**न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥**

अर्थात् आत्मा का न तो जन्म होता है और न मृत्यु। जन्म ग्रहण किये बिना भी उसका अस्तित्व बना रहता है; वह सदा विद्यमान है। वह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है। शरीर नष्ट हो जाने पर भी उसका नाश नहीं होता।

दूसरा श्लोक—

**वासांसि जीर्णानि यथा विहाय**
**नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।**
**तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्**
**अन्यानि संयाति नवानि देही॥**

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर को छोड़कर दूसरा नया शरीर धारण करती है।

अनेक लोग इस दूसरे श्लोक को आत्मा के **पुनर्जन्म के सिद्धान्त** का प्रमाण मानते हैं। वे “नवानि देही” का अर्थ पुनर्जन्म का नया शरीर लेते हैं। लेकिन हम इस अर्थ को स्वीकार नहीं करते।

यदि यही अर्थ हो, तो यह कहना पड़ेगा कि जिसकी मृत्यु होगी, वह उसी क्षण नया जन्म लेकर इस संसार में फिर वापस आ

जाएगा। लेकिन हम शास्त्रों में देखते हैं कि अलग-अलग मनुष्यों को उनके कर्म के अनुसार अलग-अलग लोकों में जाना पड़ता है; मृत्यु के तुरन्त बाद सभी को इस संसार में वापस नहीं आना पड़ता।

हो सकता है कि कर्मफल के कारण कोई-कोई व्यक्ति मृत्यु के बाद शीघ्र ही वापस आ जाए, लेकिन ऐसा सभी के साथ नहीं होता।

एक और बात है—यदि मृत्यु के तुरन्त बाद मनुष्य इस संसार में वापस आ जाता, तो शास्त्रों में...

यदि ऐसा होता, तो **श्राद्ध आदि की व्यवस्था** ही नहीं होती। अतः यहाँ “नवानि देही” का अर्थ **नया सूक्ष्म शरीर** समझना चाहिए।

**आत्मा अमर है**

आत्मा अमर है। कर्मानुसार उसे बार-बार—विभिन्न योनियों और विभिन्न लोकों में—जन्म ग्रहण करना पड़ता है। इसका उल्लेख हम वेद, उपनिषद्, पुराण आदि में देखते हैं। मेरा विश्वास है कि प्रत्येक हिन्दू इस बात को जानता है। इसलिए इसका विस्तारपूर्वक उल्लेख करना मैंने आवश्यक नहीं समझा।

इस संसार के मनुष्य विभिन्न लोकों में जा सकते हैं अथवा दूसरे लोकों के प्राणी यहाँ आ सकते हैं—इसका उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रन्थों में बहुत अधिक नहीं मिलता। लेकिन संस्कृत **महाभारत** में इन दोनों विषयों का स्पष्ट वर्णन मिलता है।

**वनपर्व** में कहा गया है कि अर्जुन एक बार अस्त्र-शिक्षा प्राप्त करने के लिए **इन्द्रलोक** गये थे।

महाभारत का महायुद्ध समाप्त होने के बाद **धृतराष्ट्र** ने महामुनि **वेदव्यास** से अनुरोध किया कि वे युद्ध में मारे गये उनके सभी निकट सम्बन्धियों को फिर से इस संसार में ले आएँ। वेदव्यास ने अन्धे राजा के इस अनुरोध को स्वीकार किया।

यह घटना रात्रि के समय हुई थी और अगले दिन सूर्योदय से पहले ही वे सभी सम्बन्धी अपने-अपने स्थान पर लौट गये।

मृत आत्माओं को इस प्रकार वापस लाने की इतनी स्पष्ट कथा किसी अन्य प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ में मैंने पढ़ी है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं है।

लगभग **दो हजार वर्ष से भी अधिक समय पहले** व्यासदेव की इस कथा को जो लोग केवल कहानी मानते थे, उनमें से बहुत-से

लोग अब अपना मत बदल रहे हैं; क्योंकि पश्चिमी देशों के प्रेततत्त्व-अनुसन्धानी आजकल लगभग प्रतिदिन इसी प्रकार के कार्य कर रहे हैं।

अन्तर केवल इतना है कि **महाभारतकार ने बहुत-सी प्रेतात्माओं को एक साथ बुलाया था**, जबकि आजकल के प्रेततत्त्वज्ञ एक या दो आत्माओं को बुला रहे हैं।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि कुछ समय बाद ये लोग भी बहुत-सी आत्माओं को एक साथ बुलाने में समर्थ होंगे।

---

मैं भारत लौटने के बाद लगभग **छः वर्षों तक** प्रेततत्त्व के विषय में तरह-तरह की चर्चाएँ करता रहा और विभिन्न स्थानों पर विभिन्न लोगों से मिलता रहा।

इसके परिणामस्वरूप मुझे समझ में आया कि दक्षिण भारत के एक-दो स्थानों को छोड़कर भारत में इस विषय पर कहीं भी वास्तविक चर्चा नहीं होती।

यूरोप और अमेरिका में इस विषय को लेकर जो भारी आन्दोलन चल रहा है, उसकी कोई जानकारी इस देश के लोगों को नहीं है।

विभिन्न प्रकार की धन कमाने वाली विद्याएँ सीखने और साहबियत अपनाने के लिए हमारे देश के बहुत-से लोग पश्चिमी देशों की यात्रा करते हैं और वहाँ खूब घूमते-फिरते हैं; लेकिन **प्रेततत्त्व का अध्ययन करने के लिए वहाँ कोई गया हो**, ऐसा मैंने नहीं सुना।

मैं स्वयं पश्चिमी देशों में रह चुका हूँ और मुझे जीविका के लिए नौकरी करनी पड़ती है। इसी कारण मुझे कभी भी किसी एक स्थान पर स्थायी रूप से रहने का अवसर नहीं मिला। फिर भी जब मैं वहाँ रहता था, तब दो-चार मित्रों को साथ लेकर प्रेततत्त्व पर चर्चा करने का प्रयास करता था।

मैंने भी कई बार **प्रेतचक्र बैठाने** का प्रयास किया था, लेकिन विशेष सफलता प्राप्त नहीं कर सका। इसका कारण यह है कि इस कार्य में सफल होने के लिए आरम्भ में किसी अच्छे गुरु की विशेष आवश्यकता होती है। केवल पुस्तकीय ज्ञान से काम नहीं चलता।

इस स्थान पर एक बात विशेष रूप से कहना आवश्यक समझता हूँ। प्रेततत्त्व—विशेषतः **प्रेत-आह्वान**—के विषय में आजकल पुस्तकों की कोई कमी नहीं है। प्रेतचक्र बैठाने के सम्बन्ध में नित्य नयी-नयी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं।

लेकिन मेरा विशेष अनुरोध है कि कोई भी व्यक्ति इन पुस्तकों की सहायता से **प्रेतचक्र बैठाने का प्रयास न करे।** इसमें कदम-कदम पर खतरे की सम्भावना है। जब तक कोई अनुभवी गुरु न मिल जाए, तब तक प्रेतों को बुलाने का प्रयास न करें।

प्रेत वास्तव में होते हैं और उनमें से बहुत-से इस संसार में लौटकर आने का प्रयास करते रहते हैं। सम्भव है कि तुम्हारे थोड़े-से आह्वान पर ही कोई उपस्थित हो जाए। उसके बाद यदि उसे वश में करने का उपाय तुम्हें न मालूम हो, तो वह विभिन्न प्रकार से तुम्हारी हानि करने का प्रयास कर सकता है।

याद रखो—जो प्रेतात्माएँ इस संसार में वापस आने के लिए व्याकुल रहती हैं, उनमें से बहुत-सी दुष्ट स्वभाव की होती हैं। **सद्प्रकृति की आत्माएँ प्रायः यहाँ वापस आना नहीं चाहतीं।**

---

उस समय मैं **मुरादाबाद** में था। संयोग से इसी समय एक गुजराती साधु मुरादाबाद में आए और उनसे मेरी भेंट हुई। उन्होंने अपना परिचय **शिवानन्द** नाम से दिया। उनकी आयु लगभग 60–65 वर्ष की रही होगी।

वे साधु-सन्तों के समान गेरुए रंग के वस्त्र आदि धारण नहीं करते थे और उनमें बाहरी आडम्बर भी बिल्कुल नहीं था। फिर भी मैंने उन्हें “साधु” कहा, क्योंकि बचपन से ही वे संसार का त्याग कर चुके थे।

वे देश-देश में घूमते रहते थे और अपनी सामर्थ्य के अनुसार दूसरों की सहायता करना ही उनका मुख्य कार्य था। वे कभी किसी से धन आदि नहीं लेते थे।

जिस दिन मेरी उनसे भेंट हुई, उसी दिन मुझे समझ में आ गया कि परलोकगत आत्माओं के विषय में उनका ज्ञान असाधारण था।

**जिस बात की सच्चे मन से प्रार्थना की जाए, भगवान उसे प्रदान करते हैं।** इतने दिनों से मैं जिस चीज की खोज कर रहा था, ऐसा लगा मानो वह स्वयं मेरे पास आ गई हो।

इसके बाद मैंने अपने घर पर **प्रेतचक्र** की व्यवस्था की। मेरी इच्छा थी कि यह प्रतिदिन हो, लेकिन साधुजी की सलाह से यह निश्चित हुआ कि प्रत्येक सप्ताह दो दिन—**शनिवार और बुधवार**—प्रेतचक्र आयोजित किया जाएगा।

परलोकगत आत्माओं को बुलाने के विषय में साधुजी ने पहले दिन हमें जो सभी उपदेश दिये थे, उन्हें मैं नीचे अत्यन्त संक्षेप में लिख रहा हूँ—

**१.** आरम्भ के कुछ प्रेतचक्र **सूर्यास्त के बाद** ही होने चाहिए। आत्मा का सूक्ष्म शरीर ऐसे पदार्थ से बना होता है कि...

साधारणतः वह सूर्य के तेज को सहन नहीं कर सकता। लेकिन ऐसी आत्माएँ भी देखी गई हैं, जो **सूर्य के प्रकाश में भी सहज रूप से प्रकट हो सकती हैं।**

**२.** जो लोग प्रेततत्त्व में विश्वास नहीं करते, उन्हें चक्र में आमन्त्रित न करना ही उचित है।

**३.** जहाँ चक्र आयोजित किया जाएगा, वहाँ अचानक तेज प्रकाश नहीं करना चाहिए।

**४.** सभी परलोकगत आत्माओं में इस संसार में वापस आने, बात करने अथवा हमें दिखाई देने की क्षमता समान नहीं होती।

देखा गया है कि बहुत-सी आत्माएँ देहत्याग (मृत्यु) के बाद ही इस संसार में आकर बातचीत कर सकती हैं। कुछ को यह क्षमता बहुत समय बाद प्राप्त होती है। लेकिन शरीर धारण

करके दिखाई देने की क्षमता बहुत कम आत्माओं को प्राप्त होती है।

जो आत्माएँ बात कर सकती हैं, उनमें भी कई प्रकार के भेद होते हैं—

**(क)** कुछ केवल **ठक-ठक की आवाज** करके प्रश्नों आदि के उत्तर देती हैं।

**(ख)** कुछ **चौकी/मेज़ के माध्यम से** बात करती हैं। इसीलिए प्रत्येक चक्र में एक ऐसी मेज़ रखनी पड़ती है।

**(ग)** कुछ **मीडियम (medium) के मुँह** से बोलती हैं। इस स्थिति में गले की आवाज, बोलने का ढंग आदि सब कुछ उस आत्मा के सांसारिक जीवन के समान ही होता है।

**(घ)** कुछ आत्माएँ स्वयं ही बोलती हैं। उस समय ऐसा लगता है मानो शब्द **शून्य से निकलकर** आ रहे हों।

**५.** मृत्यु के बाद बहुत-सी आत्माएँ हमारे पास आकर हमसे बातचीत करना चाहती हैं। इनमें बहुत-सी दुष्ट आत्माएँ भी होती हैं।

**प्रेतचक्र बैठते ही** ये दुष्ट आत्माएँ अच्छी आत्माओं को दूर हटाकर स्वयं प्रकट होने का प्रयास करती हैं। यदि उस समय सिडीयम/मीडियम विशेष रूप से अनुभवी और शक्तिशाली न हो, तो दुष्ट आत्मा आकर उपस्थित हो जाती है। तब उसे दूर करना विशेष रूप से कठिन हो जाता है।

इस परिच्छेद को समाप्त करने से पहले एक बात कहना अच्छा होगा। पहले कुछ चक्रों में जो आत्माएँ आई थीं, उन्होंने सामान्य प्रकार की सूचनाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं बताया और न ही बता सकीं।

लेकिन इसके बाद ऐसी दो-एक आत्माएँ कई बार आईं, जिनसे हमें परलोक के सम्बन्ध में बहुत-सी नयी बातें जानने को मिलीं।

इस पुस्तक के इस खण्ड में हमने इन बातों का बिल्कुल उल्लेख नहीं किया है। इन सभी समाचारों को हमने अगले खण्ड में यथासम्भव विस्तारपूर्वक लिपिबद्ध किया है।

पाठक यह बात ध्यान में रखें कि ये सभी समाचार और मत **परलोकगत आत्माओं के ही हैं।** हमने उनमें अपनी ओर से तनिक भी परिवर्तन नहीं किया है।

## द्‌वितीय परिच्छेद

साधुजी के साथ हमने जो कुछ चक्र आयोजित किये थे, वे मेरे अपने घर में ही हुए थे।

इन चक्रों में जो लोग उपस्थित होते थे, वे सभी मेरे सम्बन्धी या अत्यन्त निकट मित्र थे। साधुजी का कोई परिचित व्यक्ति अथवा उनका कोई शिष्य (चेला) किसी भी चक्र में उपस्थित नहीं था।

इसका कारण यह था कि ऐसा कोई व्यक्ति मुरादाबाद में था ही नहीं। मुझसे परिचय होने के बाद जितने दिन वे मुरादाबाद में रहे, वे मेरे घर पर ही रहते थे।

ऊपर जो कुछ मैंने कहा, उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि चक्र के भीतर किसी भी प्रकार का छल या चालाकी करना साधुजी के लिए बिल्कुल असम्भव था।

फिर भी पहले चार चक्रों के बाद मैंने अपनी ओर से पूरी सावधानी बरतने का निश्चय किया।

जिस कमरे में चक्र आयोजित होता था, उसमें एक दरवाज़ा और एक खिड़की थी। चक्र आरम्भ होने से पहले दोनों को इस प्रकार बन्द कर दिया जाता था कि कमरे के भीतर से बाहर निकलना अथवा बाहर से भीतर आना बिल्कुल असम्भव था।

चक्र के लिए आवश्यक वस्तुओं के अतिरिक्त उस कमरे में और कुछ भी नहीं रहता था।

इन वस्तुओं की सूची इस प्रकार थी—

- एक मेज़;
- कुछ कुर्सियाँ—जितने लोग उपस्थित रहते, उतनी ही कुर्सियाँ;
- एक **घंटी**, एक फूलदान, एक बॉक्स हारमोनियम, कुछ सफेद कागज़, एक पेंसिल, एक टेबल-लैम्प और एक **गीता**। (साधुजी के विशेष अनुरोध पर गीता रखी जाती थी।)

पहले दिन जब चक्र बैठा, तब साधुजी सहित हम पाँच व्यक्ति उपस्थित थे। इनमें तीन व्यक्ति—मुझे मिलाकर—बंगाली थे और एक हिन्दुस्तानी वकील थे।

वकील महाशय को परलोक के विषय में विशेष विश्वास नहीं था। लेकिन वे कहते थे कि यदि उन्हें प्रत्यक्ष प्रमाण मिल जाए, तो वे अपना मत बदलने के लिए तैयार हैं।

चक्र बैठने से पहले उन्होंने कमरे की अच्छी तरह जाँच-पड़ताल कर ली थी और उनके अनुरोध पर उन्हें साधुजी के ठीक दक्षिण की ओर बैठाया गया था।

सबसे पहले एक हिन्दुस्तानी भजन गाया गया—बहुत धीमी आवाज़ में।

यहाँ यह बता देना अच्छा होगा कि कमरे की रोशनी को यथासम्भव मंद कर दिया गया था। मैंने इंग्लैण्ड और अमेरिका में देखा है कि सामान्यतः रोशनी बिल्कुल बुझा दी जाती है। लेकिन साधुजी ने किसी भी चक्र में ऐसा नहीं किया।

हमारे चक्र में रोशनी मंद रखी जाती थी, लेकिन हम एक-दूसरे को देख सकते थे। यदि कोई व्यक्ति अपनी जगह छोड़कर उठता, अथवा हाथ या पैर से किसी प्रकार की चालाकी करने का प्रयास करता, तो वह तुरन्त पकड़ में आ जाता।

मैं छोड़कर जो दो बंगाली उपस्थित थे, वे दोनों उच्चशिक्षित थे। प्रेततत्त्व के विषय में उनका कोई मत नहीं था।

हालाँकि उनमें से एक ने मुझसे स्पष्ट रूप से कहा था—

**“तुमने इतनी पढ़ाई-लिखाई करने के बाद अन्त में एक गुजराती ढोंगी के चक्कर में पड़ गए! मैं मानता हूँ कि इंग्लैण्ड और अमेरिका में इस विषय पर वैज्ञानिक ढंग से अनुसन्धान हो रहा है। लेकिन यह आदमी इसके बारे में क्या जानता है?”**

बड़े दुःख की बात है कि इस प्रकार के **तोते की तरह रटा हुआ ज्ञान रखने वाले शिक्षित बंगाली** मैंने बहुत देखे हैं।

इस श्रेणी के लोगों का मुख्य दोष यह है कि—

**(१)** वे हमेशा यह समझते हैं कि भारत में बंगालियों के अतिरिक्त और कोई कुछ नहीं जानता; अथवा दूसरे जो कुछ जानते हैं, वह न जानने के बराबर है।

**(२)** जो व्यक्ति उनके बताए हुए थोड़े-से बाहरी तौर-तरीकों के अनुसार नहीं चलता, उसे वे "मनुष्य" ही नहीं समझते—यह उनकी भूल है।

**(३)** कोई भी नयी बात जब तक पश्चिमी जगत् की स्वीकृति की मुहर लगाकर न आए, तब तक वे उसे विश्वास करने योग्य नहीं मानते।

यह कहते हुए मुझे बहुत दुःख होता है कि इस प्रकार की बंगाली मानसिकता के कारण आज बंगाली लोग भारत के अनेक स्थानों पर अप्रिय होते जा रहे हैं।

चक्र आरम्भ होने के समय मैंने देखा कि वे दोनों विशेष तिरस्कारपूर्ण भाव से धीरे-धीरे मुस्करा रहे थे। उनके मन का भाव मानो यह था—

**"तुम चाहे जो कुछ कर लो, हमें धोखा नहीं दे सकते।"**

ऊपर...

जैसा कि मैंने ऊपर कहा है, एक भजन गाकर चक्र आरम्भ किया गया था। लगभग चार मिनट तक भजन गाने के बाद

मुझे बहुत स्पष्ट रूप से अनुभव हुआ कि इस कमरे में जैसे कोई नया व्यक्ति आ गया है।

ऐसा लग रहा था मानो वह शून्य के ऊपर से बहुत तेजी से इधर-उधर आ-जा रहा हो।

इसके लगभग एक मिनट बाद ठीक मेरे सिर के ऊपर एक युवती का स्वर सुनाई दिया—

**स्वर:** "क्या रे, पहचानते हो?"

उसकी आवाज़ अत्यन्त परिचित थी। लेकिन इस प्रकार अचानक उसके प्रकट होने और इस प्रश्न से मैं इतना आश्चर्यचकित हो गया कि उस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका।

तब फिर वही प्रश्न किया गया।

अब तक मैं कुछ सँभल चुका था।

**मैं:** "तुम कौन हो?"

**स्वर:** "मैं रमा हूँ। पहचानते हुए भी ऐसी बात क्यों पूछी?"

**मैं:** "मैं तुम्हारी आवाज़ पहचान गया था। लेकिन इस प्रकार उस पार के किसी व्यक्ति से इस संसार में मेरी कभी भेंट नहीं हुई थी। इसलिए मैं ठीक से विश्वास नहीं कर सका। लेकिन तुम तो लगभग पन्द्रह वर्ष पहले देह त्याग चुकी थीं। इतने दिनों तक कहाँ थीं?"

**स्वर:** "जहाँ अभी हूँ, इतने दिनों से वहीं थी।"

**मैं:** "धरणी कहाँ हैं?"
*(धरणी उनके पति का नाम था। पत्नी की मृत्यु के लगभग आठ वर्ष बाद उनके पति की मृत्यु हुई थी।)*

**स्वर:** "यहाँ आने के बाद लगभग दो वर्ष तक वे मेरे बहुत निकट थे। उसके बाद चले गये। अब वे कहाँ हैं, यह मैं ठीक से नहीं बता सकती।"

**मैं:** "मैं आपकी बात ठीक से समझ नहीं पाया। क्या वे फिर हमारे लोक में लौट आए हैं?"

रमा ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। बाद में मुझे पता चला कि उसके बोलने की शक्ति समाप्त हो जाने के कारण वह आगे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकी।

बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि यह क्षमता सभी आत्माओं में समान नहीं होती।

---

पाठकों को यह भी बता देना उचित होगा कि **रमा नाम की मेरी कोई सम्बन्धिनी है**, यह बात गुजराती साधु को बिल्कुल मालूम नहीं थी।

चक्र बैठने के समय या उससे ठीक पहले रमा का विचार भी मेरे मन में बिल्कुल नहीं आया था। उसकी मृत्यु को लगभग **ग्यारह वर्ष** हो चुके थे, इसलिए मैं उसके विषय में लगभग भूल ही गया था। यहाँ तक कि मेरे घर में भी उसके विषय में चर्चा लगभग समाप्त हो चुकी थी।

अब उसकी आवाज़ के सम्बन्ध में एक बात। उसकी आवाज़ में मुझे तनिक भी अन्तर नहीं लगा। जीवित अवस्था में रमा जिस स्वर में और जिस ढंग से बात करती थी, उसकी प्रेतात्मा ने भी ठीक उसी स्वर और उसी ढंग से बात की।

एक और बात का उल्लेख करके मैं इस प्रसंग को समाप्त करूँगा।

हमारे साधुजी को **बंगाली भाषा बिल्कुल नहीं आती थी।** फिर भी रमा की आत्मा ने स्पष्ट बंगाली भाषा में बात की।

---

जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, इस चक्र में एक हिन्दुस्तानी वकील भी उपस्थित थे।

रमा की आत्मा के मौन हो जाने के बाद एक **हिन्दुस्तानी आत्मा** उपस्थित हुई। उसकी आवाज़ एक **हॉर्न के भीतर से** आती थी।

इस आत्मा ने उस वकील के साथ लगभग **अठारह मिनट** तक बातचीत की।

बाद में वकील महाशय ने मुझे बताया कि वह उनके **बड़े भाई की आवाज़** थी। उनके भाई की मृत्यु को तीन वर्ष हो चुके थे।

उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि उसकी भाषा, बोलने का ढंग और आवाज़—सब कुछ उनके बड़े भाई के बिल्कुल समान था।

विशेष बात यह थी कि उस आत्मा ने ऐसी-ऐसी बातें कहीं, जिन्हें उसके अत्यन्त निकट सम्बन्धियों के अतिरिक्त और कोई जान ही नहीं सकता था।

इसके बाद मैंने उनसे **प्रेतात्मा के पुनः लौटकर आने के विषय में उनका मत** पूछा...

जब मैंने उनसे प्रेतात्मा के पुनः लौटकर आने के विषय में उनका मत पूछा, तो वकील महाशय ने कहा—

**वकील:** "देखिए, अब तक इस विषय में मैंने जो कुछ सुना या पढ़ा था, उसे मैं केवल कहानी समझता था। हालाँकि मैंने इस विषय पर कभी अच्छी तरह विचार या अनुसन्धान नहीं किया था। लेकिन आज आपके इस चक्र में अपनी आँखों से जो कुछ देखा और अपने कानों से जो कुछ सुना, उससे मुझे अच्छी तरह समझ में आ गया है कि **प्रेततत्त्व एक बिल्कुल नया विषय है।** इसमें जानने और सीखने के लिए बहुत कुछ है।"

यह चक्र लगभग **तीस मिनट** तक चला।

---

## तृतीय परिच्छेद

दूसरे चक्र में हम कुल **सात व्यक्ति** उपस्थित थे। पहले चक्र में उपस्थित सभी लोग थे और दो अन्य व्यक्ति मुस्लिम सज्जन थे—वे स्थानीय सरकारी कॉलेज के शिक्षक थे।

चक्र के पहले जब साधुजी को पता चला कि दो भिन्न धर्म के व्यक्ति उपस्थित हैं, तो उन्होंने मुझसे कहा—

**साधुजी:** "मुसलमानों के उपस्थित होने पर मुझे तनिक भी आपत्ति नहीं है। लेकिन इस प्रकार के लोगों को लेकर मैंने अब तक कोई चक्र नहीं किया है। प्रेतात्माओं को इससे आपत्ति होगी या नहीं, यह मैं ठीक से नहीं जानता। इसलिए इस चक्र के परिणाम के विषय में मैं कुछ भी नहीं कह सकता।"

ये दोनों मेरे विशेष मित्र थे। हमारे चक्र के विषय में सुनकर वे दोनों स्वयं ही यहाँ आए थे। दोनों ही उच्चशिक्षित थे। इसलिए साधुजी की इस प्रकार की आपत्ति सुनने के बाद भी मैंने उन्हें चक्र में सम्मिलित किया।

मेरे अनुरोध पर इन दोनों में से एक—जिनका नाम **सुल्तान मोहम्मद** था—ने एक **उर्दू भजन** गाया।

*(इस उर्दू भजन के विषय में साधुजी ने स्पष्ट रूप से आपत्ति की थी, लेकिन मैंने उनकी बात नहीं मानी।)*

भजन की दो पंक्तियाँ समाप्त होते ही मेज़ पर रखा हुआ **हॉर्न** अचानक मेज़ से उठकर शून्य में घूमने लगा।

हम इस अद्भुत...

इस अद्भुत घटना को देखकर हम स्तब्ध रह गए। कमरे में जो थोड़ी-सी रोशनी थी, उसमें हमने देखा कि **मीडियम और अन्य पाँच व्यक्ति अपने-अपने स्थान पर बिल्कुल स्थिर बैठे हुए थे।**

इस घटना में उनमें से किसी का भी किसी प्रकार का हाथ नहीं था, यह हम सभी समझ सकते थे। विशेष बात यह थी कि यदि हम स्वयं प्रयास भी करते, तब भी उस हॉर्न को इस प्रकार घुमा पाना हमारे लिए सम्भव नहीं था।

क्योंकि कभी-कभी वह लगभग हमारे सिरों के ऊपर आ जाता था और फिर एकदम बहुत दूर तक चला जाता था। कभी-कभी वह अत्यन्त तीव्र गति से कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चला जाता था।

उसकी इस प्रकार की विचित्र गति हमारे द्वारा कर पाना असम्भव था। केवल मैंने ही नहीं, बल्कि वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने स्पष्ट रूप से यह बात स्वीकार की।

अन्त में उसकी गति इतनी बढ़ गई कि हम उसे साफ़-साफ़ देख भी नहीं पा रहे थे। इसके बाद वह **मीडियम के सिर से लगभग तीन फुट ऊपर** आकर अपनी गति रोककर शून्य में स्थिर हो गया।

पहले उसके भीतर से अत्यन्त अस्पष्ट प्रकार की आवाज़ निकलने लगी। वह किस चीज़ की आवाज़ थी, हममें से कोई भी समझ नहीं सका।

लेकिन लगभग आधे मिनट बाद आवाज़ कुछ स्पष्ट हुई। तब हमें समझ में आया कि कोई व्यक्ति **शुद्ध उर्दू भाषा में** बोल रहा है। आवाज़ से ऐसा प्रतीत होता था कि बोलने वाला अत्यन्त वृद्ध व्यक्ति है।

जब आवाज़ अच्छी तरह स्पष्ट हुई, तब हमने सुना कि वह कह रहा था—

**आवाज़:** “सुल्तान! क्या तुम मुझे पहचान नहीं पाए?”

ऐसा प्रतीत हुआ कि सुल्तान इस घटना के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। वह उस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दे सका। सम्भवतः उसके मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकला।

जब अदृश्य वक्ता ने फिर वही प्रश्न किया, तब सुल्तान ने कहा—

**सुल्तान:** “आप... आप कौन हैं? क्या आप अब्बाजान (पिताजी) हैं?”

इसके बाद पिता और पुत्र के बीच लगभग **अठारह मिनट** तक बातचीत चलती रही। पूरी बातचीत उर्दू भाषा में हुई।

बाद में मैंने सुल्तान से सुना कि घटना की अच्छी तरह जाँच करने के लिए उसने प्रेतात्मा से ऐसे कई प्रश्न पूछे, जिनके उत्तर किसी बाहरी व्यक्ति के लिए जानना असम्भव था। जैसे—

**(१)** उसके पिता की मृत्यु की तारीख, दिन और समय क्या था?

**(२)** मृत्यु से पहले उसके पिता ने सुल्तान से क्या कहा था और पुत्र ने उसके उत्तर में क्या कहा था?

**(३)** सुल्तान की माता इस समय कहाँ हैं और जिस समय चक्र आयोजित किया जा रहा था, उस समय वे क्या कर रही थीं?

**(४)** सुल्तान के कितने पुत्र और कितनी पुत्रियाँ हैं?

पाठकों को यह बात भी बता देना अच्छा होगा कि उस समय तक सुल्तान का विवाह नहीं हुआ था।

सुल्तान ने स्वीकार किया कि **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर बिल्कुल सही था।**

सुल्तान की माता की मृत्यु उसके पिता से पहले ही हो चुकी थी और उसके बाद उसके पिता ने दूसरा विवाह किया था। इसलिए तीसरे प्रश्न के उत्तर में आत्मा ने पूछा—

**आत्मा:** "तुम अपनी जन्म देने वाली माता के विषय में पूछ रहे हो या मेरी दूसरी पत्नी के विषय में?"

सुल्तान ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया और चौथा प्रश्न कर दिया।

इस बार आत्मा हँस पड़ी और बोली—

**आत्मा:** "देखो, तुम मेरी परीक्षा ले रहे हो। तुम्हें अभी तक विश्वास नहीं हुआ कि मैं सचमुच तुम्हारे पिता की प्रेतात्मा हूँ। देखो, मृत्यु के बाद हमारा स्थूल शरीर नष्ट हो जाता है, और कोई परिवर्तन नहीं होता। यहाँ तक कि हमारा मन भी पहले जैसा ही रहता है।

मेरे पास बात करने का समय समाप्त होने वाला है, नहीं तो मैं तुम्हें यहाँ की बहुत-सी बातें बताता।"

इसके बाद वह **हॉर्न** धीरे-धीरे मेज़ पर अपने नियत स्थान पर रख दिया गया।

पाठक ध्यान रखें कि साधुजी को **उर्दू भाषा बिल्कुल नहीं आती थी।**

इसके बाद शून्य के ऊपर से एक वृद्ध व्यक्ति का स्वर सुनाई दिया।

पहले चक्र में मैंने दो बंगाली दर्शकों का उल्लेख किया है। ये दोनों प्रेत-आह्वान को **ढोंग** समझते थे। अब जो आत्मा उपस्थित हुई, वह उनमें से एक व्यक्ति के **नाना** थे।

पहले चक्र के बाद मैंने उन दोनों से उनका मत पूछा था। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया था, बल्कि कहा था—

**"और देखूँ, फिर बताऊँगा।"**

इस नयी प्रेतात्मा के नाती का नाम **सुधांशु** था।

आत्मा ने स्पष्ट स्वर में कहा—

**आत्मा:** "क्या रे सुधा! मुझे पहचान नहीं पा रहा?"

सुधांशु सम्भवतः इस प्रकार की घटना के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। अचानक यह प्रश्न सुनकर वह बिल्कुल स्तब्ध-सा होकर देखने लगा और कोई उत्तर नहीं दिया।

तब स्वर ने कहा—

**आत्मा:** "क्या हुआ? क्या इतने में ही बूढ़े को भूल गया? अभी तो मुझे तुम लोगों को छोड़े हुए केवल तीन वर्ष हुए हैं!"

अब सुधांशु ने कहा—

**सुधांशु:** "दादाजी, क्या सचमुच आप ही बोल रहे हैं?"

स्वर हँसकर बोला—

**आत्मा:** "अरे बाबा! अब क्या मैं तुम्हारा वही दादाजी हूँ? मैं तो उसका प्रेत हो गया हूँ! तू तो शायद हमारी बात मानना ही नहीं चाहता। तू कहता है न कि मरने के बाद कुछ नहीं रहता?"

सुधांशु ने कहा—

**सुधांशु:** "मैं तो यही मानता था। अच्छा, क्या आप ऐसा कुछ करके दिखा सकते हैं जिससे मुझे पूरा विश्वास हो जाए कि मृत्यु के बाद सचमुच मनुष्य का अस्तित्व रहता है और वह फिर लौटकर हमारे साथ बातचीत कर सकता है?"

हम सभी ने प्रेतात्मा की हँसी स्पष्ट रूप से सुनी।

इसके बाद हमने सुना—

**आत्मा:** "हाँ रे सुधा! क्या तेरा दादामशाय कोई जादूगर है कि तुझे तरह-तरह की अद्‌भुत-अद्‌भुत चीजें दिखाए, तभी तू कृपा करके विश्वास करेगा कि मैं तेरा वही पुराना दादा हूँ?

मैं तो भाई, हार मान गया। तू चाहे तो यही समझ कि मैं तुम्हारे घर का वही **हँसने-खेलने वाला बूढ़ा** हूँ।"

प्रेत के इस कथन से सुधांशु लज्जित हुआ या नहीं, यह ठीक से समझ में नहीं आया। लेकिन उसने कहा—

**सुधांशु:** “आपकी आवाज़ लगभग मेरे दादाजी जैसी है, यह मैं स्वीकार करता हूँ। लेकिन आज तक मैंने मरे हुए मनुष्य के वापस आने की बात पर बिल्कुल विश्वास नहीं किया था।

इस घटना को और अच्छी तरह समझने के लिए...”

**सुधांशु:** “मैं आपसे कुछ बातें पूछूँगा। यदि उनके उत्तर मुझे बिल्कुल ठीक-ठीक मिल गए, तो मैं समझूँगा कि आप सचमुच मेरे दादाजी हैं। क्या आप तैयार हैं?”

आत्मा फिर हँसकर बोली—

**आत्मा:** “तेरे जैसे नास्तिकों की संख्या तुम्हारी दुनिया में बहुत अधिक है। हम हमेशा यही प्रयास करते रहते हैं कि तुम्हारी इस गलत धारणा को दूर करें। तू जो चाहे पूछ। लेकिन ऐसी बात पूछना, जिसे मैं जानता हूँ। तुम लोग शायद यह सोचते हो कि यहाँ आने के बाद हम सर्वज्ञ हो जाते हैं। यह बिल्कुल गलत है।”

तब सुधांशु ने ये कुछ प्रश्न किए—

**(१)** "मैं किस तारीख, किस महीने, किस दिन और किस समय पैदा हुआ था?"

**(२)** "मेरे पिता का विवाह किस वर्ष और किस स्थान पर हुआ था और उस विवाह में पिताजी के साथ क्या अनिष्ट हुआ था? *(तुम्हें उस अनिष्ट की बात बताई गई थी।)*'

**(३)** "ठीक इस समय तुम्हारी नातिन-वधू *(मेरी पत्नी)* कहाँ है और क्या कर रही है?"

जब सुधांशु को प्रत्येक प्रश्न का बिल्कुल सही उत्तर मिल गया, तब वह दो-तीन मिनट तक चुपचाप बैठा रहा। इसके बाद वह उस कमरे से बाहर चला गया।

अन्ततः उस दिन के लिए हमारा चक्र भी समाप्त कर दिया गया।

---

## १०२ — इहलोक और परलोक

सुधांशु मेरा एक मित्र है। अगले दिन जब मैंने उससे पिछली रात के उसके व्यवहार का कारण पूछा, तो उसने कहा—

**सुधांशु:** “कल की घटना से मुझे पूरी तरह समझ में आ गया है कि मृत्यु के बाद मनुष्य का अस्तित्व रहता है और बुलाने पर वह वापस आ सकता है। लेकिन यह घटना इतनी असाधारण है कि मैं इसे सबके सामने स्वीकार नहीं कर सका।”

## चतुर्थ परिच्छेद

हमारे तीसरे चक्र में कुल पाँच व्यक्ति उपस्थित थे— मीडियम, मैं, पहले उल्लेख किए गए हिन्दुस्तानी वकील, सुल्तान अहमद और उसके मित्र अल्ताफ़।

चक्र आरम्भ होते ही मुझे अपनी पूर्व परिचिता **रमा** का स्वर सुनाई दिया।

मैंने उससे पूछा कि उस दिन मेरे प्रश्न का उत्तर दिए बिना वह क्यों चली गई थी।

उसने उत्तर दिया—

**रमा:** “तुम लोग नहीं जानते कि हम यहाँ अपनी इच्छा से सब कुछ नहीं कर सकते। तुम्हारे साथ बात करने के समय

हमें किसी जीवित मनुष्य से शक्ति प्राप्त करनी पड़ती है। जब तक यह शक्ति रहती है, हम बात करते हैं।

उस दिन मेरे पास बात करने की शक्ति और नहीं थी, इसलिए मैं तुम्हें उत्तर नहीं दे सकी।

मेरे उस पार के पति अब कहाँ हैं, यह मैं नहीं जानती। ऐसा होता है। किसी व्यक्ति को शायद मैं रोज़ देख रही हूँ और एक दिन अचानक वह दिखाई देना बन्द हो गया। वह क्यों जाता है, कहाँ जाता है—मैं नहीं जानती।

सुना है, कुछ लोग तुम्हारे संसार में वापस चले जाते हैं और कुछ लोग शायद किसी दूसरे लोक में भी चले जाते हैं। लेकिन किसके आदेश से वे जाते हैं, यह मैं नहीं बता सकती।

मुझे लगता है कि यहाँ बहुत कम लोग ही इसके बारे में ठीक-ठीक जानते हैं...”

“...बता सकते हैं, लेकिन शायद जो लोग जानते हैं, वे बताते नहीं हैं।”

इसके बाद रमा का स्वर उस दिन की तरह फिर मौन हो गया।

इसके बाद एक बिल्कुल नयी घटना आरम्भ हुई—**एक ही समय में हमें दो अलग-अलग आत्माओं के स्वर सुनाई देने लगे।** एक सुल्तान के पिता की आत्मा का और दूसरा एक बालिका का।

बाद में मुझे पता चला कि यह बालिका अल्ताफ़ के बड़े भाई की पुत्री थी। लगभग तीन वर्ष पहले, दस वर्ष की आयु में उसने इस संसार को छोड़ दिया था।

इन दोनों आत्माओं ने **उर्दू भाषा** में बातचीत की।

इन दोनों आत्माओं ने जो बातें कहीं, वे सामान्य घरेलू विषयों से सम्बन्धित थीं। इसलिए उनका विस्तार से वर्णन करके मैं पाठकों के धैर्य की परीक्षा नहीं लेना चाहता। लेकिन इनके सम्बन्ध में दो-एक आवश्यक बातों का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूँ।

पहली बात यह कि सुल्तान के पिता की आवाज़ और बोलने के ढंग को मैं पहले ही ध्यान से देख-सुन चुका था। आज भी वही व्यक्ति बोल रहा था, इसमें मुझे तनिक भी संदेह नहीं था।

अल्ताफ़ के अनुसार उस बालिका की आयु लगभग **तेरह वर्ष** थी। उसकी बात करने के स्वर से भी स्पष्ट रूप से समझ में आता था कि उसकी आयु इससे अधिक नहीं रही होगी। उसकी बातों में छोटी लड़की का पूरा स्वभाव और बोलने का ढंग मौजूद था।

मुझे बहुत-से हिन्दुस्तानी बच्चों के साथ बातचीत करने का अवसर मिला है। इसलिए मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि बोलने वाली **हिन्दुस्तानी मुस्लिम परिवार की एक छोटी लड़की** थी।

---

छोटी लड़की लगभग **पैंतालीस मिनट** बाद और सुल्तान के पिता लगभग **उनतालीस मिनट** बाद मौन हो गए।

इसके ठीक बाद मेज़ पर रखे हुए **हॉर्न** के भीतर से बोलने की आवाज़ आने लगी।

आवाज़ से समझ में आया कि बोलने वाला अत्यन्त वृद्ध व्यक्ति है। बाद में मुझे पता चला कि उनकी आयु लगभग **अस्सी वर्ष** थी और उन्होंने केवल **आठ महीने पहले** इस संसार को छोड़ा था।

वे हमारे मीडियम के परम मित्र थे और दोनों ने एक ही गुरु से दीक्षा ली थी।

वे संयुक्त प्रान्त के रहने वाले थे, इसलिए आरम्भ से अन्त तक उन्होंने बिल्कुल स्पष्ट **हिन्दी भाषा** में बात की।

उन्होंने मुझसे और हिन्दुस्तानी वकील—दोनों से बातचीत की।

वकील ने पूछा—

**वकील:** “आप कौन हैं? हम आपको पहचान नहीं पा रहे हैं।”

**आत्मा:** “तुम्हारे **सहायक**—अर्थात् मीडियम—स्थान पर वे हमेशा ‘सहायक’ शब्द का प्रयोग करते थे—शिवानन्दजी मेरे मित्र और गुरु-भाई हैं।

आज का चक्र समाप्त होने के बाद शिवानन्दजी से कहना कि **रामानन्दजी आए थे।**

उन्हें यह भी कहना कि यदि सम्भव हो तो किसी दिन किसी दूसरे व्यक्ति को सहायक बनाकर चक्र करें। ऐसा होने पर मैं उनसे बातचीत कर सकूँगा।

*(पाठक ध्यान रखें कि जब तक चक्र चलता रहता था, हमारे सहायक तन्द्रावस्था में बिल्कुल मौन और निश्चल बैठे रहते थे। उन्हें देखकर ऐसा नहीं लगता था कि उन्हें बाहरी जगत का कोई ज्ञान है।)*"

**वकील:** "आपको उस पार गए हुए कितना समय हुआ है?"

**रामानन्द:** "तुम्हारी गणना के अनुसार अभी एक वर्ष भी पूरा नहीं हुआ है।"

**वकील:** "आपने किस स्थान पर देह त्याग की थी?"

**रामानन्द:** "नर्मदा के किनारे, दण्डा गाँव में।"

**मैं:** "हमारे चक्र बैठने से ठीक पहले आप कहाँ थे?"

**रामानन्द:** *(हँसकर)* "क्या तुम समझते हो कि हम तुम्हारे इस संसार के चारों ओर हमेशा घूमते रहते हैं?

निश्चय ही हमारे लोक में ऐसे लोग हैं, जो तुम्हारे संसार के मोह को किसी भी प्रकार छोड़ नहीं पाए हैं और इसलिए जब तक सम्भव होता है, वहीं अटके रहते हैं।

लेकिन उनकी संख्या अधिक नहीं है; क्योंकि जो लोग किसी भी प्रकार अपने पिछले जीवन के बन्धन और इच्छाओं को छोड़ नहीं पाते, उन्हें भी हमारा लोक छोड़कर आगे जाना पड़ता है।"

**वकील:** "वे कहाँ जाते हैं?"

**रामानन्द:** "यह मैं शायद ठीक-ठीक नहीं जानता। मेरा विश्वास है और हमारे बीच के ज्ञानी लोग कहते हैं कि वे या तो तुम्हारे संसार में वापस चले जाते हैं, अथवा किसी और निम्न और निकृष्ट स्थान पर जाकर जन्म लेते हैं।

हाँ, तुम्हारा पहला प्रश्न बिल्कुल असंगत नहीं था। जिस समय तुम्हारा चक्र बैठा था, उस समय मैं **बद्रीनारायण** में था।"

---

**वकील:** "यह स्थान तो यहाँ से बहुत दूर है। मैंने सुना है कि वहाँ का रास्ता अत्यन्त दुर्गम है। आप इतनी दूर से इतनी जल्दी कैसे आ गए?"

**रामानन्द:** "तुम लोग कितने ही शिक्षित क्यों न हो, तुम्हारा ज्ञान अपनी सीमा से आगे नहीं जा सकता।

तुम्हारी बिजली की गति की शक्ति की बात तो छोड़ ही देता हूँ। लेकिन तुम्हारे वायुयान आजकल लगभग **तीन सौ चालीस मील प्रति घंटे** की गति से जा रहे हैं।

यदि यह स्थूल वस्तु इतनी गति से जा सकती है, तो क्या हम सूक्ष्म शरीर से एक मिनट में तीन-चार सौ मील नहीं जा सकते?"

वकील हँसकर बोले—

**वकील:** "आपने कह दिया, मैंने सुन लिया, लेकिन कुछ भी समझ नहीं पाया। सूक्ष्म शरीर नाम की चीज़ क्या होती है, यह मेरी बुद्धि से परे है।"

**आत्मा:** "यह बात मैं शायद किसी और दिन तुम्हें समझाने का प्रयास करूँगा।"

इस समय मैंने पूछा—

**मैं:** "अच्छा, क्या आप कोई मूर्त रूप धारण करके हमें दिखाई दे सकते हैं?"

आत्मा लगभग **तेईस क्षण** तक मौन रही। फिर बोली—

**आत्मा:** “शायद कर सकता हूँ, लेकिन आज यह असम्भव है। मेरी स्थूल शक्ति—जो मैंने तुम्हारे सहायक से प्राप्त की है—लगभग समाप्त हो चुकी है।

जिस दिन यहाँ कोई दूसरा सहायक होगा, और उस दिन यदि शिवानन्द उपस्थित रहे, तो मैं स्थूल शरीर धारण...”

“...करने का प्रयास करूँगा।

शिवानन्द से कहना कि **हमारे गुरुमहाराज शीघ्र ही हरिद्वार आएँगे।** अगली शुक्ल एकादशी के दिन उन्होंने शिवानन्द को हरिद्वार में मिलने के लिए बुलाया है। यदि शिवानन्द उस दिन उनसे भेंट कर सके, तो उसकी बहुत दिनों की इच्छा पूरी हो जाएगी। उसे यह बात अवश्य बताना।”

चक्र समाप्त होने के बाद मैंने साधुजी को आत्मा की कही हुई सारी बातें बताईं।

उन्होंने कहा—

**साधुजी:** “हम दोनों एक ही गुरु के शिष्य हैं। हमारे गुरु ने अभी तक देह त्याग नहीं किया है। सम्भवतः गुरुजी की

आयु सौ वर्ष से भी अधिक हो चुकी है—शायद उससे भी आठ-दस वर्ष अधिक।

उन्होंने लगभग पचपन वर्ष पहले गुरुजी से मंत्र ग्रहण किया था। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि दीक्षा के समय उन्होंने अपने गुरु का जैसा चेहरा देखा था, आज भी वे ठीक वैसे ही दिखाई देते हैं।"

शिवानन्द के अनुसार उनके गुरु **सिद्धपुरुष** हैं।

मैंने पूछा—

**मैं:** "रामानन्दजी ने कहा कि गुरुजी से भेंट होने पर आपकी बहुत दिनों की इच्छा पूरी हो जाएगी। यदि आपको आपत्ति न हो तो क्या हम जान सकते हैं कि वह इच्छा क्या है?"

साधुजी हँसकर बोले—

**साधुजी:** "हमने संसार का त्याग किया है। हमारे लिए ऐसी कोई बात नहीं हो सकती जिसे हम छिपाकर रखें। आप लोग शायद यह सुनकर आश्चर्य करेंगे कि..."

"हमारे गुरुदेव के गुरु भी जीवित हैं। गुरुदेव के मुख से मैंने सुना है कि वे गुरुदेव से पच्चीस-छब्बीस वर्ष बड़े हैं। तुम

लोग विश्वास करोगे या नहीं, मैं नहीं जानता, लेकिन यह सत्य है।

वे हिमालय के एक एकान्त स्थान में रहते हैं। गुरुदेव के मुख से मैंने सुना है कि उनके गुरु से भी अधिक आयु वाले बहुत-से साधु-संन्यासी हिमालय में रहते हैं। वे कभी लोक-वस्तियों में नहीं आते।

गुरुदेव के इस गुरु के दर्शन करने की प्रार्थना मैं बहुत बार कर चुका हूँ। इस बार सम्भवतः मेरी यह इच्छा पूरी हो जाएगी।"

**पंचम परिच्छेद**

उस समय मुरादाबाद में **डॉक्टर राय** *(विशेष कारण से नाम बदल दिया गया है)* मेरे विशेष परिचित और मित्र थे। चिकित्सा के काम से वे शहर से बाहर भी जाते रहते थे। उनके अपने पुत्र-पुत्री न होने के कारण उनके एक निकट सम्बन्धी अपने परिवार सहित उनके यहाँ रहते थे।

एक दिन मैंने सुना कि इस सम्बन्धी की एक युवती अचानक पागल हो गई है।

मैं इस घटना को शुरू से बताता हूँ।

पागल होने से लगभग एक महीने पहले इस युवती का एकमात्र बच्चा—छह वर्ष का एक पुत्र—पैंतालीस दिन की बीमारी के बाद उसकी गोद सूनी करके इस संसार से चला गया था।

डॉक्टर राय कुछ हद तक नास्तिक विचारों वाले थे। मेरी समझ से वे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि किसी प्रचलित धर्म अथवा किसी निश्चित सामाजिक नियम-कानून को नहीं मानते थे। स्वयं जिसे अच्छा समझते, हजारों लोगों के मना करने पर भी वही करते थे।

इस बच्चे की मृत्यु के बाद डॉक्टर के एक मुस्लिम नौकर ने शव को मुरादाबाद की नदी **रामगंगा** के किनारे ले जाकर एक स्थान पर दफना दिया। इसके बाद हिन्दू धर्म के अनुसार किसी प्रकार का संस्कार नहीं किया गया।

बच्चे की माता तथा अन्य सम्बन्धी और मित्रों ने इस विषय में अनेक प्रकार की आपत्तियाँ कीं, लेकिन डॉक्टर ने किसी की बात सुनना आवश्यक नहीं समझा।

बच्चे की मृत्यु के बाद उसकी माँ चुपचाप और उदास होकर एक स्थान पर बैठी रहती थी तथा किसी से अधिक बातचीत नहीं करती थी।

सभी ने सोचा कि शोक बहुत गहरा है; कुछ दिनों बाद सब ठीक हो जाएगा।

इस प्रकार लगभग एक महीना बीत गया। उसके बाद मैंने सुना कि वह **पागल हो गई है।**

घटना इस प्रकार आरम्भ हुई।

एक दिन शाम के बाद वह युवती, उसकी माँ और दो अन्य व्यक्ति एक कमरे में बैठे हुए थे। उसी समय युवती अचानक चीखकर उठी—

**युवती:** "माँ, टेनू को *(मृत बच्चे का घर का नाम)* कमरे में आने दो न! देखती नहीं हो, वह कमरे में आने के लिए सिर पटक रहा है!"

इसके बाद वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

होश आने पर भी वह यही एक बात कहती—

**“माँ, टेनू को कमरे में आने दो न!”**

इसी प्रकार दिन में लगभग **15–20 मिनट के अन्तर पर** वह बेहोश होने लगी और होश में आते ही यही वाक्य दोहराती।

सभी ने कहा—

**“आह! पुत्र-शोक के कारण लड़की पागल हो गई है।”**

निस्सन्देह, काफी जोर-शोर से एलोपैथिक चिकित्सा शुरू कर दी गई। यहाँ तक कि लखनऊ और काशी से भी कई डॉक्टर बुलाए गए।

लेकिन दस-बारह दिन बीत जाने पर भी उसकी बीमारी में तनिक भी सुधार दिखाई नहीं दिया।

वे कहते हैं कि मेरे गुरुदेव के गुरुदेव भी जीवित हैं। गुरुदेव के मुख से मैंने सुना है कि वे गुरुदेव से पच्चीस-छब्बीस वर्ष बड़े हैं। आप लोग विश्वास करें या न करें, लेकिन यह सत्य है। वे हिमालय के एक निर्जन स्थान में रहते हैं। गुरुदेव के मुख से यह भी सुना है कि उनके गुरु से भी अधिक आयु के अनेक साधु-संन्यासी हिमालय में रहते हैं। वे कभी लोक-समाज में नहीं आते। गुरुदेव के इस गुरु के दर्शन करने की

मैंने अनेक बार प्रार्थना की है। इस बार संभवतः मेरी यह इच्छा पूर्ण होगी।

**पाँचवाँ परिच्छेद**

इस समय मुरादाबाद में डॉक्टर राय (विशेष कारण से यह नाम बदल दिया गया है) मेरे विशेष परिचित और मित्र थे। चिकित्सा के सिलसिले में वे शहर से बाहर भी जाते रहते थे। उनके अपने पुत्र-पुत्री नहीं थे, इसलिए उनके एक निकट संबंधी का परिवार उनके यहाँ रहता था।

एक दिन मैंने सुना कि इस संबंधी की एक युवती अचानक पागल हो गई है। बात को आरम्भ से बताता हूँ।

पागल होने के लगभग एक महीने पहले इस युवती का एकमात्र संतान, छह वर्ष का एक पुत्र, पैंतालीस दिनों की बीमारी के बाद उसकी गोद सूनी करके संसार से चला गया। डॉक्टर राय कुछ नास्तिक विचारों के व्यक्ति थे। मेरी समझ से वे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि किसी प्रचलित धर्म अथवा किसी निश्चित सामाजिक नियम-कानून को नहीं मानते थे। स्वयं जिसे अच्छा समझते, सैकड़ों लोगों के निषेध करने पर भी वही करते थे।

इस बच्चे की मृत्यु के बाद डॉक्टर के एक मुसलमान नौकर ने उसके शव को रामगंगा के किनारे (मुरादाबाद की नदी) ले जाकर एक स्थान पर दफना दिया और इसके बाद हिन्दू धर्म के अनुसार किसी प्रकार का कोई संस्कार नहीं किया गया। बच्चे की माता तथा अन्य संबंधियों और मित्रों ने इस विषय में अनेक प्रकार की आपत्तियाँ कीं, लेकिन डॉक्टर ने किसी की बात सुनना आवश्यक नहीं समझा।

बच्चे की मृत्यु के बाद उसकी माता चुपचाप एक स्थान पर बैठी रहती थी और किसी से अधिक बातचीत नहीं करती थी। सभी ने समझा कि शोक बहुत गहरा है; कुछ दिनों में सब ठीक हो जाएगा। इसी प्रकार लगभग एक महीना बीत गया। उसके बाद मैंने सुना कि वह पागल हो गई है।

घटना इस प्रकार आरम्भ हुई।

एक दिन संध्या के बाद वह युवती, उसकी माता और दो अन्य व्यक्ति एक कमरे में बैठे हुए थे। उसी समय युवती अचानक चिल्लाकर बोली—

"माँ, टेनू को कमरे में आने दो न। देखती नहीं हो, वह कमरे में आने के लिए सिर पटक रहा है।"

इसके बाद वह बेहोश होकर गिर पड़ी। होश आने पर भी वह केवल यही कहती—

“माँ, टेनू को कमरे में आने दो न।”

इस प्रकार दिन में लगभग हर पंद्रह-बीस मिनट के अंतर पर वह बेहोश हो जाती और होश में आते ही यही बात कहती। सभी ने कहा—“अहा! पुत्र-शोक में लड़की पागल हो गई है।”

स्वाभाविक रूप से काफी धूमधाम के साथ एलोपैथिक चिकित्सा चलने लगी। यहाँ तक कि लखनऊ और काशी से भी कई चिकित्सक आए। लेकिन दस-बारह दिन बाद भी रोग में तनिक भी सुधार दिखाई नहीं दिया।

वे बार-बार बेहोश होतीं और वही एक वाक्य कहतीं—किसी भी प्रकार यह सिलसिला बंद नहीं हुआ। आश्चर्य की बात यह थी कि इस एक वाक्य के अतिरिक्त रोगिणी और कोई बात नहीं करती थी।

लगभग पंद्रह-सोलह दिन बाद लखनऊ से तीन हिन्दुस्तानी वैद्य आए। उन्होंने चार दिन मुरादाबाद में रहकर आपस में विचार करके जो चिकित्सा-व्यवस्था की, वह लगभग चौदह-

पंद्रह दिन चली; लेकिन रोग में तनिक भी परिवर्तन नहीं हुआ। तब डॉक्टर राय ने आशा छोड़ दी।

उस समय डॉक्टर की वृद्‌ध माता जीवित थीं। उन्होंने आग्रह करना शुरू किया कि लड़की को किसी ओझा को दिखाया जाए। उनका विश्वास था कि लड़की पर किसी अपदेवता का आश्रय हो गया है।

राय ने इस बात पर बिल्कुल विश्वास नहीं किया, लेकिन माता को संतुष्ट करने के लिए उन्होंने आपत्ति भी नहीं की। बहुत खोजबीन के बाद एक गाँव में रहने वाले एक वृद्‌ध मुसलमान ओझा का पता मिला।

जो लोग उसे लेकर आए थे, उन्होंने ओझे को रोगिणी के विषय में क्या-क्या बताया था, यह मुझे मालूम नहीं और मैंने उसके बारे में कोई पूछताछ भी नहीं की। लेकिन जब ओझे को रोगिणी के पास लाया गया, तब मैं वहाँ उपस्थित था।

ओझा कन्या से लगभग दो हाथ की दूरी पर एक आसन पर बैठ गया और लगभग दस-बारह मिनट तक रोगिणी की ओर एकटक देखता रहा। इसके बाद उसने आँखें बंद करके बैठना

जारी रखा। (यह ध्यान करने का अभिनय था या कुछ और, मैं ठीक समझ नहीं सका।)

फिर उसने कहा—

“कन्या के किसी निकट संबंधी की हाल ही में मृत्यु हुई है और किसी कारण से मृतक की आत्मा को शांति नहीं मिली है। वह आत्मा दिन-रात इसके सामने रहती है और कन्या को कष्ट दे रही है।”

एक व्यक्ति ने पूछा—“इसकी शांति कैसे होगी? क्या आप कोई उपाय कर सकते हैं?”

वृद्ध ने गंभीर स्वर में कहा—

“मैं शांति का उपाय बता सकता हूँ, लेकिन वह मुसलमानों के अनुसार होगा। मेरी धारणा है कि उससे अच्छा परिणाम नहीं होगा।”

मैंने कहा—“मौलाना साहब, मृत्यु के बाद भी क्या हिन्दू-मुसलमान का भेद रहता है?”

ओझे ने हँसकर कहा—

"रहता है। जो व्यक्ति इस संसार में हिन्दू था, उसकी आत्मा की तृप्ति के लिए हिन्दू रीति से ही कार्य करना पड़ता है।"

मैंने पूछा—"आप किसकी आत्मा की शांति की बात कर रहे हैं—इस कन्या की या उसके मृत संबंधी की?"

ओझा ने कहा—"मृत संबंधी की।"

मैंने कहा—"लेकिन उसकी आयु तो बहुत कम थी। उसकी मृत्यु के बाद निश्चय ही कुछ अहिन्दू रीति से व्यवहार किया गया था। लेकिन उसे तो अच्छे-बुरे का ज्ञान भी नहीं हुआ था। फिर उसकी आत्मा अशांत क्यों है?"

ओझा बोला—

"बाबू, मैं मूर्ख आदमी हूँ। इन सब बातों का उत्तर मैं नहीं दे सकता। लेकिन इतना मैं जानता हूँ..."

मैंने स्वयं देखा है कि इस प्रकार की कम आयु में ऐसी अशांति नहीं होती। यदि एक वर्ष का कोई मुसलमान बच्चा मर जाए और उसकी मृत्यु के बाद इस्लाम धर्म के विरुद्ध कोई कार्य किया जाए, तो उसकी आत्मा को परलोक में अशांति भोगनी पड़ती है।

डॉक्टर राय अब तक चुपचाप बैठे थे। इस बार उन्होंने कहा—

“मैं ऐसे एक मुसलमान को जानता हूँ, जिसकी मृत देह का दाह-संस्कार किया गया था। लेकिन उसकी आत्मा की शांति के लिए कोई प्रायश्चित्त किया गया हो, ऐसा मैंने नहीं सुना। मेरा विश्वास है कि वह बिल्कुल नहीं किया गया।”

ओझा बोला—

“वह नहीं किया गया, यह मैं भी कह सकता हूँ। और उसकी कोई आवश्यकता भी नहीं थी। जिस मुसलमान की मृत देह का दाह किया जाता है, वह इस विश्वास के साथ मरा था कि मृत देह का दाह ही किया जाना चाहिए। बच्चे में ऐसा विश्वास करने की बुद्धि नहीं होती, इसलिए उसकी मृत्यु के बाद उसके पैतृक संस्कारों का पालन करना पड़ता है। खैर, इस कन्या के विषय में मेरी जो धारणा है, वह मैंने आपको बता दी। इस विषय में मैं और कुछ नहीं कर सकता।”

ओझा चला गया।

इसके बाद तीन दिनों तक शांति-स्वस्त्ययन, चंडीपाठ आदि अनेक प्रकार के अनुष्ठान बड़े धूमधाम से किए गए। लेकिन

देखा गया कि कन्या की बीमारी में तनिक भी परिवर्तन नहीं हुआ।

तब मैंने अपने गुजराती साधु को सारी घटना सुनाकर इस विषय में उनकी राय पूछी। उन्होंने कहा—

“तुम लोग एक दिन चक्र का आयोजन करो और एकाग्र मन से प्रार्थना करो कि रामानंदजी की आत्मा उपस्थित हों। शायद वे कोई उपाय बता सकें।”

इसके अगले ही दिन हमने चक्र बैठाया। इसमें माध्यम सहित चार व्यक्ति उपस्थित थे—हिन्दुस्तानी वकील, मैं और रोगग्रस्त कन्या के पिता।

चक्र के आरम्भ में हमने लगभग पाँच-छः मिनट तक मन ही मन रामानंदजी का स्मरण किया और उसके बाद एक हिन्दुस्तानी भजन गाया गया। उसकी दो पंक्तियाँ समाप्त होते ही हमने शून्य से रामानंदजी की गंभीर आवाज सुनी। (पाठक ध्यान रखें कि इससे पहले हम उनकी आवाज हॉर्न के भीतर से सुन चुके थे।)

स्वर ने कहा—

“तुम लोगों ने आज मुझे किसलिए बुलाया है, यह मैं जानता हूँ। उस दिन मुसलमान ओझे ने जो कहा था, वह सत्य है। इस कन्या के बालक-पुत्र की गति नहीं हुई है, इसी कारण वह बड़े कष्ट में है। उसकी आत्मा दिन-रात उसकी माँ के आसपास घूमती रहती है, लेकिन माँ की गोद में आ नहीं सकती।

तुम्हारी इन आँखों से तुम केवल जड़ वस्तुओं को देख सकते हो; लेकिन साधना करने पर उनके अतिरिक्त सूक्ष्म वस्तुएँ भी दिखाई दे सकती हैं। बच्चे की माँ की किसी कारण से सूक्ष्म-दृष्टि खुल गई है। इसीलिए वह सदा पुत्र को...

वह उसे देख रही है। लेकिन बच्चे को जड़ शरीर के रूप में न पा सकने के कारण उसे अपनी गोद में नहीं ले पा रही है। इस बच्चे की सद्गति जिस प्रकार हो सकती है, उसका उपाय मैं करूँगा। इसका परिणाम तुम लोग शीघ्र ही जान जाओगे। आज चक्र यहीं समाप्त कर दो।”

ऐसा ही हुआ। इसके तीन दिन बाद कन्या की बीमारी तो ठीक हो गई, लेकिन दो महीने के भीतर ही वह इस मृत्युलोक को छोड़कर अपने खोए हुए पुत्र के पास चली गई।

## छठा परिच्छेद

उपर्युक्त चक्र के बाद बातचीत के प्रसंग में मैंने शिवानंदजी से पूछा—

"देखिए, हम प्रायः देखते हैं कि प्रेतात्माओं को रात के समय अंधकार में बुलाया जाता है। इसका कारण क्या है?"

साधुजी ने इसका उत्तर न देकर मुझसे पूछा—

"तुमने तो उस देश (यूरोप और अमेरिका) में बहुत-से चक्रों के अधिवेशन देखे हैं। उनमें से क्या कोई चक्र दिन के समय नहीं हुआ था?"

मैंने कहा—

"सिर्फ एक बार दिन के समय देखा था।"

मैंने संक्षेप में अमेरिका के अपने अनुभव का वर्णन किया।

साधुजी बोले—

"तुम्हारी बात से ही प्रमाणित हो रहा है कि दिन में चक्र नहीं हो सकता, ऐसा नहीं है। फिर भी मैं यह स्वीकार करता हूँ कि अधिकांश चक्र रात में ही बैठते हैं। इसका कारण, जहाँ तक मैं जानता हूँ, यह है कि आत्मा ऐसे पदार्थ से बनी होती है कि

सामान्यतः वह सूर्य की प्रखर किरणों को सहन नहीं कर सकती।

लेकिन ऐसी बहुत-सी आत्माएँ भी हैं जो हर समय प्रकट हो सकती हैं।

यहाँ प्रश्न हो सकता है कि क्या प्रेतलोक में सूर्य का प्रकाश नहीं होता?

नहीं, नहीं होता। लेकिन इस विषय में हमें ठीक-ठीक जानकारी नहीं है।

एक काम किया जाए...।

आज हमारा चक्र बुधवार के दिन था। मेरी इच्छा थी कि आज दोपहर तीन बजे चक्र बैठाया जाए।"

ऐसा ही हुआ। दोपहर तीन बजे चक्र बैठा। इसमें हम कुल पाँच व्यक्ति उपस्थित थे—साधुजी, मैं, सुधांशु, सुलतान और वकील महाशय।

कमरे का दरवाजा और खिड़कियाँ बंद कर दी गईं और दो-एक छिद्रों से जो प्रकाश भीतर आ रहा था, उसे भी पूरी तरह रोक दिया गया। पहले लगभग 45 मिनट तक कमरा लगभग पूर्ण

अंधकार में रहा, लेकिन उसके बाद कमरा इस प्रकार प्रकाशमय हो गया कि हम कमरे की सभी वस्तुओं और एक-दूसरे को स्पष्ट रूप से देख सकते थे।

आज सबसे पहले एक बंगला ईश्वर-स्तुति गाई गई। वह केवल चार पंक्तियों की थी। उसके समाप्त होते ही हमें सुधांशु की माँ की कंठ-स्वर जैसी आवाज शून्य से सुनाई दी।

आज किसी आत्मा के आने की हमने आशा भी नहीं की थी। यह स्वर सुनकर हम सभी बहुत प्रसन्न हुए।

स्वर ने कहा—

"आज तुम लोगों ने इस असमय चक्र बैठाया, इसके लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ। अभी भी बहुत-से लोग—कि हम अस्तित्व में हैं—यह मानना नहीं चाहते। जो लोग मानते भी हैं, वे भी समझते हैं कि हम निशाचर हैं। यह सत्य नहीं है, यह तुम लोगों ने आज दिखा दिया।

मैं सच कहती हूँ, जब तुम लोग चक्र बैठाते हो, तो हम विशेष रूप से प्रसन्न होते हैं। ऐसा मत समझना कि हम तुम्हें देखने के लिए व्याकुल रहते हैं।"

इस समय मैंने पूछा—

“हमारी आँखें जड़ होने के कारण उस पार के सूक्ष्म-देहधारियों को देख नहीं पातीं। अच्छा, क्या आप लोग हमारे इस जड़ शरीर और संसार की अन्य जड़ वस्तुओं को देख पाते हैं?”

आत्मा ने कहा—

“नहीं, हम तुम्हारे जड़ शरीर को देख नहीं पाते। इसी कारण हम सहायक (मीडियम) से शक्ति प्राप्त करते हैं। लेकिन तुममें से प्रत्येक के भीतर एक सूक्ष्म शरीर है। उसे हम स्पष्ट देख सकते हैं।

अब मैं जो कह रही थी, उसे फिर से आरम्भ करती हूँ। तुम्हें देखकर हमें आनंद मिलता है, ऐसा नहीं है। (हालाँकि ऐसी बहुत-सी आत्माएँ हैं जो अपने संबंधियों को देखने के लिए व्याकुल रहती हैं।)

फिर हम आते क्यों हैं?

इसका मुख्य कारण यह है कि हम तुम्हारी आत्मा की उन्नति के लिए प्रयत्न और प्रार्थना करते हैं। तुम्हारी आत्मा की उन्नति के लिए तुम्हारे संसार में भी हम अनेक उपाय करते हैं।

लेकिन तुम्हारी आत्मा जड़ शरीर से ढकी हुई है, इसलिए तुम इन सभी उपायों को आसानी से देख या समझ नहीं सकते।

विशेष रूप से, तुम जड़ होने के कारण जड़ वस्तुओं पर तुम्हारा अधिक आकर्षण है। हमारे संसार का निरंतर प्रयास रहता है कि किस प्रकार तुम्हारे और हमारे बीच दर्शन-साक्षात्कार तथा भावों का आदान-प्रदान हो सके।”

**मैंने पूछा**—“क्या ऐसा कभी हो सकता है?”

**आत्मा ने कहा**—“आजकल तुम्हारे संसार की गति जिस प्रकार जड़ वस्तुओं की ओर दिन-प्रतिदिन अधिक आकर्षित होती जा रही है, उससे तो लगता है कि निकट भविष्य में यह संभव नहीं होगा। फिर भी तुम्हारे लिए एक अच्छी बात यह है कि तुम्हारे आजकल के गुरु, अर्थात् साधु-संत, दिन-प्रतिदिन हमारे संसार की ओर पर्याप्त ध्यान दे रहे हैं। ऐसा दिन अवश्य आएगा, जब तुम्हारे और हमारे बीच निरंतर भावों का आदान-प्रदान होगा।”

**मैंने पूछा**—“क्या आप इसे सचमुच संभव मानते हैं?”

**आत्मा ने कहा**—“निश्चय ही ऐसा होगा। यदि तुम अपने देश के इतिहास (सात्त्विक धारा) का अच्छी तरह अध्ययन करो, तो देखोगे कि यह चक्र के समान चलता आया है।

हमारे मत में सबसे पहले सतयुग था, अर्थात् जब जड़ता का अस्तित्व बिल्कुल नहीं था। उस समय हम देखते हैं कि देवता जब-तब मृत्युलोक में आते थे और मृत्युलोक के योग्य व्यक्ति परलोक (अर्थात् स्वर्ग) में जाते थे।

उस समय स्वर्ग के निवासी केवल बुलाने मात्र से तुम्हारे लोक में चले आते थे। इससे समझना चाहिए कि उस समय जड़ संसार में पाप का विशेष अस्तित्व नहीं था।

आज के लिए इतना ही। मेरा समय समाप्त हो गया।"

इसके बाद मातामह की आत्मा मौन हो गई, लेकिन चक्र समाप्त नहीं हुआ। मातामह के मौन होते ही हमें एक नया स्वर सुनाई दिया।

केवल स्वर ही नया नहीं था, बल्कि इस आत्मा ने जिस भाषा में बात की, वह भी मुझे पूरी तरह नई लगी। बाद में मैंने सुना कि वह फ़ारसी—आधुनिक ईरान (फारस) की भाषा—थी।

मुझे यह मालूम नहीं था कि मेरे मित्र सुलतान को आधुनिक ईरान की भाषा आती थी। इस आत्मा ने सुलतान के साथ इसी भाषा में बातचीत आरम्भ की। बाद में पता चला कि जब वह

इस संसार में था, तब उसका सुलतान के साथ विशेष परिचय था।

आज सुलतान के साथ उसकी जो बातचीत हुई, उसका सार बहुत संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है।

आत्मा ने सबसे पहले पूछा कि क्या सुलतान उसे पहचान पाया है। सुलतान ने उसका नाम बताया और पूछा कि आत्मा कहाँ और किस बीमारी से मरी थी, क्या उसे वह बात याद है?

आत्मा ने उसका ठीक उत्तर दिया।

इसके बाद सुलतान ने पूछा कि सुलतान के पिता अब कहाँ हैं और किस अवस्था में हैं।

आत्मा हँसकर बोली—

"तुम्हारे पिता मेरे ठीक पास खड़े हैं। यदि उन्होंने मुझे समाचार न दिया होता, तो शायद आज मैं यहाँ उपस्थित ही न होता।"

परीक्षा के लिए सुलतान ने उससे और भी कई प्रश्न किए। सुलतान को उन सभी के ठीक-ठीक उत्तर मिले।

## सातवाँ परिच्छेद

इस पुस्तक के चौथे परिच्छेद में हमने उल्लेख किया है कि रामानंद की आत्मा ने मुझसे कहा था कि शिवानंदजी के गुरु अगले शुक्ल एकादशी के दिन उन्हें हरिद्वार में गुरु से मिलने के लिए बुलाएँगे। ठीक किस समय उनसे भेंट होगी, यह न जानने के कारण शिवानंदजी इस प्रकार मुरादाबाद से रवाना हुए कि वे एकादशी की प्रातःकाल हरिद्वार पहुँच सकें।

इस प्रकार मुरादाबाद छोड़ने के लगभग 17-18 दिन बाद शिवानंदजी फिर हमारे पास लौट आए। उनसे गुरु के साथ भेंट की घटना पूछने पर उन्होंने पहले यह कहकर आपत्ति की—

"तुम लोग पाश्चात्य ढंग से शिक्षित हो। मेरे इस गुरु-दर्शन के समय ऐसी कई घटनाएँ घटी थीं, जिन्हें तुम लोग काल्पनिक समझ सकते हो। इसलिए मैं यह बात कहना नहीं चाहता। याद रखो, वे मेरे दीक्षागुरु हैं। मैं उनकी साक्षात् ईश्वर के समान भक्ति और श्रद्धा करता हूँ। तुम लोग यह कहानी सुनकर यदि किसी प्रकार की अश्रद्धा की बात कहोगे, तो मेरे मन की क्या दशा होगी, इसका अनुमान शायद तुम कर सकते हो। इसलिए मैं इसे बताना नहीं चाहता।"

मैंने कहा, "इतने दिनों तक मेरे साथ रहने के बाद भी यदि आपके मन में मेरे विषय में ऐसी धारणा है, तो इसे मेरा दुर्भाग्य

ही कहना होगा। मैंने अंग्रेजी पढ़ी है, इसे मैं अस्वीकार नहीं कर सकता; लेकिन मैं जोर देकर कह सकता हूँ कि मैं साहब नहीं बन गया हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि आप कभी काल्पनिक बात नहीं कहेंगे। और मैं यह भी जानता हूँ कि संसार में ऐसी बहुत-सी घटनाएँ घटती हैं, जो मेरी विद्या, बुद्धि और ज्ञान की सीमा से बाहर हैं; लेकिन केवल इस कारण उन्हें असंभव मान लेना बहुत बड़ी भूल है।"

तब साधुजी ने कहना आरंभ किया—

"देवता"—वे अपने गुरु को इसी नाम से संबोधित करते थे—"हरिद्वार में जिस स्थान पर रहते हैं, वह स्थान मैं जानता था। जब मैं उनसे मिला, तब प्रातःकाल लगभग सात बजे थे। स्नान, पूजा और थोड़ा-सा जलपान करने के बाद उन्होंने कहा, 'मेरा आश्रम यहाँ से कुछ दूर है। लेकिन मेरी इच्छा है कि वहीं जाकर भोजन आदि करूँ। क्या कहते हो?'

उनकी बात के विरुद्ध कुछ कहना असंभव था। हम लगभग साढ़े आठ बजे वहाँ से चल पड़े। बाद में मुझे मालूम हुआ कि हरिद्वार से देवता का आश्रम नौ मील दूर है।

याद रखो, वह प्रदेश पर्वत और पहाड़ियों से भरा हुआ है। वहाँ कोई सड़क आदि नहीं है; सब जगह केवल पगडंडियाँ हैं। तुम

लोग 'पगडंडी' शायद नहीं जानते। पहाड़ की ढलानों पर लोगों के आते-जाते रहने से जो रास्ता बन जाता है, वही पगडंडी है..."

जो थोड़ी-सी राह लोगों के आने-जाने से अपने-आप बन जाती है, वही पगडंडी है। अधिकांश स्थानों पर रास्ता सीधे पहाड़ की ढलान के साथ नीचे उतरता या ऊपर चढ़ता गया है। यह प्रायः इतना दुर्गम है कि कई बार लोगों को हाथ-पैरों के बल चढ़ना पड़ता है। इस प्रकार नौ मील का रास्ता पार करना क्या कठिन काम है, तुम लोग शायद ठीक-ठीक समझ नहीं सकते।

खैर, लगभग बारह बजे हम आश्रम पहुँच गए। देवता ने बताया कि आसपास पाँच-छह मील के भीतर कोई बस्ती नहीं है। उनके सबसे निकट रहने वाले पड़ोसी एक संसार-त्यागी संन्यासी थे, जो लगभग तीन मील दूर रहते थे। इतनी दूर निर्जन स्थान में रहकर देवता अपने भोजन आदि की व्यवस्था किस प्रकार करते हैं, यह मैं ठीक समझ नहीं पाया। मैंने उनसे पूछा भी, लेकिन उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल हल्का-सा मुस्करा दिए।

देवता का आश्रम एक छोटी-सी गुफा थी। उसकी लंबाई आठ हाथ और चौड़ाई चार हाथ से अधिक नहीं होगी। गुफा के ठीक सामने थोड़ी-सी समतल भूमि थी, जिसकी लंबाई और चौड़ाई लगभग पंद्रह-सोलह हाथ होगी। कुछ बड़े-बड़े देवदार और चीड़

के वृक्ष उस स्थान को बहुत छायादार बनाए हुए थे। गुफा से लगभग पचास-साठ हाथ दूर एक छोटा-सा झरना था। मैंने सुना कि उसमें बारहों महीने पानी रहता है।

गुफा के भीतर सामान बहुत ही कम था—दो कम्बल, तीन-चार मृगचर्म और दो चादरों के अतिरिक्त और विशेष कुछ दिखाई नहीं दिया। एक कोने में एक झोला रखा हुआ था। उसमें क्या था, यह उस समय मैं समझ नहीं पाया; बाद में मुझे मालूम हुआ।

कहने की आवश्यकता नहीं कि रास्ता इतना दुर्गम होने के कारण मैं अत्यन्त थक गया था। किसी तरह हाथ-मुँह धोकर मैं एक मृगचर्म पर लेट गया। गुफा में और किसी को नहीं देखा; क्योंकि देवता शिष्य या चेले रखना बिल्कुल पसंद नहीं करते थे।

मुझे थका हुआ देखकर देवता ने मुझसे भोजन आदि के विषय में पूछा। वहाँ किसी प्रकार की तैयारी दिखाई न देने पर मैंने कहा, “इस दुर्गम स्थान पर जो कुछ मिल जाए, उसे ही भगवान का आशीर्वाद समझकर स्वीकार करूँगा। आज यदि भोजन की व्यवस्था न भी हो, तो कोई विशेष हानि नहीं होगी।”

देवता हँसकर बोले, "मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ—तुम केवल बहुत थके हुए ही नहीं हो, तुम्हें अभी कुछ खाद्य पदार्थों की भी विशेष आवश्यकता है। तुम शायद सोच रहे हो कि ऐसी जगह और इस समय भोजन आदि जुटाना मेरे लिए कठिन होगा; इसलिए इसकी कोई चिंता मत करो। भगवान की कृपा से मुझे किसी चीज की कमी नहीं है।"

इसके बाद वे वही पहले बताया हुआ झोला उठा लाए। उसमें देखा गया कि शाल के पत्तों में लिपटी हुई चार रोटियाँ थीं और शाल के पत्ते की एक छोटी-सी पोटली में गाढ़ी अरहर की दाल तथा आम का अचार था।

थैली के भीतर ये सारी चीजें देखकर मुझे कोई विशेष आश्चर्य नहीं हुआ। मैंने सोचा, देवता के किसी भक्त ने ये सभी खाद्य पदार्थ बनाकर यहाँ रख दिए होंगे। लेकिन जब मैंने देखा कि रोटियाँ और दाल दोनों ही अच्छी तरह गरम थीं, तब मैं अत्यन्त विस्मित होकर गुरुजी की ओर देखने लगा।

उन्होंने कहा, "यह सब तुम्हारे लिए है। मैं इन चीजों को नहीं खाता, यह तो तुम जानते ही हो।"

(यहाँ यह बता देना उचित होगा कि लगभग पच्चीस-छब्बीस वर्षों से देवता थोड़े-से फल और मूल के अतिरिक्त और कोई खाद्य पदार्थ ग्रहण नहीं करते।)

मैंने कहा, "यह मैं जानता हूँ; लेकिन मेरी बात वह नहीं है। ये खाद्य पदार्थ इतने गरम हैं कि ऐसा लगता है जैसे अभी-अभी बनाए गए हों। इस निर्जन स्थान में यह कैसे संभव हुआ, मैं यही सोच रहा हूँ।"

देवता बोले, "देखो, मैं इस निर्जन स्थान में अकेला रहता हूँ। इसलिए भगवान की कृपा से मेरे लिए इस प्रकार भोजन उपस्थित हो जाता है। यदि यह कृपा न होती, तो मेरे लिए इस स्थान पर रहना असंभव होता।"

मैंने पूछा, "ये खाद्य पदार्थ कौन दे जाता है? क्या आपका कोई शिष्य या कोई पड़ोसी?"

देवता बोले, "अभी तो कहा—यह भगवान की कृपा है। इसके बारे में और कुछ मत पूछो।"

अतः मुझे इस विषय में और कुछ पूछने का साहस नहीं हुआ।

इसके बाद देवता ने मुझसे कहा, “तुमने कई बार इच्छा प्रकट की है कि मेरे गुरुजी के दर्शन करोगे। तुम्हें साथ ले जाने की अनुमति मुझे मिल गई है। लेकिन एक बात पहले ही बता दूँ। वह स्थान यहाँ से लगभग 76-77 मील दूर है। अंतिम छह मील गहरे बर्फ से ढके हुए पर्वत पर चढ़ना होगा। साहस है?”

मैंने कहा, “जब आप स्वयं साथ रहेंगे, तब मुझे डर किस बात का?”

देवता केवल मुस्कराए, लेकिन कुछ नहीं बोले।

अगले दिन बहुत प्रातः ही हमने यात्रा आरंभ कर दी। लगभग दो बजे हम एक छोटे-से पहाड़ी गाँव में पहुँचे। ग्यारह मील की यात्रा करके हम गाँव तक आए थे। वहाँ भोजन आदि करके तीन बजे फिर चल पड़े। ठीक संध्या के समय इसी प्रकार एक दूसरे गाँव में रात बिताई और प्रातःकाल फिर चल पड़े। लगभग बारह बजे हम स्वतंत्र गढ़वाल की राजधानी श्रीनगर पहुँचे। मुझे विश्राम देने के उद्देश्य से देवता उस दिन आगे नहीं चले।

अब हम उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर बढ़ने लगे। यहाँ तक हम पगडंडी के रास्ते से ही आ रहे थे। यह रास्ता कितना दुर्गम था, इसका संक्षेप में पहले ही वर्णन कर चुका हूँ। लेकिन श्रीनगर

छोड़ने के पाँच-छह मील बाद जो रास्ता मिला, उसके सामने पगडंडी भी पक्की सड़क जैसी लगती थी। देवता...

उन्होंने पास के एक पर्वत की ओर संकेत करके कहा कि हमें उसी पर चढ़ना होगा। उसकी ऊँचाई लगभग तीन मील होगी। नीचे का लगभग एक मील रास्ता पार करना संभव जान पड़ा, क्योंकि बीच-बीच में पेड़-पौधे दिखाई दे रहे थे। उनके सहारे किसी तरह चढ़ना संभव था। लेकिन उसके ऊपर का पर्वत बर्फ से ढका हुआ था। हमारे पास पहाड़ पर चलने वाली लाठियाँ भी थीं। लेकिन इस प्रकार के खड़े पर्वत पर उनसे विशेष सहायता मिल सकेगी, ऐसा मुझे नहीं लगा।

मैं चलते-चलते कब रुक गया, यह मैं स्वयं नहीं बता सकता। जब देवता ने कहा, “शिवानंद, बात क्या है? रुक क्यों गए?” तब जैसे मुझे होश आया।

मैंने कहा, “इस पर्वत का ऊपरी भाग तो बर्फ से ढका हुआ और लगभग सीधा खड़ा दिखाई दे रहा है। इस पर चढ़ूँगा कैसे? क्या इस रास्ते के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है?”

देवता हँसकर बोले, “दूसरा कोई उपाय नहीं है। लेकिन जब मैं स्वयं तुम्हें साथ लेकर जा रहा हूँ, तब तुम्हें चिंता किस बात

की? क्या तुम्हें मुझ पर इतना भी विश्वास नहीं है? यदि मैं इस रास्ते को पार कर सकता हूँ, तो तुम भी कर सकते हो।”

गुरुदेव की यह बात सुनकर मुझे जैसे चेतना प्राप्त हुई। मैंने तत्काल उनके दोनों चरणों की वंदना करके क्षमा माँगी।

इसके बाद हम चढ़ाई करने लगे। वह एक अद्‌भुत अनुभव था! उसका ठीक-ठीक वर्णन करने के लिए मेरे पास भाषा ही नहीं है। जहाँ तक बर्फ नहीं थी, वहाँ किसी तरह हाथ और पैर दोनों की सहायता से ऊपर चढ़ता गया। लेकिन बर्फ शुरू होने के बाद कुछ ही कदम चलकर मुझे रुकना पड़ा।

पर्वत लगभग सीधा ऊपर की ओर उठता चला गया था। उसका पूरा शरीर बर्फ से ढका हुआ था—पैर रखते ही मैं पीछे की ओर फिसलने लगता। दो-एक बार किसी तरह अपने को सँभालकर स्थिर होकर खड़ा हुआ।

देवता मेरे आगे-आगे चल रहे थे और बीच-बीच में मेरा उत्साह बढ़ाते हुए कहते जाते थे—“डरो नहीं, चलते आओ।” “अब अधिक दूर नहीं है।” “पैर अच्छी तरह दबाकर रखो और लाठी को बर्फ में जोर से गाड़ दो।”

कुछ दूर जाने के बाद जब उन्होंने देखा कि मैंने चलना बंद कर दिया है, तो वे वापस लौटे और मुझसे बोले, “क्या बात है? रुक क्यों गए?”

मैंने कहा, “इस रास्ते पर चलना मेरे लिए असंभव है। आप आगे जाइए, मैं किसी तरह पीछे से आ जाऊँगा।”

देवता हँसकर बोले, “तुम्हारी ऐसी स्थिति हो सकती है, इसका मुझे पहले से ही कुछ अनुमान था। इसी के लिए मैं तैयारी करके आया हूँ।”

उनका पूरा शरीर एक साधारण पतले कम्बल से ढका हुआ था। उन्होंने उसे हटाया तो...

देखा कि उनकी कमर में एक पेटी बँधी हुई थी और उसके दोनों ओर दो लंबे, कान जैसे पट्टे लटक रहे थे। देवता ने दाहिनी ओर के उस पट्टे को दिखाकर कहा, “तुम इसे बाएँ हाथ से अच्छी तरह पकड़कर रखना। ठीक मेरे पास भी नहीं और बहुत पीछे भी नहीं—इस तरह मेरे साथ-साथ चलते आना कि यह पट्टा तुम्हारी दाहिनी ओर रहे। जहाँ तक संभव हो, इसके सहारे अपने को सँभालने का प्रयास करना।”

मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकता, लेकिन मेरा अनुमान था कि देवता की आयु सौ वर्ष से अधिक हो चुकी थी! ऐसी भयंकर राह पर इस उम्र में मेरे जैसे वृद्ध व्यक्ति का भार सँभालना मुझे असंभव-सा लगा। इस प्रकार के रास्ते पर यदि वे मुझे पकड़कर ले जाएँगे, तो कहीं अंत में मैं गुरुहत्या के महापाप का भागी न बन जाऊँ!

देवता मेरे मन की बात समझकर बोले, "शिवानंद, कोई भय नहीं है। तुम अपनी अवस्था के अनुसार विचार कर रहे हो, इसलिए भूल कर रहे हो। मेरी आयु चाहे जो भी हो—मैं योगी हूँ। जो बात तुम्हें अत्यन्त कठिन लग रही है, मेरे लिए वह सरल है। यदि मुझे अपनी सामर्थ्य का ज्ञान न होता, तो मैं यह जिम्मेदारी क्यों लेता?"

इसके बाद मैं देवता के बताए हुए निर्देश के अनुसार आगे बढ़ा। गुरुमहाराज बाएँ हाथ में वह लंबी पर्वतीय लाठी और दाहिने हाथ में कमरबंद का वह पट्टा पकड़े हुए थे—वही पट्टा जिसे मैंने पकड़ रखा था।

वे सचमुच मुझे खींचते हुए आगे ले जा रहे थे; क्योंकि उस अत्यन्त दुर्गम रास्ते पर मैं उनकी कोई विशेष सहायता कर पा रहा था, ऐसा मुझे नहीं लगता। इसके बावजूद वे मुझे साथ

लेकर बिना किसी कठिनाई के बहुत तेज गति से आगे बढ़ते गए। छोटे बच्चे जिस प्रकार रस्सी से बँधी खिलौने की गाड़ी को आसानी से खींच ले जाते हैं, वे ठीक उसी प्रकार मुझे अपने साथ खींचते हुए चल रहे थे।

इस वृद्धावस्था में उन्होंने ऐसी असाधारण शक्ति कहाँ से प्राप्त की थी! यदि किसी मनुष्य में भीम जैसी अपार शक्ति होती, तब भी कोई व्यक्ति इस भयंकर मार्ग को एक ऐसे व्यक्ति को साथ लेकर पार नहीं कर सकता था, जो पूरी तरह असहाय हो। क्या योग के द्वारा इस असंभव-सी प्रतीत होने वाली बात को संभव बनाया जा सकता है?

इस प्रकार लगभग डेढ़ घंटे चलने के बाद देवता ने एक स्थान पर अपनी दिशा बाईं ओर मोड़ दी। इसके बाद उतराई शुरू हुई। तब मुझे समझ में आया कि चढ़ाई की अपेक्षा उतरना कई गुना अधिक कठिन था।

किसी प्रकार का रास्ता, वृक्ष अथवा पत्थर का कोई चिन्ह तक दिखाई नहीं देता था। ऊपर, नीचे, इस ओर, उस ओर—चारों तरफ बर्फ के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था।

लेकिन देवता जिस प्रकार चढ़े थे, ठीक उसी प्रकार अत्यन्त सहजता से नीचे उतरने लगे। एक स्थान पर रुककर उन्होंने

दाहिने हाथ से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर एक विशाल बर्फ से ढके पर्वत की ओर संकेत करके कहा—

"यह देखो, यमुनोत्तरी। यदि यहाँ से वहाँ तक एक सीधी रेखा खींचो, तो यह चालीस-पैंतालीस..."

मील से अधिक नहीं होगा। लेकिन इस सीधे रास्ते को सामान्य लोग पार नहीं कर सकते।"

मैंने कहा, "यह हमारे रास्ते जैसा ही है—मेरे जैसे बिल्कुल सामान्य व्यक्ति के लिए तो इस रास्ते से आना असंभव है।"

देवता हँसकर बोले, "अब डरने की कोई बात नहीं। आधे घंटे के भीतर हम गुरुमहाराज के चरणों की वंदना कर सकेंगे।"

जो लोग कभी नारायण के दर्शन करने गए हैं, वे जानते हैं—बद्रीनारायण के मंदिर से पाँच मील उत्तर में वसुधारा है और वहाँ से फिर तेरह मील उत्तर में सत्यपथ है। इसी मार्ग से पांडव महाप्रस्थान के लिए गए थे। यह रास्ता अत्यन्त दुर्गम है। पिघली हुई बर्फ से भरा हुआ लगभग एक फुट चौड़ा रास्ता है। उसके एक ओर खड़ा पर्वत है और दूसरी ओर लगभग साढ़े चार सौ फुट गहरी खाई। एक बार पैर फिसल जाए तो मनुष्य का फिर कोई चिह्न तक नहीं मिलता।

हमारे उतरने का रास्ता इस महाप्रस्थान के रास्ते से भी अधिक भयंकर जान पड़ा। मैंने सुना था कि महाप्रस्थान के मार्ग की चौड़ाई लगभग एक फुट है, लेकिन हमारा यह रास्ता अधिकांश स्थानों पर आधे फुट से भी कम प्रतीत होता था—कई जगह तो दोनों पैर साथ-साथ रखकर चलना भी असंभव था। कठिनाई यहीं समाप्त नहीं हुई थी। पूरे रास्ते पर पिघली हुई बर्फ फैली हुई थी, जिससे वह इतना भयानक हो गया था कि हर कदम पर पैर फिसलने की प्रबल संभावना थी।

रास्ते की यह दशा देखकर मेरी बुद्धि जैसे काम करना बंद करने लगी। उस दिन मुझे अच्छी तरह समझ में आया कि मेरा मन कितना संकीर्ण और भयभीत हो सकता है। मेरे गुरुदेव अब तक जिस प्रकार इतने दुर्गम रास्ते से मुझे बिना किसी कठिनाई के ले आए थे, यदि यह बात मेरे मन में रहती, तो इस और भी कठिन मार्ग को देखकर मुझे भयभीत होने का कोई कारण नहीं था।

बल्कि मुझे यह विचार करना चाहिए था कि देवता एक सिद्ध योगी पुरुष हैं। यदि ऐसा न होता, तो वे निश्चय ही मुझे अपने साथ इस प्रकार के स्थान पर ले जाने के लिए तैयार न होते।

इस भयंकर रास्ते के सामने पहुँचकर देवता ने कहा, “तुम मेरे ठीक पीछे रहकर इस कमरबंद को दोनों हाथों से बहुत मजबूती से पकड़े रहोगे। अपने पूरे शरीर का भार पर्वत की ओर रखोगे। हमेशा सामने या पर्वत की ओर देखते रहोगे। खाई की ओर मत देखना; ऐसा करने पर तुम्हारा सिर चकराने की बहुत संभावना है।”

इसके बाद हमने इस रास्ते पर चलना आरंभ किया।

सौभाग्य से यह रास्ता 300-325 गज से अधिक लंबा नहीं था, ऐसा मुझे लगा। पहले वाले रास्ते पर देवता जिस तीव्र गति से चल रहे थे, इस रास्ते पर उन्होंने वैसी गति नहीं रखी।

लगभग आधा रास्ता तय करने के बाद एक स्थान पर मेरी दृष्टि अचानक खाई की ओर चली गई और उसी क्षण मेरा सिर घूमने लगा। मेरा...

मैंने अपनी पूरी शक्ति लगाकर उस खड़ी चट्टान की ओर झुकते हुए स्वयं को सँभालने का प्रयास किया। मैंने स्पष्ट देखा कि देवता केवल एक पैर पर टिककर, दोनों हाथों से मुझे पकड़कर किसी प्रकार उस रास्ते पर बैठा दिया और अपने दोनों हाथों से मेरी आँखें ढँक दीं। इतनी सँकरी पगडंडी पर खड़े होकर उन्होंने किस प्रकार मुझे इस तरह सँभाला, यह मैं आज तक

नहीं समझ सका। जो भी हो, इसके बाद हम सुरक्षित रूप से गंतव्य स्थान पर पहुँच गए।

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि हम उतरना आरम्भ कर चुके थे। जब हम आश्रम में पहुँचे, तब बर्फ का क्षेत्र पीछे छूट चुका था। वहाँ देखा कि कुछ स्थान लगभग समतल था। बाँस, देवदार और चीड़ आदि के वृक्षों के कारण वह स्थान बहुत छायादार था। इस स्थान के पश्चिम की ओर तीन गुफाएँ दिखाई दीं। बीच वाली गुफा के सामने तीन व्यक्ति चर्मासन पर बैठे थे। उनमें से किसी का भी चर्मासन ठीक-ठीक पहचानना मेरे लिए संभव नहीं था।

उन तीनों में जो प्रधान थे—वे प्रधान हैं, यह उनके चेहरे को देखकर समझने में तनिक भी संदेह नहीं होता था—वे ठीक गुफा के सामने बैठे थे। बाकी दो व्यक्ति उनसे थोड़ी दूरी पर एक ही आसन पर बैठे थे। उनमें से एक स्त्री थी, यह बात मुझे बाद में मालूम हुई। पहली बार देखकर मैं यह समझ ही नहीं सका कि वह स्त्री है; संभव है, आप भी न समझ पाते। बाद में पता चला कि वह तिब्बत की रहने वाली थी और अपने पति के साथ थी। अनुमानतः उन दोनों की आयु लगभग नब्बे वर्ष रही होगी।

यह आश्रम जिस स्थान पर स्थित था, वह समुद्र-तल से लगभग 13,000 फुट की ऊँचाई पर था। इतनी ऊँचाई पर पहुँचना कितना ठंडा होगा, इसका आप सहज ही अनुमान कर सकते हैं। लेकिन आपको यह सुनकर शायद आश्चर्य होगा कि ये तीनों व्यक्ति बिल्कुल खुले शरीर बैठे हुए थे। उनके पास आग जलाने आदि की किसी प्रकार की व्यवस्था भी मैंने नहीं देखी।

मैं पहले ही बता चुका हूँ कि गुरु महाराज का नाम प्रणवानंद था।

जब हम वहाँ पहुँचे, महाराज एक सितार बजाते हुए संस्कृत का एक भजन गा रहे थे—भगवान शंकराचार्य द्वारा रचित एक विश्वनाथ-स्तोत्र। इसे मैंने पहले भी अनेक बार सुना था, लेकिन उस दिन जिस प्रकार उसके भाव और अर्थ को अनुभव किया, वैसा अनुभव मुझे पहले कभी नहीं हुआ था। मुझे ऐसा लगा मानो स्वयं विश्वनाथ मूर्ति धारण करके वहाँ उपस्थित हो गए हों और मैं उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव कर रहा हूँ।

महाराज इतने तन्मय होकर गा रहे थे और वे तिब्बती दम्पती भी इतने एकाग्रचित्त होकर उसका रसास्वादन कर रहे थे कि हमारे वहाँ पहुँचने की उन्हें बिल्कुल खबर ही नहीं हुई। भजन

समाप्त होने के बाद महाराज मानो फिर इस संसार में लौटे। हमें देखकर वे कुछ प्रसन्न दिखाई दिए।

हमें देखकर प्रसन्नता व्यक्त करते ही हम दोनों ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। उन्होंने कहा, "भजन आरम्भ हुए लगभग दो दण्ड (लगभग ४८ मिनट) हो चुके हैं। मैं सोच रहा था कि तुम लोग इससे पहले ही पहुँच जाओगे। रास्ता अच्छा नहीं है और उसके ऊपर शिवानंद यहाँ नये हैं। इसलिए क्या देर हो गई?"

प्रश्न उन्होंने मुझसे किया था, इसलिए मैंने कहा, "आपका अनुमान सही है। लेकिन हम आज यहाँ आ रहे हैं, इसकी सूचना क्या देवता ने पहले ही आपको भेज दी थी?"

देवता ने कहा, "नहीं, मैंने कोई सूचना नहीं भेजी। रास्ते की स्थिति तो तुमने आज स्वयं अपनी आँखों से देख ली है। ऐसी परिस्थिति में किसी को भेजकर समाचार देना बहुत कठिन और खर्चीला काम है।"

मैंने कहा, "लेकिन गुरुमहाराज कह रहे हैं कि उन्हें मालूम था कि हम आज आएँगे।"

प्रणवानंद हँसकर बोले, “तुम लोग आज आ रहे हो, यह मैं जानता था। रास्ते में एक स्थान पर तुम्हारा पैर फिसलने की संभावना हुई थी, यह भी मैं जानता हूँ।”

मैं अत्यन्त विस्मय से उनकी ओर देखता रह गया। लेकिन उन्होंने इस ओर कोई ध्यान न देकर कहा, “शिवानंद, तुम्हें शायद यहाँ की ठंड बहुत अधिक लग रही होगी और इसी कारण तुम काफी थक गए होगे। क्या आग तापोगे?”

मैंने इसकी आवश्यकता नहीं है, ऐसा कहा तो उन्होंने देवता से कहा, “दक्षिण दिशा वाली गुफा में तुम लोगों के ठहरने की व्यवस्था कर दी गई है। संध्या होने वाली है। इस समय यदि तुम्हें कोई आवश्यक काम करना हो तो कर लो। उसके बाद मेरी गुफा में आ जाना।”

संध्या के आवश्यक कार्य समाप्त करने के बाद हम दोनों प्रणवानंद की गुफा में गए। देखा, वे पद्मासन में बैठे थे, दोनों आँखें बंद थीं, किंतु चेहरे पर हल्की मुस्कान थी। हमारे प्रवेश करते ही उन्होंने आँखें खोलीं और अपने सामने बिछे एक विस्तृत कंबल पर बैठने का संकेत किया।

यथायोग्य अभिवादन के बाद हम बैठ गए। उन्होंने कहा, “तुम लोग इस समय रोटी खाओगे या पूरी (लुची)? संकोच मत करो। मेरे लिए दोनों समान हैं।”

मैंने देवता की ओर देखा। उन्होंने पूरी खाने की इच्छा व्यक्त की। प्रणवानंद ने आँखें बंद करके कुछ देर बैठे रहने के बाद दोनों हाथ थोड़ा-सा ऊपर उठाए, मानो किसी को बुला रहे हों। फिर बोले, “तुम लोगों का भोजन शीघ्र ही आ जाएगा।

शिवानंद! पास वाली गुफा में जाकर लांगा और उसकी पत्नी को समाचार दे दो कि आज भोजन इसी गुफा में होगा। वे दोनों यहाँ आ जाएँ।”

मैं समझ गया कि गुरुमहाराज मुझे उन दोनों तिब्बतियों को सूचना देने के लिए कह रहे हैं। मैं पास वाली गुफा में गया। वहाँ देखा कि...

वह दोनों साथ-साथ बैठे माला जप रहे थे। मैं बहुत आश्चर्यचकित हुआ, क्योंकि मैंने सोचा था कि भोजन आदि बनाने का काम यही दोनों कर रहे होंगे। लेकिन यहाँ उसका कोई चिह्न तक नहीं मिला।

मैं पहले ही बता चुका हूँ कि यहाँ केवल तीन गुफाएँ थीं—एक में गुरु महाराज रहते थे और दूसरी में तिब्बती दम्पती। जब तिब्बतियों की गुफा में भोजन पकाने की कोई व्यवस्था नहीं थी, तब मैंने सोचा कि तीसरी गुफा में अवश्य भोजन आदि बनाया जाता होगा। लेकिन जब वहाँ जाकर देखा, तो वह भी पूरी तरह अँधेरी थी और उसके भीतर कोई मनुष्य नहीं था। तब मैं किंकर्तव्यविमूढ़ होकर प्रणवानंदजी की गुफा में लौट आया।

भोजन कहाँ पकाया जा रहा है, यह मैं समझ नहीं पा रहा था। जबकि मैं पहले ही सुन चुका था कि इस आश्रम के आसपास कई मील तक कोई गृहस्थ नहीं रहता। फिर हमारे भोजन की तैयारी कौन कर रहा था?

मुझे देखकर प्रणवानंदजी ने कहा, "शिवानंद, क्या तुम अनुमान कर सकते हो कि तुम्हारा शिष्य अभी तक क्या कर रहा था? नहीं कर सकते। वह यह देख रहा था कि यहाँ भोजन कहाँ पकाया जाता है। है न?"

मैंने "जी हाँ" कहकर अत्यन्त लज्जित भाव से सिर झुका लिया।

प्रणवानंद हँसकर बोले, "इस उत्तरापथ (हिमालय) में ऐसे बहुत-से साधु और संन्यासी हैं, जो आबादी से पाँच-सात दिन की दूरी पर

रहते हैं। मैं स्वयं ऐसे दो महात्माओं को जानता हूँ, जो मेरे इस आश्रम से तेरह और सोलह दिन की यात्रा की दूरी पर रहते हैं। मेरे इस आश्रम में आने के लिए तुमने जो रास्ता देखा है, उनके आश्रमों तक जाने का रास्ता भी लगभग वैसा ही है। कहीं-कहीं उससे भी अधिक दुर्गम है। कुछ स्थानों पर रास्ता इतना कठिन है कि बहुत कम लोग ही उसे पार कर सकते हैं।

इन संसार-विरक्त लोगों के लिए जिस प्रकार भोजन की व्यवस्था होती है, मेरे लिए भी उसी प्रकार होना कोई बहुत असाधारण बात नहीं है। तुम्हें शायद यह सुनकर बहुत आश्चर्य होगा कि यहाँ से लगभग नौ-दस मील दूर इस आश्रम का भोजन तैयार होता है। मैं अग्नि पर पकाया हुआ कोई भोजन ग्रहण नहीं करता। लेकिन जो कुछ खाता हूँ, वह भी इसी स्थान से आता है।”

लगभग नौ-दस मील दूर से भोजन किस प्रकार प्रतिदिन यहाँ आता है और उसे कौन लाता है—यह पूछने का साहस मुझमें नहीं हुआ।

इन सिद्ध महापुरुषों की जीवन-पद्धति मेरे जैसे सामान्य मनुष्य के लिए समझना आसान नहीं है। हम लगभग सभी जड़ पदार्थों के दास हैं। उत्तरापथ के ये महात्मा, इसके विपरीत, जड़

पदार्थों की तनिक भी परवाह नहीं करते। उन्होंने आत्मा की उन्नति के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया है।

यदि मनुष्य आत्मिक उन्नति प्राप्त कर ले, तो वह जड़ पदार्थों पर कितनी असाधारण शक्ति प्राप्त कर सकता है, इसकी शायद तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रणवानंदजी के आश्रम में कुछ दिन रहकर मैं इस बात को बहुत हद तक समझ सका था।

गुरु महाराज की गुफा में प्रवेश करने के लगभग 25–26 मिनट बाद उन्होंने कहा, “तुम लोग तैयार होकर बैठो।”

इसके बाद दो व्यक्ति भोजन-सामग्री लेकर उस गुफा में आए। जब वे हम लोगों के बीच इन सभी खाद्य पदार्थों को बाँट रहे थे, तब ठीक-ठीक किस कारण से मेरा ध्यान उस ओर गया, यह मैं नहीं कह सकता; लेकिन मुझे ऐसा लगा कि उन दोनों में से किसी की भी छाया नहीं थी।

यह देखकर मैं शायद दो-एक मिनट तक चित्रवत् उनकी ओर देखता रह गया। फिर अपने पास बैठे देवता को संकेत करके मैंने यह बात उन्हें दिखाई। देवता केवल हल्का-सा मुस्कराए, लेकिन कोई उत्तर नहीं दिया। बाद में मैंने इस विषय में उनसे फिर पूछा, लेकिन उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

क्या तुम लोग इस प्रकार की घटना पर विश्वास कर सकते हो?

तुम जहाँ अपनी विद्या प्राप्त करते हो, वहाँ इन सब विषयों की चर्चा नहीं होती। लेकिन जिन्होंने तपस्या द्वारा सिद्धि प्राप्त की है, उनके लिए ये सभी बातें सामान्य घटनाओं में ही गिनी जाती हैं।

मैं उस आश्रम में छह दिन रहा। प्रत्येक दिन देखता कि प्रणवानंदजी अपने एक शिष्य को साथ लेकर लगभग सुबह ग्यारह बजे आश्रम से निकल जाते और सूर्यास्त से पहले वापस लौट आते।

मैंने देवता से इस विषय में पूछा तो उन्होंने कहा, "इस आश्रम के आसपास अनेक सिद्ध महात्मा रहते हैं। हम प्रतिदिन उनके दर्शन करने जाते हैं।"

मैं वहाँ उनके साथ जाना चाहता था। लेकिन उन्होंने कहा, "गुरु महाराज ने मना किया है। रास्ता अत्यन्त दुर्गम है। तुम जा नहीं पाओगे।"

अंतिम दिन मैंने प्रार्थना की कि मुझे कुछ और दिन इस स्थान पर रहने दिया जाए, लेकिन प्रणवानंदजी ने अनुमति नहीं दी। उन्होंने कहा, "जब इन स्थानों पर रहने का तुम्हारा समय

आएगा, तब बिना प्रार्थना किए ही तुम्हारे रहने की व्यवस्था कर दूँगा। अभी वह समय नहीं आया है।"

**अष्टम परिच्छेद**

साधुजी (शिवानंद) के लौटने के बाद आज हमारी पहली चक्र-बैठक थी। ठीक संध्या के बाद ही यह आरम्भ हुई। इसमें माध्यम, मैं, मेरे एक मातुल (मामा), सुलतान, वकील और सुधांशु उपस्थित थे।

आज चक्र में हमने एक नई घटना देखी। हम हाथों में हाथ डालकर बैठकर गाना आरम्भ ही कर रहे थे कि हमें अनुभव हुआ कि किसी आत्मा का आविर्भाव हो गया है। बैठते ही आत्मा का आविर्भाव होना मैंने पहली बार देखा।

हॉर्न के भीतर से एक युवक की आवाज सुनाई दी।

मेरे मातुल बंगाल में रहते हैं। स्वास्थ्य खराब होने के कारण वे कुछ दिनों से मेरे पास आए हुए थे। उनकी आयु उस समय लगभग 74 वर्ष थी। उन्होंने चक्र में आत्माओं के आविर्भाव के बारे में कभी नहीं सुना था। मेरे पास आने के बाद एक दिन जब मैंने उन्हें इस विषय में बताया, तो उन्होंने इस पर पूरा

विश्वास नहीं किया। उन्होंने कहा, "यदि तुम्हें आपत्ति न हो, तो किसी दिन मुझे भी अपना यह चक्र दिखाना।"

उनके आने के बाद यह उनका पहला चक्र था।

आत्मा की आवाज उनके ठीक सिर के ऊपर से आई और बोली, "दादा, आज तुम्हें पाकर मेरी बहुत दिनों की आशा और प्रार्थना सफल हुई।"

मातुल महाशय मानो स्तब्ध रह गए। ऐसा लगा कि वे बहुत अधिक भयभीत हो गए हैं।

मैंने कहा, "बड़े मामा, यदि आप इस आत्मा को पहचानते हैं, तो निडर होकर इससे बातचीत कीजिए। इससे आपको तनिक भी कोई हानि नहीं होगी।"

इसके बाद मातुल ने कहा, "तुम कौन हो, बताओ?"

**आत्मा:** "मेरा नाम हरिचरण है।"
(यह मातुल के सबसे छोटे भाई थे। लगभग 13 वर्ष पहले उनका देहान्त हो चुका था।)

मेरी सलाह पर मातुल ने पूछा, "बताओ, किस स्थान पर, किस दिन और किस समय तुम हमें छोड़कर चले गए थे?"

आत्मा ने कहा, "दादा, अभी भी तुम्हें विश्वास नहीं हुआ? इसके लिए मैं तुम्हें दोष नहीं देता। तुम्हें तो यह कल्पना ही नहीं थी कि मृत व्यक्ति की आत्मा लौटकर आ सकती है और बातचीत कर सकती है।"

इसके बाद उसने दादा के प्रश्नों के जो उत्तर दिए, वे सभी बिल्कुल सही निकले।

तब मातुल ने कहा, "अच्छा, यदि तुम हरिचरण ही हो, तो इतने दिनों तक मुझसे मिलने क्यों नहीं आए?"

**आत्मा:** "यदि मैं किसी रात तुम्हारे पास आ जाता, तो तुम तुरंत 'भूत! भूत!' चिल्लाते हुए या तो साँस फूलने तक भागते, या बेहोश हो जाते। असली बात यह नहीं है। हम अपनी इच्छा से जब चाहें तब आ नहीं सकते और न ही अपनी इच्छा से बातचीत कर सकते हैं।

मृत्यु के बाद से ही मैंने तुमसे मिलने के बहुत प्रयास किए हैं। मैंने गोलिनाथपुर के ... मजुमदार के पास तीन हजार दो सौ रुपये जमा रखे थे। उसके सारे कागज़-पत्र लोहे के संदूक के बड़े..."

मैंने उसे संदूक के भीतर रख दिया था। और मेरे बेटे का नाम...”

आत्मा की आवाज़ अचानक बंद हो गई। मैंने अनुमान किया कि उसकी शक्ति समाप्त हो गई थी, इसलिए इस प्रकार वह शांत हो गई। बाद में मैंने सुना कि मेरे छोटे मामा के निर्देश के अनुसार वे कागज़ मिल गए थे और पूरी रकम भी ब्याज सहित प्राप्त हो गई थी।

इसके बाद शिवानंदजी के गुरुभाई रामानंदजी की आत्मा ने सशरीर दर्शन दिया। हमारे चक्र में किसी प्रेतात्मा को प्रत्यक्ष रूप में देखना यह पहली घटना थी। यह कैसे हुआ, उसका कुछ विस्तार से वर्णन करना शायद आवश्यक है।

पहली आत्मा के चले जाने के बाद कमरे के एक कोने में हमें सबसे पहले एक नीले रंग का प्रकाश दिखाई दिया। कमरा लगभग पूर्णतः अंधकार में डूबा हुआ था, इसलिए वह प्रकाश हमें बहुत स्पष्ट दिखाई दे रहा था। मुझे ऐसा लगा जैसे किसी घने धुएँ के भीतर यह प्रकाश बहुत धीरे-धीरे घूम रहा हो। धीरे-धीरे धुएँ की मात्रा कम होने लगी और प्रकाश का आकार बढ़ने लगा। अंततः जब रामानंदजी की आकृति प्रकट हुई, तब धुएँ का कोई चिह्न दिखाई नहीं दे रहा था।

इस प्रकार की घटना के लिए हममें से कोई भी तैयार नहीं था। चारों ओर से बंद कमरे के भीतर अचानक एक नई मानव-मूर्ति को देखकर हम सभी स्तब्ध रह गए।

(बाद में शिवानंदजी से मैंने सुना था कि उन्हें भी यह मालूम नहीं था कि आज कोई आत्मा सशरीर प्रकट होने वाली है।)

हममें से किसी ने भी इस मूर्ति को हाथ से स्पर्श नहीं किया था, इसलिए ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि वह जड़ पदार्थ से बनी थी या नहीं। लेकिन मेरा अनुमान है कि वह छाया नहीं थी; अथवा वह ऐसे किसी पदार्थ से बनी थी जिसकी छाया नहीं होती। क्योंकि मैंने बहुत ध्यान से देखा था कि उसकी कोई छाया बिल्कुल नहीं थी। मैंने शिवानंदजी से इस विषय में कई प्रकार के प्रश्न किए थे, लेकिन उन्होंने कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया, अथवा दे नहीं सके।

यह मूर्ति प्रकट होने के बाद मैंने पूछा, “आप कौन हैं?”

मूर्ति ने कहा, “मैं तुम्हारे सहायक के गुरुभाई हूँ। मैं पहले भी कई बार आ चुका हूँ। मेरी आवाज़ शायद तुम्हारे लिए बिल्कुल अपरिचित नहीं है।”

मैंने पूछा, “क्या इससे पहले आप इस प्रकार मूर्ति धारण करके नहीं आए थे?”

मूर्ति ने कहा, “नहीं। इस प्रकार प्रकट होने के लिए विशेष साधना और शक्ति की आवश्यकता होती है। तुम्हें शायद याद है कि तुमने मुझसे सशरीर दिखाई देने की इच्छा व्यक्त की थी।”

इसके बाद दो-चार सामान्य बातें होने के बाद मैंने पूछा, “जब हम चक्र बैठाते हैं, तब आप लोगों को कैसे पता चलता है?”

मूर्ति मुस्कराकर बोली, “बहुत अच्छा प्रश्न है। देखो, हमारी दृष्टि जिस प्रकार की है, हमारे शरीर भी उसी प्रकार के हैं। जैसे तुम एक अच्छे दूरबीन की सहायता से लाखों मील दूर की वस्तुओं को देख सकते हो, हम भी ठीक उसी प्रकार, बल्कि उससे कहीं अधिक स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। जब तक तुम इस पार नहीं आओगे, शायद इस बात को उतनी स्पष्टता से समझ नहीं पाओगे।”

मैंने पूछा, “क्या मैं आपसे यह पूछ सकता हूँ कि ठीक देह-त्याग से पहले आत्मा के साथ क्या होता है?”

मूर्ति ने कहा, "यह बहुत कठिन प्रश्न है। पता नहीं मैं तुम्हें इसे ठीक प्रकार से समझा पाऊँगा या नहीं। फिर भी प्रयास कर रहा हूँ।

तुम छायामय मूर्ति की कल्पना कर सकते हो। प्रत्येक मनुष्य के जड़ शरीर के भीतर एक छायामय मूर्ति होती है। देह-त्याग के ठीक पहले यह छायामय मूर्ति धीरे-धीरे शरीर से मस्तिष्क के मार्ग से बाहर निकलने लगती है। जब यह मूर्ति शरीर से पूरी तरह बाहर निकल जाती है, तभी जड़ शरीर की मृत्यु होती है।

मृत्यु का अर्थ ही है—जड़ शरीर से सूक्ष्म शरीर का बाहर निकल जाना।

निद्रा की अवस्था में भी कई बार हमारा सूक्ष्म शरीर जड़ शरीर को छोड़कर चला जाता है। लेकिन जैसे किसी अत्यंत सूक्ष्म और संवेदनशील तार को सौ बार खींचने पर भी वह तार बना रहता है, उसी प्रकार स्वप्नावस्था में इन दोनों शरीरों के बीच एक सूक्ष्म संबंध बना रहता है। इसी कारण नींद के बाद मनुष्य फिर जागकर जीवित अवस्था में लौट आता है।

कई बार ऐसा भी होता है कि यह आत्मा शरीर को छोड़ देती है, फिर भी मनुष्य की मृत्यु नहीं होती; क्योंकि दोनों के बीच का

यह संबंध पूरी तरह टूटता नहीं है। ऐसी अवस्था में मनुष्य मृत व्यक्ति की तरह पड़ा रहता है, लेकिन वास्तव में उसकी मृत्यु नहीं होती

मैंने पूछा, "अच्छा, आपके विचार में किस लोक का जीवन अधिक सुखद है—हमारे संसार का या उस पार का?"

आत्मा ने कहा, "जो लोग इंद्रियों के दास हैं, जिन्होंने कभी इंद्रियों को वश में करना सीखा नहीं या ऐसा करना चाहा ही नहीं, उनके लिए हमारा लोक बिल्कुल अच्छा नहीं है। एक बात हमेशा याद रखना। हम इस मृत्युलोक में जिन-जिन वासनाओं के दास रहते हैं, वे सभी वासनाएँ जड़ शरीर के नष्ट हो जाने के बाद सूक्ष्म शरीर के साथ इस पार भी आ जाती हैं। वे वहाँ जितनी प्रबल रहती हैं, यहाँ भी ठीक उसी प्रकार प्रबल रहती हैं। उनमें रत्तीभर भी परिवर्तन नहीं होता।

मनुष्य अपनी सारी वासनाओं को लेकर इस पार आता है, लेकिन उन्हें तृप्त करने का कोई उपाय नहीं रहता; क्योंकि जड़ शरीर के बिना वासनाओं की पूर्ति नहीं की जा सकती। इस अवस्था में अधिकांश आत्माओं को बहुत कष्ट सहना पड़ता है।

लेकिन जिन्होंने वासनाओं के बंधन से अपने को मुक्त कर लिया है, वे यहाँ सदैव निर्मल आनंद में रहते हैं—इसी को तुम लोग स्वर्गवास कहते हो।

और जिनकी वासनाएँ बनी रहती हैं, वे अतृप्त वासनाओं के कारण सदैव नरक की यातना भोगते हैं। इन आत्माओं में से कुछ तुम्हारे संसार में जाकर, अवसर मिलने पर, किसी जड़ शरीर का आश्रय लेकर अपनी वासनाओं को पूरा करने का प्रयास करती हैं।"

मैंने पूछा, "जो लोग उस पार चले जाते हैं, क्या वे फिर इस पार लौटकर आते हैं?"

आत्मा ने कहा, "हाँ, जो इस पार आकर भी वासनाओं का त्याग नहीं कर पाते..."

जो वासनाओं का त्याग नहीं कर पाते, उनमें से कुछ लोग उस पार से फिर इस पार लौट आते हैं। और कुछ शायद इससे भी अधम लोक में चले जाते हैं। लेकिन इस विषय में मैं ठीक-ठीक समाचार नहीं दे सकता।

इसके बाद चक्र समाप्त हो गया।

## नवम परिच्छेद

पूर्वोक्त चक्र के लगभग तीन महीने बाद यह चक्र बैठा; क्योंकि शिवानंदजी किसी विशेष आवश्यकता से शांतिपुर चले गए थे। इस दिन दर्शकों की संख्या (सहायक को छोड़कर) केवल तीन थी—मैं, सुधांशु और वकील साहब।

सबसे पहले एक हिंदुस्तानी आत्मा आई। उसकी आवाज़ सुनकर स्पष्ट रूप से समझ में आ गया कि इस संसार में उसका जन्म अत्यंत निम्न वर्ग में हुआ था। आरंभ में हममें से कोई भी उसे पहचान नहीं सका। लेकिन जब उसने अपना परिचय दिया, तब वकील महाशय ने पहचान लिया कि वह उनके घर का एक पुराना नौकर था। वह लगभग २२ वर्ष तक उनके घर में रहा था और उसी घर में उसकी मृत्यु हुई थी।

उस व्यक्ति ने जो-जो बातें कहीं, वे सब अक्षरशः सत्य थीं। वकील साहब ने भी इसकी पुष्टि की। ये बातें अत्यंत सामान्य थीं, इसलिए उनका विस्तार से वर्णन करके हम पुस्तक के पृष्ठों की संख्या नहीं बढ़ाएँगे। लेकिन एक बात का उल्लेख आवश्यक है।

यह आत्मा एक कहार की थी। पश्चिमी भारत के निम्न वर्ग के लोग जिस भाषा में बोलते हैं, उसे "ठेठ हिंदी" कहते हैं। इस

आत्मा ने जिस प्रकार इस भाषा में बातचीत की, उससे हमें स्पष्ट रूप से समझ में आ गया कि वह निम्न वर्ग का व्यक्ति था।

**१५० — इहलोक और परलोक**

यहाँ एक और बात का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूँ। शिवानंदजी की सहायता से हमने अनेक बार चक्र बैठाए हैं। इसके अतिरिक्त इंग्लैंड और अमेरिका में जिन-जिन चक्रों में मैं उपस्थित रहा था, उनका वर्णन भी उचित स्थानों पर कर चुका हूँ। लेकिन इनमें से किसी भी स्थान पर मुझे समाज के निम्नतर वर्ग के किसी व्यक्ति की आत्मा के दर्शन कभी नहीं हुए।

आज के चक्र में इसका अपवाद देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। निम्नतर वर्ग के लोगों की आत्माएँ चक्र में सामान्यतः क्यों नहीं आतीं? यह प्रश्न मैंने एक दिन एक आत्मा से पूछा था। उसने जो उत्तर दिया था, उसका सार यह है—

“जो लोग परलोक में जाते हैं, वे सभी इस लोक में वापस नहीं आ सकते। इसका कारण यह है कि साधना किए बिना इस लोक में आकर जड़देहधारी मनुष्यों से बातचीत करना या उन्हें दिखाई देना संभव नहीं है। इस साधना के लिए जिस प्रकार की

मानसिक वृत्ति और बुद्धिवृत्ति की आवश्यकता होती है, वह निम्न श्रेणी के लोगों में नहीं होती। इसी कारण इस वर्ग की आत्माएँ प्रायः चक्र में नहीं आतीं।”

ऊपर कही गई बात सही है या नहीं, मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकता। लेकिन वकील साहब के नौकर के विषय में यह मत शायद लागू हो सकता है। वकील साहब से मैंने सुना कि उनके इस नौकर की मृत्यु से लगभग दो वर्ष पहले उसकी शारीरिक स्थिति इतनी दुर्बल हो गई थी कि...

हाँ, पढ़ते-पढ़ते वह इतना दुर्बल हो गया था कि उसे काम से पूरी तरह अवकाश दे दिया गया। वह तब सारा दिन बैठा रहता, हिंदी रामायण पढ़ता या पूजा-पाठ में लगा रहता। घटना जिस प्रकार घटी थी, मैंने उसी प्रकार उसका विवरण दिया। इस विषय में और कोई मत प्रकट करना उचित नहीं समझा।

खैर, इस दिन जो दूसरी आत्मा आई, वह हमारी परिचित थी। सुल्तान के पिता आज के चक्र में उपस्थित नहीं थे। इसलिए जब उन्होंने “अस्सलामु अलैकुम” कहकर अभिवादन किया, तो हमें बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने प्रत्युत्तर में कहा, “आज सुल्तान यहाँ उपस्थित नहीं है। इसलिए हमें आशा नहीं थी कि आप आएँगे।”

आत्मा ने कहा, “मैं जानता हूँ कि सुल्तान दिल्ली में अपने मामा के पास गया हुआ है। मैं जिस उद्देश्य से आया हूँ वह बताता हूँ।”

इसके बाद सुल्तान के संबंध में कुछ बातें कहकर उन्होंने हमसे अनुरोध किया कि हम उन्हें यथासंभव सुल्तान तक पहुँचा दें।

इसके बाद हमारे पूर्व-परिचित मातामह की आत्मा आई। दो-एक सामान्य प्रश्नों के बाद मैंने उनसे पूछा, “मैं परलोक के संबंध में बंगला भाषा में एक पुस्तक लिख रहा हूँ—आपको इसका पता है या नहीं, मैं नहीं कह सकता। इस विषय में आपका क्या मत है?”

**आत्मा:** “इस समाचार को इस लोक के बहुत से लोग जानते हैं। हम सभी तुम्हें इसके लिए हृदय से आशीर्वाद दे रहे हैं। मैं कह रहा हूँ कि इस कार्य में तुम सफल मनोरथ होगे। हम सभी की हार्दिक इच्छा है कि तुम्हारे संसार और हमारे संसार के बीच विचारों एवं भावों का आदान-प्रदान दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाए।

तुम लोग पश्चिमी देशों को जड़वादी समझकर कई बार उनकी ओर कुछ उपेक्षा की दृष्टि से देखते हो और मन ही मन सोचते हो कि तुम लोगों के समान आध्यात्मिक जाति और कोई नहीं है। लेकिन तुममें से बहुत से लोग यह नहीं जानते कि परलोक-

तत्त्व के विषय में वहाँ कितनी बड़ी उन्नति हो चुकी है और हो रही है।

एक बात हमेशा याद रखना कि तुम्हारी पूर्ण उन्नति तभी होगी, जब तुम लोग—जड़ शरीर धारण करने वाले—सहज रूप से हमारे लोक में आ सकोगे और हम भी जब चाहें तुम्हारे संसार में जा सकेंगे।”

**मैं:** “क्या आपको लगता है कि यह कभी संभव हो सकता है?”

**आत्मा:** “हमारे यहाँ जो लोग नेता के रूप में प्रसिद्ध हैं, वे कहते हैं कि अत्यंत प्राचीन काल में भारत के लोगों ने हमारे संसार के साथ बहुत घनिष्ठ संबंध स्थापित किया था। उस समय को लोग ‘सत्ययुग’ कहते थे। उस समय हमारे लोक के अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति तुम्हारे संसार में प्रायः आया-जाया करते थे…”

वे आते-जाते थे और तुम्हारे यहाँ के पुरुषों में से कुछ को देवता मानकर उनकी पूजा करते थे।

इसके बाद आत्मा मौन हो गई।

ऊपर मातामह ने जो बातें कही थीं, उनका संक्षेप में वर्णन किया गया। अन्य स्थानों पर हमने इसे और अधिक विस्तार से वर्णित किया है।

**दशम परिच्छेद**

हमारे कुछ परिचित लोगों के अनुरोध पर आज एक चक्र का अधिवेशन हुआ। इन नए लोगों की संख्या आठ थी। जो लोग हमारे चक्र में सामान्यतः उपस्थित रहते हैं, उनके साथ इन नए लोगों को मिलाकर आज कुल पंद्रह व्यक्ति उपस्थित थे। हमारे चक्र में एक साथ इतने अधिक लोगों का उपस्थित होना यह पहली घटना थी।

बाद में मुझे पता चला कि इन आठ लोगों में से लगभग सभी केवल तमाशा देखने आए थे। वे मन ही मन जानते थे कि हमारे इस चक्र की सारी गतिविधियाँ धोखाधड़ी हैं। उनका विचार था कि कुछ चालाकियों के द्वारा हम सभी को ठगते हैं।

यहाँ एक बात कहना आवश्यक है। बहुत-से तथाकथित शिक्षित लोग भी यह मानते हैं कि चक्र द्वारा मृत व्यक्ति की आत्मा को बुलाना एक बहुत बड़ा छल है। इसके लिए मैं उन्हें दोष नहीं दूँगा। जब उनकी बी.ए., एम.ए. की पढ़ाई में मिली पुस्तकों में

चक्र के संबंध में किसी प्रकार का उल्लेख नहीं मिलता, तो वे इस विषय पर विश्वास किस प्रकार कर सकते हैं?

हाँ, कुछ लोग यह कह सकते हैं कि जब सैकड़ों लोग मृतकों की आत्मा को बुलाने की बात पर विश्वास करते हैं, तब अविश्वास करने वालों को इस विषय में उचित रूप से जाँच-पड़ताल करनी चाहिए। लेकिन उनमें से कोई भी इस विषय में रत्तीभर भी जाँच नहीं करता और फिर भी पूरे मामले को शुरू से अंत तक झूठ मान लेता है।

मैं कहता हूँ—तुम लोग विश्वास न करो, इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है और इसके लिए मैं तुम्हें दोष भी नहीं देता। किसी विषय पर विश्वास करना या न करना सभी का अधिकार है। लेकिन जिस प्रकार उन्हें प्रेततत्त्व पर विश्वास न करने का अधिकार है, उसी प्रकार हमें विश्वास करने का भी अधिकार है।

प्रेततत्त्व का अध्ययन और प्रेतात्माओं का आह्वान मैं कुछ मित्रों और संबंधियों के साथ अपने ही घर में नियमित रूप से करता हूँ। जो लोग हमारे कार्य को ढोंग मानते हैं, यदि वे मेरे घर में उपस्थित होकर हमें जालसाज़ सिद्ध करने का प्रयास करें, तो शायद कोई भी उनके इस कार्य का विरोध नहीं करेगा।

आज के चक्र की घटना सुनने के बाद पाठक स्वयं इस बात को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।

चक्र आरंभ होने से कुछ समय पहले ही उन लोगों ने कमरे की विशेष रूप से जाँच की। उन्होंने खिड़कियों, दरवाज़े और यहाँ तक कि दीवारों को भी सीढ़ी लगाकर जाँच लिया। चारों ओर की दीवार के प्रत्येक स्थान को ठोक-बजाकर देखा कि कहीं कोई गुप्त द्वार तो नहीं है।

लगभग आधे घंटे तक जाँच करने के बाद उन्हें स्वीकार करना पड़ा कि इस कमरे का बाहर से कोई संपर्क नहीं था। इस कमरे में दो खिड़कियाँ और एक दरवाज़ा था, जिन्हें उन्होंने अपने हाथों से बंद किया।

कमरे के सामान में एक मेज़, कुछ कुर्सियाँ, एक हॉर्न, एक बॉक्स हारमोनियम और एक फूलों का गुच्छा था। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं था। उन्होंने इन सभी वस्तुओं की भी जाँच करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मेज़ और कुर्सियों को उलट-पलटकर देखा कि उनमें किसी प्रकार की कोई चालाकी या छिपी हुई व्यवस्था तो नहीं है।

अंततः जब उन्होंने स्वीकार कर लिया कि उन्हें पूरी तरह संतोष हो गया है, तब हमने चक्र का कार्य आरंभ किया।

कहने की आवश्यकता नहीं कि आज मिश्रजी माध्यम (मीडियम) का कार्य कर रहे थे। उन आठ लोगों के अनुरोध पर आज कमरे की रोशनी पूरी तरह बुझा दी गई और बहुत धीमे स्वर में...

मैंने उसे संदूक के भीतर रख छोड़ा था। और मेरे बेटे का नाम...

आत्मा की आवाज़ अचानक बंद हो गई। अनुमान से समझा कि उसकी शक्ति समाप्त हो जाने के कारण वह इस प्रकार निःशब्द हो गई। बाद में सुना कि मेरे छोटे मामा के निर्देश के अनुसार वे कागज़ मिल गए और सारी रकम भी ब्याज सहित प्राप्त हो गई।

इसके बाद शिवानंद के गुरुभ्राता रामानंदजी की आत्मा सशरीर दर्शन देने लगी। हमारे चक्र में प्रेतात्मा को प्रत्यक्ष रूप में देखना यह पहली घटना थी। यह कैसे हुआ, उसका कुछ विस्तृत वर्णन आवश्यक है।

पहली आत्मा के चले जाने के बाद कमरे के एक कोने में सबसे पहले नीले रंग का एक प्रकाश दिखाई दिया। कमरा लगभग पूर्णतः अँधेरे में डूबा हुआ था, इसलिए वह प्रकाश हमें बहुत स्पष्ट दिखाई दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे किसी घने धुएँ के भीतर यह प्रकाश बहुत धीरे-धीरे घूम रहा हो। धीरे-धीरे धुएँ की मात्रा कम होने लगी और प्रकाश का आकार बढ़ने लगा। अंततः

जब रामानंदजी की मूर्ति प्रकट हुई, तब धुएँ का कोई चिह्न दिखाई नहीं दिया।

इस प्रकार की घटना के लिए हममें से कोई भी तैयार नहीं था। चारों ओर से बंद कमरे के भीतर अचानक एक नई मानव-मूर्ति को देखकर हम जैसे स्तब्ध रह गए। बाद में शिवानंदजी से सुना कि उन्हें भी यह ज्ञात नहीं था कि आज एक आत्मा सशरीर प्रकट होगी।

यह मूर्ति हममें से किसी ने भी हाथ से स्पर्श नहीं की थी, इसलिए ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि वह जड़ पदार्थ से निर्मित थी या नहीं। किंतु मेरा अनुमान है कि वह धुएँ की छाया मात्र थी, अथवा किसी ऐसे पदार्थ से बनी थी जिसकी छाया नहीं होती; क्योंकि मैंने अच्छी तरह ध्यान देकर देखा था कि उसकी कोई छाया नहीं थी। मैंने शिवानंदजी से इस विषय में अनेक प्रकार के प्रश्न किए, लेकिन उन्होंने कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया अथवा दे नहीं सके।

इस मूर्ति के प्रकट होने के बाद मैंने पूछा, “आप कौन हैं?”

मूर्ति ने कहा, “मैं तुम्हारे सहायक के गुरुभ्राता हूँ। मैं पहले भी कई बार आ चुका हूँ। मेरी आवाज़ शायद तुम्हारे लिए बिल्कुल अपरिचित नहीं है।”

मैंने पूछा, "क्या आप पहले कभी इस प्रकार मूर्ति धारण करके नहीं आए?"

मूर्ति ने कहा, "नहीं। इस प्रकार प्रकट होने के लिए विशेष साधना और शक्ति की आवश्यकता होती है। तुम्हें शायद याद है कि तुमने पहले मुझे सशरीर देखने की इच्छा प्रकट की थी।"

इसके बाद दो-चार सामान्य बातें होने के बाद मैंने पूछा, "हम चक्र बैठाते हैं, यह आप लोगों को कैसे पता चलता है?"

मूर्ति मुस्कराकर बोली, "बहुत अच्छा प्रश्न है। देखो, हमारे शरीर की तरह हमारी दृष्टि भी सूक्ष्म है। तुम लोग अच्छी दूरबीन की सहायता से लाखों मील दूर की वस्तुओं को देख सकते हो; हम भी उसी प्रकार, बल्कि उससे कहीं अधिक स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। इस पार आए बिना शायद तुम इस बात को उतनी स्पष्टता से समझ नहीं पाओगे।"

मैंने पूछा, "क्या मैं यह पूछ सकता हूँ कि ठीक देह-त्याग के पूर्व आत्मा किस प्रकार रहती है?"

मूर्ति ने कहा, "यह बहुत कठिन प्रश्न है। नहीं जानता कि तुम्हें ठीक प्रकार से समझा पाऊँगा या नहीं। फिर भी प्रयास करता हूँ। तुम छायामय मूर्ति की कल्पना कर सकते हो। प्रत्येक

मनुष्य के स्थूल शरीर के भीतर एक छायामय मूर्ति रहती है। देहत्याग के ठीक पहले यह छायामय मूर्ति धीरे-धीरे शरीर से ब्रह्मरंध्र के मार्ग से बाहर निकलने लगती है। जब यह मूर्ति शरीर से पूर्णतः बाहर निकल जाती है, तब स्थूल शरीर की मृत्यु होती है। मृत होने का अर्थ ही स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर का बाहर निकल जाना है।

निद्रा की अवस्था में अनेक बार हमारा सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर को छोड़कर चला जाता है। किंतु जिस प्रकार किसी अत्यंत सूक्ष्म तार को सौ बार मोड़ने पर भी वह तार बना रहता है, उसी प्रकार एक सूक्ष्म तार के द्वारा इन दोनों शरीरों के बीच स्वप्नावस्था में एक संबंध बना रहता है। इसी कारण निद्रा के बाद मनुष्य फिर जागकर जीवित हो उठता है। कई बार आत्मा शरीर से बाहर चली जाती है, फिर भी मनुष्य की मृत्यु नहीं होती; क्योंकि यह संबंधसूत्र पूरी तरह टूटता नहीं है। ऐसे समय में मनुष्य मृतवत् पड़ा रहता है, लेकिन वास्तव में उसकी मृत्यु नहीं होती।"

"तब तुम्हें बहुत कुछ बताता।" इसके बाद आत्मा ने अत्यंत धीमी आवाज़ में हरेन से कुछ बातें कहीं। इसके बाद हरेन ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, अब और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। आप मेरे पिता की आत्मा हैं, यह मैं अब अस्वीकार

नहीं करता। बाबा, बताइए, किस प्रकार आपको संतोष मिलेगा?" लेकिन इसके बाद आत्मा की ओर से कोई उत्तर नहीं मिला।

इसके बाद और दो आत्माओं का आविर्भाव हुआ। इनकी बातचीत में विशेष रूप से कोई नई बात नहीं थी, इसलिए हमने उसका वर्णन नहीं किया। हरेन के दल के दो युवकों ने इन दोनों आत्माओं से अनेक प्रकार के प्रश्न करके यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि वे आत्माएँ नहीं हैं। लेकिन अंत में उन्होंने अनिच्छा से स्वीकार किया कि मृत्यु के बाद आत्मा रहती है और उसे संभवतः इस लोक में बुलाया जा सकता है।

उपर्युक्त आठ व्यक्तियों में से कुछ ने बाद में हमारे चक्र में लगभग नियमित रूप से आना शुरू कर दिया और स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि मृत्यु के बाद आत्मा रहती है तथा उन्हें जब नियमानुसार बुलाया जाता है, तो वे उपस्थित होकर हम लोगों से सामान्य मनुष्यों की तरह बातचीत करती हैं।

## एकादश परिच्छेद

आज के चक्र में हम कुल चार व्यक्ति थे। आज[मीडियम]...

सबसे पहले एक नई आत्मा का आविर्भाव हुआ। उन्होंने मुझसे कहा, "गुप्त बाबू, मैं कौन हूँ, बताओ तो?" आवाज़ कुछ जानी-

पहचानी सी लगी, लेकिन बहुत प्रयास करने पर भी मैं उन्हें पहचान नहीं सका। तब उन्होंने कहा, “भामो की बात याद आती है क्या?”

तुरंत मैं उन्हें पहचान गया। ये लगभग २४ वर्ष पहले भामो में देह त्याग कर चुके थे। वहाँ वे एक बहुत बड़े ठेकेदार थे। मैं भी लगभग दो वर्ष भामो में रहा था। उस समय लगभग प्रतिदिन ही उनके घर पर वहाँ के बंगाली लोग संध्या के समय एकत्र होते थे। ऐसी स्थिति में उन्हें भूल जाना शायद उचित नहीं था।

मैंने कहा, “अब पहचान गया—आप दत्त बाबू हैं। लेकिन इतने लंबे समय के बाद यदि मैं आपको भूल गया था, तो शायद इसमें बहुत अधिक अन्याय भी नहीं हुआ।”

मैं दत्त बाबू को पहचान तो गया, लेकिन मुझे लगा कि उनकी आवाज़ पहले की अपेक्षा कुछ परिवर्तित हो गई है। अपने मन का संदेह दूर करने के लिए मैंने कहा, “अच्छा, आपके घर में एक सज्जन रहते थे। उनका नाम मैं भूल गया हूँ। क्या आपको उनका नाम याद है?”

आत्मा हँसकर बोली, “गुप्त बाबू, आप नहीं जानते कि हम लोग प्रायः आपके मन की बातें जान सकते हैं। मुखर्जी महाशय का नाम आप भूले नहीं हैं। आप जानना चाहते हैं कि मैं सचमुच

दत्त बाबू हूँ या नहीं। देखिए, चौबीस वर्षों में जैसे आपके संसार में शरीर में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार आवाज़ में भी परिवर्तन होता है। आप शायद नहीं जानते, लगभग सात वर्ष हुए, मुखर्जी महाशय हमारे यहाँ आ चुके हैं।"

और दो-एक बातें होने के बाद दत्त बाबू की आत्मा अदृश्य हो गई।

इसके बाद एक और आत्मा आई और फिर हमारे मातामह महाशय उपस्थित हुए। आज एक अभूतपूर्व घटना से हम सभी अत्यंत आश्चर्यचकित हो गए। आज वे देह धारण करके आए थे। आज ऐसा अद्भुत प्रसंग घटेगा, यह मीडियम भी नहीं जानते थे।

घटना को शायद विस्तार से बताना आवश्यक है। दत्त बाबू के बाद आई आत्मा के चले जाने के पश्चात लगभग ३-७ मिनट तक किसी भी प्रकार की आत्मा का आविर्भाव नहीं हुआ। हमने सोचा—शायद मीडियम की शक्ति कम हो गई है। ऐसी स्थिति में एक-दो भजन गाए जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इन भजनों द्वारा ईथर-स्तर में तरंगें उत्पन्न करके नई आत्मा के आने के मार्ग को फिर से सक्रिय करने का प्रयास किया जाता है।

हमने एक हिंदी भजन आरंभ करते ही देखा कि कमरे के एक कोने में अचानक एक...

एक मंद प्रकाश-पुंज का आविर्भाव हुआ। वह एक-दो सेकंड तक स्थिर रहकर उसी स्थान पर घूमने-फिरने लगा। इसके बाद अचानक उसके भीतर से मातामह की मूर्ति प्रकट हुई। मूर्ति प्रकट होते ही वह हमारे सामने उपस्थित हो गई। ऐसा नहीं लगा कि वह ठीक-ठीक पैदल चलकर आई थी। जिस प्रकार कोई छायामूर्ति चलती-फिरती हुई आती है, यह भी लगभग उसी प्रकार आई।

मातामह कई बार हमारे चक्र में आ चुके थे, लेकिन हमने उनका शरीर कभी नहीं देखा था; इसलिए हम उन्हें पहचान नहीं सके। हम आश्चर्य से उनकी ओर देखते रह गए। हमारी यह दशा देखकर वे हँसकर बोले, “क्या बात है! तुम लोग अपने पुराने मित्र को भी पहचान नहीं पा रहे हो?”

उनकी बात सुनकर मैंने कहा, “दादा महाशय, यह क्या बात है! इस प्रकार तो आप कभी नहीं आए। आज तो असंभव भी संभव हो गया!”

उन्होंने कहा, “हाँ, यह नया अवश्य है, लेकिन असंभव नहीं। यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति यदि प्रयास करे तो मूर्ति धारण कर सकता

है। हाँ, इसके लिए कठिन साधना करनी पड़ती है। देखो, इस पार आने मात्र से यह संभव नहीं हो जाता कि कोई तुम्हारे साथ अपनी इच्छा के अनुसार बातचीत कर सके या शरीर धारण कर सके। इस शक्ति के लिए साधना करनी पड़ती है। इसी कारण हमारे यहाँ बहुत कम आत्माओं को मूर्ति धारण करने की शक्ति प्राप्त होती है।

शरीर धारण करके तुम्हारे पास आने की मेरी बहुत तीव्र इच्छा थी और इसी कारण मुझे विशेष रूप से कठिन साधना करनी पड़ी। यह शक्ति मैंने प्राप्त तो कर ली है, लेकिन साथ ही यह भी समझ लिया है कि यदि हमारे लोक में वास्तविक उन्नति करने की इच्छा हो, तो इस नई इच्छा का दमन करना चाहिए। ऐसा न करने पर बार-बार जड़ शरीर धारण करने की इच्छा होगी। यह उचित नहीं है।"

मैंने पूछा, "क्या आप फिर जड़ शरीर में लौटकर नहीं आना चाहते?"

मातामह बोले, "निश्चय ही नहीं। जड़ शरीर के जो अनगिनत उपद्रव हैं, क्या तुम्हें लगता है कि मैंने उन्हें यहाँ आकर भूल दिया है?

और एक बात। हमारे लोक में जिसे अपनी इच्छा से पुनः जड़ शरीर धारण करना होता है, उसके लिए यह निश्चित नहीं है कि उसे तुम्हारे ही लोक में लौटना पड़ेगा। इससे भी कहीं अधिक निकृष्ट लोक हैं, जहाँ वह जन्म ले सकता है। वहाँ जीव को शायद तुम लोगों से भी अधिक यातना सहनी पड़ती है।

इन सब कारणों से मैंने निश्चय किया है कि भविष्य में अब बार-बार तुम्हारे पास नहीं आऊँगा। हाँ, यदि कभी आऊँ तो...”

उनकी बात पूरी होने से पहले ही वे अदृश्य हो गए। ऐसा क्यों हुआ, मैं ठीक-ठीक समझ नहीं सका। इस विषय में मुझे और भी बहुत-सी बातें जाननी थीं, लेकिन ऐसा हो न सका। उस दिन हमारी बैठक यहीं समाप्त हो गई।

## तेरहवाँ परिच्छेद

शिवानंदजी कल चले जाएँगे। उनके मन में अपने गुरु को बुलाने की इच्छा हुई है। उन्हें अवश्य जाना होगा। उनके गुरु किस प्रकार दुर्गम स्थान में रहते हैं, यह हम पहले ही बता चुके हैं।

मैंने उनसे पूछा था कि उन्हें अपने गुरु की ओर से किस प्रकार समाचार मिला। उन्होंने कहा, “मेरे देवता किस प्रकार अलौकिक शक्तियों से संपन्न हैं, इसका वर्णन मैं पहले कर चुका हूँ। इसके

बाद भी यदि तुम मुझसे इस विषय में प्रश्न करते रहोगे, तो मुझे केवल इतना ही कहना पड़ेगा कि तुम लोग इन बातों को ठीक से समझते नहीं हो अथवा समझ भी लो तो मानोगे नहीं। हम संसार-विरक्त संन्यासी हैं। हमारी कार्य-प्रणाली को तुम लोग ठीक प्रकार से समझ नहीं सकते।"

मैंने कहा, "मेरा विचार है कि अंग्रेज़ी में जिसे 'टेलीपैथी' कहते हैं, आप लोगों में उसी प्रकार की कोई प्रणाली है। इसके द्वारा हम अपने मन की बात दूर बैठे किसी भी व्यक्ति तक पहुँचा सकते हैं।"

मिश्रजी ने कहा, "मैं नहीं जानता था कि साहब लोग इन विषयों पर चर्चा करते हैं। अच्छा, इस विषय में पश्चिम में कितनी उन्नति हुई है?"

मैं। आपके इस प्रश्न का मैं ठीक उत्तर नहीं दे सकता। केवल इतना ही जानता हूँ कि अभी यह विद्या शैशवावस्था में है। लेकिन एक-दो ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने हमारे योग के विषय में कुछ-कुछ अध्ययन किया है—वे इस विद्या में बहुत कुछ आगे बढ़ चुके हैं।

मिश्रजी। ठीक कहा। हमारे योगशास्त्र का अच्छी तरह अध्ययन किए बिना इस विद्या में दक्ष होना संभव नहीं है। हमारे बीच

जो वास्तविक संन्यासी हैं, उनमें से बहुतों ने इस विद्या को प्राप्त कर लिया है। आवश्यकता पड़ने पर वे आपस में इच्छानुसार समाचार भेजते रहते हैं।

कल रात मुझे देवता का आदेश मिला है कि आगामी शुक्ला त्रयोदशी को मुझे उनके आश्रम में जाकर उनके चरणों की वंदना करनी होगी। लगता है, इस बार मुझे कुछ दिनों तक उनकी चरण-सेवा करनी पड़ेगी। इसलिए फिर कब तुम्हारे पास लौटूँगा, यह मैं नहीं कह सकता।

कल वे चले जाएँगे, इसलिए आज संध्या हमने उन्हें माध्यम बनाकर अंतिम चक्र की बैठक आयोजित की। इस चक्र में हम नौ व्यक्ति (मीडियम को छोड़कर) उपस्थित थे। पहले लगातार दो आत्माएँ उपस्थित हुईं। उनकी बातों में कोई विशेष नई सूचना नहीं थी, इसलिए हमने यहाँ उनका वर्णन नहीं किया।

इसके बाद हमारे मिश्रजी के मित्र और गुरुभाई रामानंद आए।

एक सज्जन ने उनसे पूछा, “हम चक्र में बैठे हैं, यह आप लोग कैसे जान पाते हैं? कई बार ऐसा देखा है कि शायद किसी व्यक्ति की मृत्यु हुई है और उसी समय चक्र बैठाया गया। वह ठीक उसी समय उपस्थित हो गया। यह किस प्रकार संभव होता है?”

रामानंद। देखो, हम सूक्ष्म देहधारी हैं। कोई भी जड़ वस्तु हमारी दृष्टि के मार्ग में बाधा नहीं बनती। इसलिए कोई भी जड़ वस्तु हमारी दृष्टि को रोक नहीं सकती। पृथ्वी के किसी भी स्थान पर चक्र बैठाया जाए, तो हमारी आँखों के सामने एक ज्योति प्रकाशित होती है। तभी हम जान पाते हैं कि चक्र बैठा है। और हम सूक्ष्म देहधारी होने के कारण तुरंत वहाँ पहुँच सकते हैं।

सज्जन। चक्र की यह ज्योति कहाँ से आती है?

रामानंद। वह चक्र के मीडियम के मस्तक से निकलती है और हम उसे बहुत दूर से भी आसानी से देख सकते हैं। हम जो कुछ करते हैं, वह सब मीडियम की सहायता से करते हैं। यदि मीडियम विशेष रूप से शक्तिशाली हो, तो हम तुम्हारे पास मूर्ति धारण करके आ सकते हैं। लेकिन यह बात सत्य है कि आत्मा को जड़ जगत में आने के लिए केवल मीडियम की सहायता ही पर्याप्त नहीं होती; हमें भी कुछ साधना करनी पड़ती है।

मैं। हमारे लिए क्या आपके लोक में जाना असंभव है?

रामानंद। नहीं, बिल्कुल नहीं। जैसे हमें तुम्हारे पास आने के लिए साधना करनी पड़ती है, उसी प्रकार तुम्हें भी साधना करनी पड़ती है। यह कठिन काम प्रतीत होता है, लेकिन यदि अच्छा गुरु मिल जाए तो इसे सहज ही सीखा जा सकता है। जब तुम

लोग सोते हो, तब तुम्हारा सूक्ष्म शरीर कई बार स्थूल शरीर को छोड़कर चला जाता है और हमारे लोक की बहुत-सी बातें देख पाता है। तुम इसे स्वप्न कहते हो।

मैं। क्या परलोकगत आत्मा भविष्य की बातें बता सकती है?

रामानंद। यह प्रश्न क्यों?

मैं। आप लोग सभी विषयों में हमसे अधिक उन्नत हैं। इसलिए भविष्य की बातें जानना शायद आपके लिए बहुत सरल होगा।

रामानंद। भविष्यवाणी करना अत्यंत कठिन है। अनेक प्रकार की आनुषंगिक घटनाओं और ग्रह-उपग्रहों की गतिविधियों पर मनुष्य का भविष्य निर्भर करता है; इसलिए भविष्य के विषय में निश्चित रूप से कहना प्रायः संभव नहीं होता। हमारे लोक से भी ऊपर और अधिक उन्नत लोक हैं। वहाँ के निवासी भविष्य बता सकते हैं या नहीं, यह मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकता।

मैं। क्या इन अधिक उन्नत लोकों के निवासी आपके लोक में आते-जाते रहते हैं?

रमानन्द। नहीं, बिल्कुल नहीं। हमें तुम्हारे पास आने के लिए जैसे साधना करनी पड़ती है, उसी प्रकार तुम्हें भी साधना करनी

पड़ती है। यह कठिन काम प्रतीत होता है, किन्तु योग्य गुरु मिल जाए तो इसे आसानी से सीखा जा सकता है। जब तुम सोते हो, तब तुम्हारा सूक्ष्म शरीर कई बार स्थूल शरीर को छोड़कर चला जाता है और हमारे लोक की बहुत-सी बातें देख पाता है। तुम इसे स्वप्न कहते हो।

मैं। क्या परलोकगत आत्मा भविष्य की बात बता सकती है?

रमानन्द। यह प्रश्न क्यों?

मैं। प्रत्येक विषय में आप लोग हमसे अधिक उन्नत हैं। इसलिए भविष्य की बात जानना शायद आपके लिए बहुत सरल होगा।

रमानन्द। भविष्य बताना अत्यन्त कठिन है। मनुष्य का भविष्य अनेक प्रकार की आनुषंगिक घटनाओं तथा ग्रह-उपग्रहों की गतियों पर निर्भर करता है; इसलिए भविष्यवाणी करना प्रायः सम्भव नहीं होता। हमारे लोक से ऊपर भी और अधिक उन्नत लोक हैं। वहाँ के निवासी भविष्य बता सकते हैं या नहीं, मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकता।

मैं। इन अधिक उन्नत लोकों के निवासी क्या आपके लोक में आते-जाते हैं?

रमानन्द। आते हैं, क्यों नहीं! वे केवल हमारे लोक में ही नहीं आते, बल्कि तुम्हारे जगत में भी आते-जाते रहते हैं। पूर्वकाल में इन्हें देवता और ऋषि के नाम से जाना जाता था।

इसके बाद रमानन्द की आत्मा के चले जाने के पश्चात उपस्थित लोगों में एक हिन्दुस्तानी सज्जन के एक भाई की आत्मा उपस्थित हुई। उन्होंने जिस प्रकार बातचीत की, उससे स्पष्ट रूप से समझ में आ गया कि वे वास्तव में उस सज्जन के भाई थे। तीन वर्ष पूर्व लाहौर में उनका देहान्त हुआ था।

## तृतीय भाग

## द्वितीय खण्ड

*(हमारे पूर्वोक्त चक्र तथा पृथ्वी के कुछ स्थानों पर हुए प्रसिद्ध चक्रों में परलोकगत आत्माओं ने जो संदेश दिए हैं, उनका सारांश।)*

### सम्बन्ध

हमारे पूर्वोक्त चक्रों में आत्माओं ने परलोक के सम्बन्ध में जिन गूढ़ तत्त्वों की चर्चा या विवरण किया था, उसका हमने इस खण्ड में सरल और संक्षिप्त रूप में वर्णन किया है।

पाठकगण ध्यान रखें कि यहाँ हमने केवल उनके मतों को उद्धृत किया है। इनकी सत्यता के सम्बन्ध में हम किसी प्रकार का मत व्यक्त नहीं करेंगे, क्योंकि इस विषय में हम पूर्णतः अज्ञ हैं। इन विषयों के सम्बन्ध में यदि ग्रन्थ के चक्र में उपस्थित किसी अन्य आत्मा ने भिन्न-भिन्न प्रकार के मत दिए हों, तो समझना चाहिए कि जैसे हमारे इस संसार में एक ही विषय पर अनेक प्रकार के मत होते हैं, वैसे ही उस पार भी होते हैं।

हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि उस पार की आत्माओं का ज्ञान भी सीमित है। जो लोग यह समझते हैं कि मनुष्य के मरते ही वह सर्वज्ञ अथवा देवता बन जाता है, उन्हें यह जान लेना चाहिए कि मृत्यु के बाद मनुष्य के ज्ञान, विद्या, बुद्धि आदि की सीमा उसी अवस्था में रहती है, जैसी उसकी मृत्यु से ठीक पहले थी। अर्थात् इस संसार में मनुष्य ने जितनी उन्नति या अवनति प्राप्त की है, परलोक में आत्मा को ठीक उसी स्तर से अपना नया जीवन आरम्भ करना पड़ता है। इसलिए मनुष्य के सामाजिक, राजनीतिक, मानसिक आदि विषयों में इस संसार में जिस प्रकार...

रहती है, मृत्यु के बाद उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। हाँ, परलोक में स्थूल शरीर का आवरण और स्थूल वस्तुओं की

बाधा न होने के कारण उन्नति करने की सम्भावना इस लोक की अपेक्षा बहुत अधिक होती है।

पाश्चात्य जगत के चक्रों में उपस्थित कुछ आत्माओं के जिन कथनों का वर्णन किया गया है, उनका विवरण वहाँ की प्रेत-समितियों की वार्षिक रिपोर्टों से संकलित किया गया है। ये सभी समितियाँ विश्वप्रसिद्ध हैं। इसलिए उनके विवरण को सहज ही स्वीकार किया जा सकता है।

**प्रश्नोत्तर**

नीचे के सभी विवरण प्रश्नोत्तर के रूप में दिए गए हैं। चक्र में ठीक इसी प्रकार प्रश्न पूछे गए थे।

**प्रश्न।** हमारे यहाँ जिस प्रकार एक जाति का दूसरी जाति के साथ, एक पड़ोसी का दूसरे पड़ोसी के साथ कलह, विवाद, मारपीट आदि होते हैं, क्या उस पार भी ऐसा होता है?

**उत्तर।** बहुत होता है। तुम क्या समझते हो कि मनुष्य इस लोक से जाते ही एकदम सत्ययुग का निवासी बन जाता है? ऐसा नहीं होता। मनुष्य के मन में जो मलिनताएँ रहती हैं, शरीर त्यागने के बाद उस पार जाकर उनमें रत्ती भर भी परिवर्तन नहीं होता। इसलिए हिंसा, स्वार्थपरता आदि के कारण जो सारे झगड़े

मनुष्यों को सहने पड़ते हैं, उनका पूर्ण विकास उस पार भी दिखाई देता है।

हाँ, एक बड़ा अन्तर है। उस पार स्थूल शरीर नहीं है और हमारा सूक्ष्म शरीर तुम्हारे शरीर की तरह नष्ट या घायल नहीं होता। इसलिए कोई किसी को पूरी तरह नष्ट नहीं कर सकता। फिर भी परस्पर ईर्ष्या-द्वेष वहाँ बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

यहाँ ऐसी एक सज़ा है, जिसकी तुलना में तुम्हारे लोक की कोई भी सज़ा गम्भीर नहीं हो सकती। यहाँ यदि देखा जाता है कि कोई आत्मा दिन-प्रतिदिन पतन की ओर जा रही है और उसके द्वारा इस लोक का अहित हो रहा है,...

तो उसे इस लोक से हटाकर उससे भी निम्नतर लोक में भेज दिया जाता है, जहाँ उसे अत्यन्त अधम प्रकार का स्थूल शरीर धारण करना पड़ता है।

**प्रश्न।** उसे किस प्रकार और किसके आदेश से हटाया जाता है?

**उत्तर।** इसका ठीक उत्तर मैं नहीं दे सकता। फिर भी इस विषय में हमने जो कुछ सुना है, उसे संक्षेप में बता रहा हूँ। ऐसे बहुत-से लोक हैं, जो तुम्हारे जगत की अपेक्षा सभी विषयों में निम्नतर हैं। ये लोक कहाँ हैं, यह मैं नहीं बता सकता। बहुत-सी

आत्माओं को फिर तुम्हारे लोक में लौटना पड़ता है। ये सभी कार्य निश्चित नियम के अनुसार होते हैं, लेकिन किसके आदेश से होते हैं, यह मैं नहीं बता सकता।

फिर हमारे लोक से भी श्रेष्ठ लोक हैं। यहाँ जो लोग उन्नति करते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। मैं स्वयं जानता हूँ कि मेरे कुछ परिचित इसी प्रकार उस लोक में चले गए हैं। उनके जाने के ठीक पहले तक उन्हें भी पता नहीं था कि उन्हें वहाँ जाना पड़ेगा।

**प्रश्न।** जो लोग उच्चतर लोक में जाते हैं, क्या उन्हें फिर माता के गर्भ में जाना पड़ता है?

**उत्तर।** जिसे तुम यौन-सम्मिलन कहते हो, हमारे या उससे उच्चतर लोकों में वैसा कुछ नहीं है। हमारा शरीर सूक्ष्म परमाणुओं से बना है। हमारे इस शरीर के भीतर भी एक और अधिक सूक्ष्म शरीर होता है। जो लोग उच्चतर लोक में जाते हैं, वे उस अधिक सूक्ष्म शरीर को धारण करके चले जाते हैं। जैसे तुम हमारे शरीर को नहीं देख सकते, वैसे ही हम भी उनके उस शरीर को नहीं देख पाते।

मैंने जो कुछ कहा है, वह मैंने सुना है। वास्तविक बात क्या है, उसे मैं ठीक-ठीक नहीं समझा सकता। लेकिन यह बात पूरी

तरह सत्य है कि हमारे ऊपर भी अनेक अधिक उत्कृष्ट लोक हैं। इन विभिन्न लोकों के निवासियों के शरीर अलग-अलग प्रकार के अति सूक्ष्म पदार्थों से निर्मित होते हैं। उस शरीर को प्राप्त करने के लिए किसी को माता के गर्भ में नहीं जाना पड़ता।

हमारे लोक से उच्चतर लोक में जाने के लिए जैसे कठिन साधना करनी पड़ती है, उसी प्रकार इस उच्चतर लोक से भी और अधिक उत्कृष्ट लोक में जाने के लिए विशेष साधना आवश्यक होती है। हमारे लोक से पतन होने पर स्थूल शरीर धारण करना पड़ता है, इसलिए माता के गर्भ में जाना पड़ता है।

[पहले परिच्छेद में जो कुछ वर्णित हुआ है, वह एक चक्र में ज्ञात हुआ था। इस विषय में प्रश्नकर्ता को और भी बहुत कुछ पूछना था। लेकिन आत्मा के चले जाने के कारण यह विवरण यहीं समाप्त हो गया। इस चक्र के लगभग डेढ़ माह बाद यह आत्मा फिर उपस्थित हुई। तब प्रश्नकर्ता ने पुनः इस प्रसंग को उठाया।]

**प्रश्न।** आपने पहले एक दिन कहा था कि जो पुण्यात्माएँ यहाँ से उस पार जाती हैं, अथवा जो वहाँ जाकर उन्नति करती हैं, उन्हें फिर स्थूल शरीर धारण करके इस लोक में या किसी अन्य

निम्नतर जगत में नहीं जाना पड़ता। यदि यह बात सत्य है, तो हमारे इस संसार में जो प्रति क्षण सैकड़ों मनुष्य जन्म लेते रहते हैं, वे कहाँ से आते हैं?

**उत्तर।** उन्नति करने पर आत्मा को फिर स्थूल शरीर धारण नहीं करना पड़ता—यह मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ, क्योंकि मैं यह जानता हूँ। लेकिन तुम्हारे लोक में जन्म लेने के विषय में मैंने अपने लोक में जो कुछ सुना है, वह तुम्हें बता रहा हूँ।

तुम्हारे सूर्य को घेरकर जिस प्रकार तुम्हारी पृथ्वी है, उसी प्रकार इस विश्व में सैकड़ों सूर्य और लाखों पृथ्वियाँ हैं। इन सभी पृथ्वियों में लगभग हर जगह स्थूल शरीरधारी जीव रहते हैं। जहाँ तक मैं जानता हूँ, इन जीवों में अधिकांश तुम्हारे संसार के मनुष्यों की अपेक्षा हर विषय में निम्न स्तर के हैं।

उन्नति और अवनति के अनुसार तुम्हारी पृथ्वी और इन सभी जगतों के बीच जीवों का आवागमन होता रहता है। हमारे लोक से भी बहुत-से लोगों को तुम्हारी पृथ्वी या इन अन्य जगतों में जाकर जन्म लेना पड़ता है।

हालाँकि यह बात पूर्णतः सत्य है कि तुम्हारे लोक में ऐसे बहुत-से मनुष्य हैं, जो इससे पहले कभी इस लोक में नहीं आए थे। यह सृष्टि किस प्रकार चल रही है, इसे हमारे लोक में भी शायद

कोई स्पष्ट रूप से नहीं जानता। जिस शक्ति ने इस विश्व-संसार की रचना की है, उसके अतिरिक्त शायद किसी लोक का कोई जीव उसके सृष्टि-रहस्य को पूरी तरह नहीं समझ सकता। लेकिन यह सत्य है कि हमसे अधिक उन्नत लोकों की आत्माओं ने इस रहस्य को कुछ हद तक समझ लिया है।

**प्रश्न।** मनुष्य की सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक करोड़ों-करोड़ों मनुष्यों ने शरीर त्यागा है। क्या इन सभी की आत्माएँ उस पार चली गई हैं? यदि ऐसा है, तो आपका लोक तो पूरी तरह भर गया होगा। इतनी आत्माओं के लिए वहाँ स्थान कैसे हो सकता है?

**उत्तर।** *(जोर से हँसने के बाद)* तुम्हारे जैसे व्यक्ति के मुँह से यह प्रश्न निकलने के बजाय यदि किसी बच्चे के मुँह से निकलता, तो...

शायद ठीक ही होता! मृत्यु के बाद आत्मा जिस लोक में जाती है, वह कितने स्तरों में विभाजित है, यह मैं नहीं जानता। लेकिन यह बात मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि कोई भी आत्मा सदा एक ही लोक में और एक ही अवस्था में नहीं रह सकती। उसे या तो उन्नति करके उच्चतर स्तर (लोक) में जाना होगा, अथवा नीचे उतरकर फिर स्थूल शरीर धारण करना होगा।

हमारे ऊपर जैसे अनेक उच्चतर लोक हैं, वैसे ही हमारे ठीक नीचे तुम्हारा लोक है और उसके नीचे उससे भी अधिक अधम लोक हैं। आत्मा को अपने-अपने कर्म के अनुसार क्रमशः ऊपर चढ़ना या नीचे उतरना पड़ता है।

**प्रश्न।** क्या आपको ऐसी किसी आत्मा का साक्षात्कार हुआ है, जिसने ईश्वर के सम्बन्ध में सही जानकारी प्राप्त की हो?

**उत्तर।** देखो, तुम्हारे संसार में लोग जिस प्रकार ईश्वर के विषय में विचार-विमर्श या तर्क-वितर्क करते हैं और कभी-कभी उसके लिए रक्त की नदियाँ बहा देते हैं, हमारे यहाँ ऐसा बिल्कुल नहीं होता। ईश्वर हैं या नहीं, यदि हैं तो साकार हैं या निराकार—इन बातों पर कोई तनिक भी समय व्यर्थ नहीं करता।

यहाँ सभी अपने-अपने आत्मिक विकास में ही व्यस्त रहते हैं। उस पार जिन्हें तुम साधारण मनुष्य कहते हो, उनकी आत्माएँ यहाँ सदैव आत्मोन्नति के कार्य में लगी रहती हैं। इतना हम जानते हैं कि ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का निर्धारण करना हमारी सामर्थ्य से परे है। इसलिए इस विषय में हम बिल्कुल विचार नहीं करते।

ईश्वर कहने से हम किसी जीव की कल्पना नहीं करते। इस स्थूल शरीरमय अनन्त जगत के प्रत्येक अणु-परमाणु में एक

शक्ति विद्‌यमान है। इसी विशाल शक्ति के बल से सूक्ष्म परमाणु से लेकर यह विशाल जगत संचालित हो रहा है। इसी शक्ति को हम “ईश्वर” कहते हैं।

जब यह एक शक्ति है और अनन्त जगत में व्याप्त है, तब तुम्हारे और मेरे जैसे जीवों के लिए इस शक्ति को पूर्णतः जान पाना असम्भव है। अनन्त हुए बिना कोई अनन्त को कैसे समझ सकता है?

**तीसरा परिच्छेद**

[इस परिच्छेद में जो कुछ वर्णित हुआ है, वह हमें दो चक्रों से ज्ञात हुआ है। समझने में सुविधा होगी, इसलिए हमने उसे एक ही परिच्छेद में वर्णित किया है।]

**प्रश्न।** सुना है कि वहाँ जन्म लेने का कोई झंझट नहीं है। यदि यह सत्य है, तो ऐसा लगता है कि वहाँ नर-नारी का भेद नहीं है।

**उत्तर।** तुम्हारे जैसे व्यक्ति के मुँह से यह बात! क्या तुम समझते हो कि पुरुष की एक प्राकृतिक इच्छा पूरी करने के अतिरिक्त स्त्री का और कोई काम नहीं है? क्या स्त्री केवल पुत्र-

कन्या को जन्म देने की एक मशीन है? यह कैसी विचित्र धारणा है! सच्ची बात इसके बिल्कुल विपरीत है।

तुम लोग शिक्षित हो, इसलिए यह अवश्य जानते हो कि एक महान शक्ति सम्पूर्ण विश्व-संसार में व्याप्त है और उसी के बल से सारा संसार चल रहा है। यदि यह महाशक्ति न होती, तो समस्त संसार निष्क्रिय होकर रह जाता।

मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि समस्त प्राणी-जगत में स्त्री-जाति ही इस महाशक्ति का जीवंत विकास है। यदि इस प्राणी-जगत से स्त्री को हटा दिया जाए, तो सारा संसार निष्क्रिय हो जाएगा। स्त्री-जाति के अस्तित्व के कारण ही पुरुष के भीतर कर्म करने की प्रेरणा जागृत होती है।

हमारे पास स्थूल शरीर नहीं है; इसलिए यहाँ नर-नारी के शरीर का मिलन असम्भव है। लेकिन नर-नारी की आत्माओं का मिलन यहाँ भी होता है। जैसे तुम्हारे लोक में स्त्री के अभाव में पुरुष शक्तिहीन और कर्महीन हो जाता है, हमारे यहाँ भी ठीक वैसा ही है।

**प्रश्न।** यदि आपकी बात सत्य है, तो यह कहना होगा कि जो लोग आजीवन ब्रह्मचारी रहते हैं या जो स्त्रियों के सम्पर्क से दूर रहते हैं, उनकी उन्नति असम्भव है। ऐसा होने पर तो

भगवान बुद्ध, शंकराचार्य, चैतन्य, रामकृष्ण आदि महापुरुष—जिन्हें बंगाल के लोग अवतार मानते हैं—बहुत ही साधारण व्यक्ति थे। क्योंकि ये सभी स्त्रियों से सदैव दूर रहते थे।

**उत्तर।** तुम्हारी धारणा पूरी तरह गलत है। तुमने जिनके नाम लिए, वे सभी महापुरुष थे। उन्होंने शक्ति का तिरस्कार नहीं किया, बल्कि यौन-सम्मिलन से घृणा की। वे सभी शक्ति के उपासक थे। उनकी सारी साधना शक्ति प्राप्त करने के लिए थी।

क्या स्त्री के साथ शारीरिक मिलन न होने पर शक्ति की उपासना नहीं हो सकती? हमारे यहाँ यौन-सम्मिलन नहीं है, लेकिन हम सभी शक्ति की उपासना कर रहे हैं—अर्थात् उच्चतर शक्ति प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

तुमने जिन महापुरुषों के नाम लिए, वे स्थूल शरीर धारण करते हुए भी शरीर के विषय में तनिक भी विचार नहीं करते थे। वे केवल आत्मा के विषय में चिंतन करते थे।

ठीक है—आपके दिए हुए बंगला पाठ का हिंदी अनुवाद:

हमारा स्थूल शरीर नहीं है; इसलिए यहाँ नर-नारी के शरीर का मिलन असंभव है। लेकिन नर-नारी की आत्माओं का मिलन

यहाँ भी होता है। जैसे तुम्हारी दुनिया में स्त्री के न रहने पर पुरुष शक्तिहीन और कर्महीन हो जाता है, हमारे यहाँ भी ठीक ऐसा ही होता है।

**प्रश्न।** यदि आपकी बात सत्य है, तो कहना पड़ेगा कि जो लोग चिरकुमार रहते हैं अथवा जो स्त्रियों के संसर्ग से दूर रहते हैं, उनका विकास असंभव है। ऐसा होने पर तो कहना पड़ेगा कि भगवान बुद्ध, शंकराचार्य, चैतन्य, रामकृष्ण आदि महापुरुष— जिन्हें बंगाल के लोग अवतार मानते हैं—बहुत ही साधारण लोग थे; क्योंकि ये सभी स्त्रियों से सदैव दूर रहते थे।

**उत्तर।** तुम्हारी धारणा बिल्कुल गलत है। जिन लोगों के नाम तुमने लिये, वे सभी महापुरुष थे। उन्होंने शक्ति को नहीं छोड़ा था, बल्कि वे यौन-संबंध से घृणा करते थे। वे सभी शक्ति के उपासक थे। उनकी सारी साधना शक्ति-प्राप्ति के लिए थी। क्या स्त्री के साथ शारीरिक मिलन न होने पर शक्ति की उपासना नहीं हो सकती? हमारे यहाँ यौन-संबंध नहीं है, लेकिन हम सभी शक्ति की उपासना कर रहे हैं—अर्थात् उच्चतर शक्ति प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

तुमने जिन लोगों के नाम लिये, वे स्थूल शरीर धारण करके भी शरीर के विषय में तनिक भी चिंतित नहीं रहते थे। वे सदैव

आत्मा के चिंतन में मग्न रहते थे। इसलिए स्थूल शरीर वाली स्त्री की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं थी।

**प्रश्न।** अच्छा, क्या वहाँ पति-पत्नी का फिर से मिलन होता है?

**उत्तर।** होता है, अवश्य! लेकिन हर मामले में नहीं। तुम्हारी दुनिया में यदि उनके बीच वास्तविक आत्मिक मिलन हुआ हो, तभी यहाँ उनका पुनः मिलन होता है। लेकिन मेरे विचार से इस प्रकार का आत्मिक मिलन बहुत कम होता है; क्योंकि यहाँ प्रायः ऐसा देखता हूँ कि वहाँ के पति और पत्नी यहाँ आकर नई-नई आत्माओं के साथ मिल जाते हैं। इससे बहुत स्पष्ट रूप से लगता है कि वहाँ पति-पत्नी के बीच शारीरिक संबंध के अतिरिक्त कोई विशेष संबंध नहीं रहता। यहाँ आकर नर-नारी के बीच जो संबंध बनता है, वह अधिक स्थायी होता है; क्योंकि उनके बीच शरीर या स्वार्थ का कोई संबंध नहीं रहता।

लेकिन एक बात मुझे अवश्य स्वीकार करनी होगी। हिंदू और मुसलमान पति-पत्नी अपने शरीर त्यागने के बाद जिस मात्रा में यहाँ आकर मिलते हैं, पश्चिमी देशों के दंपतियों में ऐसा मिलन उससे बहुत कम होता है। और एक नई बात तुम्हें बताऊँ। तीस-चालीस वर्ष पहले हिंदू पति-पत्नी प्रायः यहाँ आकर मिलते थे। लेकिन अब यह संख्या बहुत कम हो गई है।

**प्रश्न।** इसका कारण क्या है?

**उत्तर।** तुम्हारे यहाँ अब कम उम्र में लड़कियों का विवाह बंद हो गया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि पति-पत्नी के बीच आजकल भले ही शारीरिक संबंध होता है, लेकिन मन का मिलन बिल्कुल नहीं होता। लड़की जब छोटी उम्र में विवाहित होती थी, तब वह अपने को पति के मन के अनुरूप ढाल लेती थी। धीरे-धीरे वह पति की छाया के समान हो जाती थी। पत्नी के इस व्यवहार से, पति चाहे जिस स्वभाव का हो, धीरे-धीरे वह पत्नी के साथ एकात्म हो जाता था।

अब पत्नी अपने मायके में ही अपना स्वभाव बना लेती है। यह स्वभाव प्रायः पति के स्वभाव के साथ मेल नहीं खाता। जब तक युवावस्था रहती है, पति-पत्नी के बीच प्रायः कोई विशेष विवाद नहीं होता। लेकिन उसके बाद जो होता है, वह शायद तुम सभी जानते हो। संसार में प्रायः शांति नहीं रहती—कलह और विवाद लगे ही रहते हैं। ऐसी अवस्था में तुम क्या आशा करते हो कि वे यहाँ आकर फिर से एक-दूसरे से मिलना चाहेंगे?

**प्रश्न।** हो सकता है कि आजकल कम उम्र में विवाह होने के कारण पत्नी पति की दासी बनकर नहीं रहना चाहती। लेकिन

पत्नी जब समझदार और वयस्क होती है, तो वह समान अधिकार की माँग क्यों न करे?

**उत्तर।** तुम्हारे माता-पिता अभी जीवित हैं। सच-सच बताओ, तुम्हारे घर में तुम्हारी माँ क्या दासी है? घर के सारे अधिकार किसके हाथ में हैं?

**प्रश्न।** निश्चय ही माँ के हाथ में। हमारे घर में माँ...

वे दासी की तरह नहीं रहतीं। घर-गृहस्थी के किसी भी मामले में पिता हस्तक्षेप नहीं करते। और यदि पिता हस्तक्षेप करने जाएँ, तो भी उनकी बात नहीं चलती।

**उत्तर।** तुम्हारे परिवार में माँ का जो अधिकार और स्थान है, लगभग अधिकांश स्थानों पर पहले भी यही व्यवस्था थी। छोटी लड़की अपने पति के घर-परिवार में स्वयं को पूरी तरह मिला देती थी, इसलिए परिवार भी उसे अपने साथ मजबूती से जोड़ लेता था। इसे दासी होना नहीं कहते।

पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त करके तुम लोग स्त्री और पुरुष को समान अधिकार देना चाहते हो। लेकिन यह प्रकृति के विरुद्‌ध है, इस बात पर तुम बिल्कुल विचार नहीं करते। स्त्री जाति चाहे जितनी शिक्षित हो जाए, उसे पुरुष के अधीन रहना ही होगा।

भगवान ने स्त्री को इस प्रकार बनाया है कि उसे एक रक्षक की आवश्यकता होती है। यदि पुरुष द्वारा उसकी रक्षा न की जाए, तो वह एक क्षण भी टिक नहीं सकती। तुम इसे मानते हो या नहीं, मैं नहीं जानता; लेकिन यह पूर्ण सत्य है। तुम्हारी दुनिया में कीट, पतंग, पशु आदि सभी के बीच स्त्री जाति पुरुष द्वारा संरक्षित रहती है। यहाँ भी यही नियम है।

तुम लोग केवल अपनी शारीरिक शक्ति के बल पर स्त्रियों को जो अधिकार दे रहे हो, उसका परिणाम देखकर ही समझोगे कि भविष्य में तुम्हारे समाज में किस प्रकार की अव्यवस्था उत्पन्न होती है। जिसे तुम **'संसार-सुख'** कहते हो, वह फिर नहीं रहेगा।

**चतुर्थ परिच्छेद**

**प्रश्न।** मृत्यु से ठीक पहले मनुष्य की क्या अवस्था होती है, यह थोड़ा समझा सकते हैं?

**उत्तर।** तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। यह ऐसी बात है, जिसके विषय में वहाँ के अधिकांश लोग बहुत अनजान हैं। शायद मैं इस विषय को अच्छी तरह समझा सकूँ; क्योंकि वहाँ की कुछ आत्माओं के स्थूल शरीर त्यागने के समय मैं स्वयं उपस्थित था।

यह संपूर्ण विश्व-ब्रह्मांड परमाणुओं के समूह से बना है। इन परमाणुओं का वास्तविक स्वरूप इतना सूक्ष्म है कि तुम्हारी दुनिया के अत्यंत उत्कृष्ट सूक्ष्मदर्शी की सहायता से भी उन्हें देखा नहीं जा सकता। यदि रेत के एक कण को सौ भागों में बाँट दिया जाए, तब भी उसका एक भाग परमाणु के एक कण से बहुत बड़ा होगा। तुम्हारी दुनिया के मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट आदि के शरीर और सभी जड़ पदार्थ इसी प्रकार के परमाणुओं के समूह से बने हैं।

ये परमाणु भी दो प्रकार के होते हैं—स्थूल और सूक्ष्म। (हालाँकि सूक्ष्म परमाणु भी सूक्ष्मतर परमाणुओं के समूह से बने होते हैं।) तुम्हारा शरीर स्थूल परमाणुओं से बना है, इसलिए यह अग्नि, वायु आदि के द्वारा आसानी से नष्ट हो जाता है। तुम्हारा मन और...

लेकिन मन और आत्मा सूक्ष्म परमाणुओं के समूह से बने होने के कारण उन्हें तुम्हारी दुनिया की किसी भी वस्तु द्वारा नष्ट नहीं किया जा सकता। हमारे संसार में भी उन्हें नष्ट करने वाला कोई पदार्थ है, ऐसा मुझे ज्ञात नहीं है।

तुम्हारे स्थूल शरीर के भीतर अत्यंत सूक्ष्म परमाणुओं से निर्मित एक दूसरा शरीर और मन भी है। मृत्यु से ठीक पहले

यह सूक्ष्म शरीर और मन स्थूल शरीर से धीरे-धीरे बाहर निकलने लगते हैं। चूँकि यह ब्रह्मरंध्र के मार्ग से बाहर निकलता है, इसलिए मरने वाले मनुष्य के पैर की उँगलियों से शरीर धीरे-धीरे ठंडा होने लगता है (अर्थात् सामान्य भाषा में "प्राणहीन" होने लगता है)। जब यह सूक्ष्म शरीर और मन आधा बाहर निकल जाता है, तब शरीर का निचला आधा भाग प्राणहीन हो जाता है। जब मन सहित यह सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से पूरी तरह मुक्त हो जाता है, तभी मनुष्य की "मृत्यु" होती है।

**प्रश्न।** जो शरीर बाहर निकलता है, क्या उसका कोई रूप होता है?

**उत्तर।** यह बहुत कठिन प्रश्न है। मैंने स्वयं जो देखा है, वही बताऊँगा—तुम्हारे प्रश्न का शायद सही उत्तर न दे पाऊँ। मृत्यु से ठीक पहले मनुष्य के स्थूल शरीर से एक सूक्ष्म आकृति बाहर निकलती है। यह बिल्कुल मरने वाले मनुष्य के समान होती है। इसके दो प्रमुख अंतर हैं—(१) यह सूक्ष्म परमाणुओं से बनी होने के कारण शून्य में स्वतंत्र रूप से विचरण कर सकती है। (२) मृत व्यक्ति के स्थूल शरीर में रोग या चोट आदि के जो चिह्न रहते हैं, वे इस सूक्ष्म शरीर में बिल्कुल दिखाई नहीं देते।

हम यहाँ इसी सूक्ष्म शरीर के साथ विचरण करते हैं। यही सूक्ष्म शरीर आत्मा है। इसके भीतर और भी सूक्ष्म पदार्थ से निर्मित कुछ है, जिसे "आत्मा" कहा जाता है या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। मेरा विश्वास है कि हमारे लोक में शायद कोई भी इस बात को निश्चित रूप से नहीं जानता।

लेकिन हमारे इस सूक्ष्म शरीर में एक ऐसी शक्ति है जिसके द्‌वारा हम चिंतन, अनुभूति आदि का कार्य करते हैं, और इसी शक्ति को हम "मन" कहते हैं। शायद यही शक्ति और आत्मा एक ही पदार्थ हैं। यही बात मुझे सबसे अधिक संभव लगती है। मेरा विश्वास है कि हमारी यह शक्ति उस विश्वव्यापी महाशक्ति का ही एक अंश है। यदि यह सत्य है, तो **मन ही भगवान है।**

**प्रश्न।** स्थूल शरीर से मृत्यु के समय जो सूक्ष्म आकृति बाहर निकलती है, क्या वह बाहर निकलते ही चली जाती है, या स्थूल शरीर के पास ही रहती है?

**उत्तर।** प्रायः आत्मा के देहत्याग के समय हमारे लोक की आत्माएँ उपस्थित रहती हैं और वे इस नवागत आत्मा को उसके स्थूल शरीर से दूर ले जाने का प्रयास करती हैं। लेकिन अधिकांश स्थानों पर वे सफल नहीं होतीं।

मनुष्य के स्थूल शरीर को त्यागने के बाद उसका मन ठीक उसी अवस्था में रहता है, जिस अवस्था में वह स्थूल शरीर के भीतर था। उसकी पत्नी, पुत्र, पुत्री, रिश्तेदार, आहार, विहार आदि के प्रति उसका आकर्षण बिल्कुल वैसा ही...

वह उसी प्रकार रहता है, जैसा स्थूल शरीर त्यागने से पहले था। इसीलिए यह नया सूक्ष्म शरीर धारण करने वाली आत्मा अपने इतने पुराने निवास-स्थान को छोड़कर जाना नहीं चाहती। कई बार मैंने देखा है—हमारे संसार की यह नवागत आत्मा बहुत दिनों तक मृत्युलोक में घूमती-फिरती रहती है; किसी भी प्रकार मोह को छोड़ नहीं पाती। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि शरीर त्यागने के बाद आत्मा समझ ही नहीं पाती कि उसका स्थूल शरीर नहीं रहा (अर्थात् उसकी मृत्यु हो चुकी है)। जब वह अपने घर में अपने मित्रों और संबंधियों को रोते-विलाप करते देखती है, तब उन्हें सांत्वना देने जाती है, उनसे बहुत कुछ कहने का प्रयास करती है। लेकिन तुम उसकी बातें सुन नहीं सकते।

बहुत-सी आत्माएँ शरीर त्यागने की बात जान लेने के बाद भी इस संसार में घूमती-फिरती रहती हैं—वे अपना मोह नहीं छोड़ पातीं।

## पंचम परिच्छेद

**प्रश्न।** जो लोग अनेक प्रकार के गंभीर पाप करके उस पार जाते हैं, क्या उनके लिए नरक की कोई व्यवस्था है?

**उत्तर।** उस पार नरक नाम का कोई विशेष स्थान नहीं है। तुम्हारी दुनिया में उस पार के नरक के संबंध में जो कहानियाँ प्रचलित हैं, वे काल्पनिक हैं। लेकिन नरक की यातना इस पार भी होती है—यह मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ।

जिन लोगों की आत्माएँ अनेक प्रकार के अन्याय और पापपूर्ण कार्य करके कलुषित हो गई हैं, उनके मन में उन सभी कार्यों के विचार सदैव उपस्थित रहते हैं और उन्हें जो यातना देते हैं, वह किसी काल्पनिक नरक से कम नहीं है। जिन स्थानों पर उन्होंने पापपूर्ण कार्य किए थे, वे उन्हीं स्थानों के आसपास घूमते-फिरते रहते हैं और प्रायः उन कार्यों का पुनः अभिनय देखते हैं।

जिसने हत्या की है, वह हमेशा देखता रहता है कि वह हत्या कर रहा है। लेकिन यदि उसके मन में किए हुए कर्म के लिए सच्चा पश्चात्ताप उत्पन्न हो, तो धीरे-धीरे इस यातना की तीव्रता कम होती जाती है।

एक बात सदैव याद रखो—यहाँ पतित आत्माओं के उद्धार और उन्नति के लिए अनेक प्रकार के उपाय हैं।

**प्रश्न।** यदि दूषित आत्मा को सुधारने का प्रयास विफल हो जाए, तो क्या होता है?

**उत्तर।** इस प्रकार की आत्मा अचानक एक दिन अदृश्य हो जाती है। इनमें से कुछ फिर तुम्हारी दुनिया में लौट जाती हैं, और कुछ इससे भी निम्नतर लोक में चली जाती हैं।

**प्रश्न।** इस प्रकार के निम्नतर लोक को क्या आपने कभी देखा है?

**उत्तर।** तुम लोग कभी-कभी ऐसे प्रश्न करते हो कि हमें बहुत दुःख होता है—तुम अपने संसार के अतिरिक्त दूसरे संसारों के विषय में कितने अनजान हो! इस विश्व में शायद लाखों लोक हैं। यह हम अच्छी तरह जानते हैं कि इन लोकों में से बहुतों में स्थूल शरीरधारी जीव रहते हैं।

इन लोकों के जीवों को देखने के लिए वहाँ के जीव जिस पदार्थ से बने हैं, स्वयं को भी उसी प्रकार का बनाना पड़ता है। ऐसा न करने पर हम सूक्ष्म शरीरधारी उन्हें देख नहीं सकते। तुम्हारी इस दुनिया की ही बात लो। जब तक हम माध्यम से शक्ति ग्रहण नहीं करते, तब तक हम तुम्हें देख नहीं सकते और न ही तुम्हारी बातें समझ सकते हैं। सूक्ष्म शरीरधारी लोकों में भी यही

नियम है। हमारे ऊपर जो लोक हैं, उनके निवासी अत्यंत सूक्ष्म परमाणुओं से बने हैं। इसलिए हम उन्हें देख नहीं सकते।

**प्रश्न।** जिसे हम "भूत" कहते हैं, क्या वह वास्तव में अस्तित्व में है, या यह केवल हमारी कल्पना है?

**पंचम परिच्छेद**

**उत्तर।** यदि यह केवल कल्पना होती, तो इसकी चर्चा तुम्हारी दुनिया के हर स्थान पर, सभ्य और असभ्य सभी लोगों के बीच, सुनाई नहीं देती। तुम्हारे स्थूल संसार में ऐसा कोई देश नहीं है, ऐसी कोई जाति नहीं है, जिसके बीच भूतों के अस्तित्व में विश्वास न पाया जाता हो।

जो जीव तुम्हारी दुनिया से अत्यंत तीव्र अतृप्त आकांक्षाएँ लेकर शरीर त्यागते हैं, वे यहाँ आकर अपनी अतृप्त इच्छाओं की प्रेरणा से सदैव तुम्हारी दुनिया में घूमते रहते हैं। अवसर मिलने पर उनमें से कुछ दुर्बल मन वाले मनुष्यों के शरीर को अपना आश्रय बना लेते हैं। कभी-कभी वे विकृत स्थूल शरीर धारण करके दिखाई भी देते हैं।

**प्रश्न।** क्या आप जानते हैं कि ये आत्माएँ वहाँ स्थूल शरीर धारण करके दूसरों के शरीर में प्रवेश कैसे करती हैं?

**उत्तर।** नहीं। इस प्रकार की आत्माओं के लिए उस पार एक अलग वर्ग है। इस वर्ग में ही ऐसी निकृष्ट विद्याएँ प्रचलित हैं। हम इस प्रकार की विद्या को अत्यंत घृणित मानते हैं।

**प्रश्न।** अच्छा, यह जो माध्यम की सहायता से आप हमारे पास आते हैं, बातचीत करते हैं और कभी-कभी शरीर धारण करके दिखाई देते हैं—क्या यह आपको सीखना पड़ता है, या उस पार की सभी आत्माएँ ऐसा कर सकती हैं?

**उत्तर।** यह सीखना पड़ता है। उस पार की बहुत कम आत्माएँ ही यह कर सकती हैं। लेकिन यह भी जान लो कि तुम्हारी दुनिया में आकर बातचीत करना बहुत कठिन काम नहीं है। किंतु शरीर धारण करने के लिए कठिन साधना करनी पड़ती है।

**षष्ठ परिच्छेद**

**प्रश्न।** अच्छा, क्या उस पार आप लोग भी हमारी तरह घर बनाकर रहते हैं?

**उत्तर।** जब हम शरीरधारी थे, तब हमारे रहने के लिए आश्रय की आवश्यकता होती थी, यह तो स्वाभाविक है। लेकिन तुम लोग जैसे अलग-अलग गृहस्थ अलग-अलग घरों में रहते हो, यहाँ

ऐसी व्यवस्था नहीं है। यहाँ समान स्वभाव वाली अनेक आत्माएँ एक साथ रहती हैं।

जो लोग इस प्रकार एक साथ रहते हैं, उनके बीच इतना मेल होता है, जो तुम्हारी दुनिया में असंभव है। इसका कारण यह है कि हमारे बीच सामान्यतः द्‌वेष, हिंसा, परश्रीकातरता आदि लगभग नहीं होती। हमारे शरीर सूक्ष्म होने के कारण हम एक-दूसरे के मन के भावों को बहुत स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। हमारे बीच निम्न भावनाएँ न होने का यह भी एक कारण है।

हमारे इस लोक में अतृप्त इच्छाओं वाली अथवा कलुषित मन वाली जो आत्माएँ हैं, वे एक साथ नहीं रहतीं। वे किस प्रकार या कहाँ रहती हैं, यह मैं ठीक से नहीं जानता। क्योंकि इन विषयों को जानने का मैंने कभी प्रयास नहीं किया।

हमारे बीच ऐसी आत्माएँ भी हैं जो इन पतित आत्माओं के पास जाकर उन्हें उन्नत मार्ग पर लाने का प्रयास करती हैं। मैंने सुना है कि इनमें से जिन्हें...

**प्रश्न:** अच्छा, क्या आप लोग अपनी इच्छा के अनुसार जहाँ-तहाँ जा सकते हैं?

**उत्तर:** जब हमारे पास स्थूल शरीर ही नहीं है, तब अपनी इच्छा के अनुसार आने-जाने में बाधा ही क्या है? हमारा स्थूल शरीर नहीं है, इसलिए हम जहाज़, पर्वत, प्राचीर आदि को आसानी से पार करके जा सकते हैं। कुछ दिन पहले शायद तुम लोग मेरी एक बात ठीक से समझ नहीं पाते। तुम शायद सोचते—हम चाहे कितने ही सूक्ष्म क्यों न हों, फिर भी ठोस पदार्थ के भीतर से होकर जाना हमारे लिए असम्भव है। लेकिन एक्स-रे की खोज हो जाने के कारण हमारे लिए बिना किसी बाधा के आने-जाने की बात को समझना तुम्हारे लिए अब बहुत आसान हो गया है। जब एक्स-रे सैकड़ों आवरणों को भेदकर जा सकता है, तो हम क्यों नहीं जा सकते? एक्स-रे भी परमाणुओं के समूह से बना है और हमारे सूक्ष्म शरीर के परमाणु उससे भी अधिक सूक्ष्म हैं।

**प्रश्न:** आप लोगों के परलोक के आत्माओं में क्या फिर से हमारे इस लोक में लौटकर आने की इच्छा होती है? आप लोगों के यहाँ तो रोग-शोक नहीं है, पास होने की, नौकरी खोजने की और काम करने की झंझट नहीं है; जब जहाँ इच्छा हो घूम सकते हैं, इस विश्व के नए-नए लोकों को आसानी से देख सकते हैं। इन सब सुखों को छोड़कर कोई इस लोक में क्यों आना चाहेगा, यह मेरी समझ में नहीं आता।

**उत्तर:** तुम इस लोक में रहकर यह बात कह रहे हो। जब मनुष्य माता-पिता, पुत्र-पुत्री, संबंधी, मित्र आदि को छोड़कर इस लोक में आता है, तब वह उनके लिए अत्यन्त व्याकुल हो उठता है। यह उसके लिए एक नया देश है। यहाँ की हर वस्तु उसके लिए नई होती है। इसलिए मनुष्य यहाँ आकर प्रायः उस लोक के लिए व्याकुल हो जाता है और वहाँ के अपने परिचित तथा संबंधी लोगों के पास बार-बार जाता रहता है। लेकिन धीरे-धीरे जिन लोगों की यह भावना समाप्त हो जाती है, उन्हें फिर उस लोक में लौटने की इच्छा नहीं रहती। पर जिनका मन किसी भी तरह शांत नहीं होता, उन्हें फिर लौटना पड़ता है।

**प्रश्न:** आपने कहा है कि आपके लोक में जो आत्माएँ अपनी आत्मा की उन्नति करती हैं, वे उच्चतर लोक में चली जाती हैं। अब तक मैं अनेक चक्रों में भाग ले चुका हूँ, लेकिन ऐसा लगता है कि मैंने कभी किसी उच्चतर लोक के निवासी आत्मा का साक्षात् अनुभव नहीं किया। इसका कारण क्या है?

**उत्तर:** तुम्हारा प्रश्न अच्छा है, लेकिन इसका उत्तर मैं पहले ही दूसरे रूप में दे चुका हूँ। हमारे लोक में जब तक आत्मा का ध्यान तुम्हारे लोक की ओर रहता है—अर्थात् जब तक...

जब तक उसकी वासनाएँ समाप्त नहीं होतीं, तब तक आत्मा उच्चतर लोक में नहीं जा सकती। जब वह ऊपर की ओर चली जाती है, तब समझना चाहिए कि वह तुम्हारे स्थूल जगत के विचारों से मुक्त हो गई है। ऐसी अवस्था में वह फिर तुम्हारे जगत में क्यों आएगी?

हाँ, कभी-कभी इस नियम का उल्लंघन भी होता है। तुम्हारे लोक का जो जीव संसार के बंधनों से मुक्त होकर वासनाओं आदि का त्याग करने में समर्थ हो गया है, उसे कभी-कभी उच्चतर लोक की आत्माएँ आकर दर्शन देती हैं। तुम्हारे रामकृष्ण परमहंसदेव, विजय गोस्वामी, स्वामी विवेकानंद आदि को इस प्रकार के दर्शन प्राप्त होते थे।

मैं जानता हूँ—प्राचीन काल में तुम्हारे देश के लोग प्रायः धर्म के मार्ग पर रहते थे। वे द्‌वेष, हिंसा, कलह, झूठ आदि को प्रायः त्यागकर चलते थे। इसलिए उन्हें इन उच्च आत्माओं के प्रायः दर्शन होते थे। तब तुम लोग इन्हें “देवता”, “महर्षि” आदि नामों से सम्मानित करते थे। धार्मिक ईसाई इन्हें [पाठ में शब्द अस्पष्ट है] कहते थे।

अब तुम्हारे लोक में उस प्राचीन धार्मिक भावना का लोप होने लगा है। अब धर्म नाम की वस्तु झूठ के आवरण में ढँक गई

है। यदि इसी प्रकार चलता रहा, तो वास्तविक धर्म शायद पूरी तरह लुप्त हो जाएगा। ऐसी स्थिति में उच्चतर लोक की आत्माएँ तुम्हारे लोक में क्यों आएँगी? तुम लोग दिन-प्रतिदिन जिस प्रकार जड़वादी होते जा रहे हो, उससे लगता है कि अंततः तुम हमारे लोक को ही उड़ा दोगे। आजकल प्रेततत्त्व की चर्चा चल रही है, इसलिए हम अभी तक टिके हुए हैं।

## सातवाँ परिच्छेद

**प्रश्न:** हमारे जैसे जड़-शरीर वाले जीव क्या इस पृथ्वी के बाहर भी कहीं मौजूद हैं?

**उत्तर:** यदि तुम पूछते कि क्या ठीक तुम्हारी तरह हाथ-पैर वाले जीव किसी दूसरे लोक में हैं, तो मैं इसका उत्तर नहीं दे पाता। क्योंकि इस अनंत विश्व के सभी लोकों को मैंने नहीं देखा है; इसलिए ऐसे प्रश्न का उत्तर देना मेरे लिए असम्भव होता। लेकिन तुम्हारी पृथ्वी के अतिरिक्त दूसरे स्थूल जगतों में स्थूल शरीर वाले जीव हैं—यह मैं जानता हूँ, क्योंकि मैंने उन्हें स्वयं अपनी आँखों से देखा है।

लेकिन एक बात याद रखना। हमारे लोक की सभी आत्माएँ तुम्हारी तरह हाथ-पैर वाली हैं—अर्थात् बिल्कुल तुम्हारी ही तरह। हाँ, हमारे पास स्थूल शरीर नहीं है।

**प्रश्न:** उन दूसरे जगतों के स्थूल शरीरधारी जीवों की जीवन-प्रणाली क्या हमारी तरह है?

**उत्तर:** यह सम्भव नहीं। स्थूल शरीर वाले सभी जीव-जगतों की जीवन-प्रणाली उनके निवास-जगत के प्राकृतिक नियमों पर निर्भर करती है। अलग-अलग जीव-जगतों में प्रकृति अलग-अलग प्रकार की होती है। एक सरल उदाहरण देता हूँ...

मैं तुम्हें यह बात समझाने का प्रयास करता हूँ। तुम्हारे जगत के ध्रुव प्रदेश के निवासी यदि भारत आकर रहने लगें, तो वे किसी भी प्रकार टिक नहीं सकेंगे। अथवा कोई जलचर जीव यदि स्थल पर रहना चाहे, तो वह कितनी देर जीवित रहेगा? प्रत्येक जगत के प्राकृतिक नियम अलग-अलग होते हैं। वहाँ के स्थूल शरीरधारी जीव उन्हीं नियमों के अनुसार बने होते हैं। इसलिए किसी दूसरे जगत का जीव किसी अन्य प्रकार के प्राकृतिक नियमों के बीच जाकर जीवित नहीं रह सकता।

**प्रश्न:** हमारे विज्ञानवेत्ता कहते हैं कि जो ग्रह सूर्य से बहुत दूर स्थित हैं, वे स्थूल शरीरधारी जीवों के जीवन के लिए बिल्कुल अनुकूल नहीं हैं। इनमें कुछ ग्रह निरंतर बर्फ से ढके हुए हैं, कहीं वायुमंडल ही नहीं है। दूसरी ओर, जो ग्रह सूर्य के बहुत निकट

हैं, वहाँ इतनी गर्मी है कि वहाँ कोई स्थूल शरीरधारी जीव नहीं रह सकता। इस विषय में आपका क्या मत है?

**उत्तर:** यदि तुम मेरी बात पर विश्वास करते हो, तो मैं इसे बहुत दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि उनका यह मत केवल अनुमान मात्र है; उसमें सत्य का लेशमात्र भी नहीं है। ये मूर्ख पंडित आराम-कुर्सी पर बैठकर दूसरे लोकों के विषय में जिन-जिन सिद्धांतों का प्रचार करते हैं, वे स्वयं ही अपनी बात को पूर्ण सत्य मान लेते हैं। वे एक बहुत सीधी बात नहीं समझते कि भिन्न-भिन्न लोकों के प्राकृतिक नियम भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं।

मैं तुम्हें यह बात समझाने का प्रयास करता हूँ। तुम्हारे जगत के ध्रुव प्रदेश के निवासी यदि भारत आकर रहने लगें, तो वे किसी भी प्रकार टिक नहीं सकेंगे। अथवा कोई जलचर जीव यदि स्थल पर रहना चाहे, तो वह कितनी देर जीवित रहेगा? प्रत्येक जगत के प्राकृतिक नियम अलग-अलग होते हैं। वहाँ के स्थूल शरीरधारी जीव उन्हीं नियमों के अनुसार बने होते हैं। इसलिए किसी दूसरे जगत का जीव किसी अन्य प्रकार के प्राकृतिक नियमों के बीच जाकर जीवित नहीं रह सकता।

**प्रश्न:** हमारे विज्ञानवेत्ता कहते हैं कि जो ग्रह सूर्य से बहुत दूर स्थित हैं, वे स्थूल शरीरधारी जीवों के जीवन के लिए बिल्कुल अनुकूल नहीं हैं। इनमें कुछ ग्रह निरंतर बर्फ से ढके हुए हैं, कहीं वायुमंडल ही नहीं है। दूसरी ओर, जो ग्रह सूर्य के बहुत निकट हैं, वहाँ इतनी गर्मी है कि वहाँ कोई स्थूल शरीरधारी जीव नहीं रह सकता। इस विषय में आपका क्या मत है?

**उत्तर:** यदि तुम मेरी बात पर विश्वास करते हो, तो मैं इसे बहुत दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि उनका यह मत केवल अनुमान मात्र है; उसमें सत्य का लेशमात्र भी नहीं है। ये मूर्ख पंडित आराम-कुर्सी पर बैठकर दूसरे लोकों के विषय में जिन-जिन सिद्धांतों का प्रचार करते हैं, वे स्वयं ही अपनी बात को पूर्ण सत्य मान लेते हैं। वे एक बहुत सीधी बात नहीं समझते कि भिन्न-भिन्न लोकों के प्राकृतिक नियम भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं।

जिन्हें इस विषय में कोई विश्वास नहीं है, उन्हें इस प्रकार की अशांति भोगने का कोई भय नहीं है।

**प्रश्न:** तो आप कहते हैं कि शव को दफनाने में विश्वास रखने वाले व्यक्ति का यदि दाह-संस्कार कर दिया जाए, या कब्र में विश्वास रखने वाले व्यक्ति को दफना दिया जाए, तो मानसिक

अशांति के अतिरिक्त परलोक में उसका और कोई नुकसान नहीं होता?

**उत्तर:** नहीं। लेकिन एक बात पर मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा है। तुम इतने दिनों से प्रेततत्त्व की चर्चा कर रहे हो, फिर भी अब तक तुम इस प्रकार का प्रश्न कर रहे हो! दाह-संस्कार या कब्र—यह मन का एक विश्वास मात्र है। इस विश्वास के अनुसार कार्य न होने पर मानसिक अशांति के अतिरिक्त और क्या नुकसान हो सकता है? तुम लोगों में बहुतों का विश्वास है कि इस लोक में "नरक" नाम का एक भयंकर स्थान है। परलोक के विश्वास के अनुसार कार्य न करने पर इस नरक में जाकर कठोर दंड भोगना पड़ता है—यह तुम्हारा पूर्ण भ्रम है। इस लोक में जो कुछ भी दंड भोगना पड़ता है, वह सब मन के भीतर ही...

**प्रश्न:** देखिए, एक कठिन विषय का समाधान मैं नहीं कर पा रहा हूँ। क्या आप कृपया इसे मुझे समझा देंगे?

**उत्तर:** प्रश्न सुनने से पहले तुम्हें एक बात बता देना अच्छा होगा। तुम लोगों में बहुत से लोग यह समझते हैं कि मनुष्य की आत्मा इस लोक में आते ही "सर्वज्ञ" हो जाती है। इस प्रकार की धारणा का कोई मूल्य नहीं है। हम परलोक में जिस प्रकार रहते हैं, हमारा ज्ञान, विद्या, बुद्धि आदि यहाँ आते ही अचानक

सर्वश्रेष्ठ नहीं हो जाते। हाँ, यहाँ हम एक-दूसरे के मन की बातें और देखी हुई वस्तुओं को दर्पण में दिखाई देने वाली वस्तु की तरह बहुत स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, इसलिए हमारे ज्ञान में शीघ्र-शीघ्र उन्नति होती है। अब अपना प्रश्न करो।

**प्रश्न:** जब हम इस लोक में जन्म लेते हैं, तब क्या एक निश्चित अवधि का जीवन लेकर आते हैं? अर्थात् हम कितने वर्ष जीवित रहेंगे, क्या यह जन्म लेने से पहले ही निश्चित हो जाता है? क्या यह सत्य है?

**उत्तर:** इस प्रश्न का उत्तर शायद मैं ठीक-ठीक न दे पाऊँ। फिर भी परलोक और इस लोक के अनुभव से जो समझ पाया हूँ, उसे संक्षेप में बताता हूँ। तुम्हारे देश में चरक का नाम शायद सुना होगा। हिन्दू लोग कहते हैं कि वे भारत में आयुर्वेद के जन्मदाता हैं। वे कहते हैं कि मनुष्य जन्म के समय निश्चित आयु लेकर नहीं आता। रोग, स्वास्थ्य में अनियमितता, दुर्घटना आदि के कारण मनुष्य की अकाल मृत्यु हो सकती है।

इस विषय में उन्होंने एक सुंदर उपमा दी है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन तेल से भरे दीपक के समान है। दीपक के जलते समय यदि हवा तेज गति से चलने लगे, तो तेल से भरा होने पर भी

दीपक बुझ जाता है। उसी प्रकार मनुष्य की आयु निर्धारित होने पर भी उसकी मृत्यु हो सकती है।

जिन देशों के लोग स्वास्थ्य की रक्षा...

जो लोग स्वास्थ्य-संबंधी नियमों का अच्छी तरह पालन करते हैं, उनमें अकाल मृत्यु की संख्या कम होती है। तुम्हारे देश में हिन्दू विधवाओं में अकाल मृत्यु की संख्या विवाहित स्त्रियों की अपेक्षा बहुत कम है; तुम्हारे यहाँ बच्चों की मृत्यु की संख्या साहबों के बच्चों की मृत्यु की संख्या से बहुत अधिक है। इन सब बातों से स्पष्ट समझ में आता है कि तुम लोग स्वयं ही अपनी अकाल मृत्यु के कारण बनते हो।

कई बार माता-पिता के दोष के कारण संतान रोगग्रस्त होकर जन्म लेती है। कई बार खान-पान और रहन-सहन की अनियमितता के कारण मनुष्य अकाल मृत्यु को प्राप्त होता है। यह कहना बिल्कुल गलत है कि मनुष्य पहले से ही निश्चित और दीर्घ आयु लेकर जन्म लेता है।

## द्वितीय भाग

## (अमेरिका)

## भूमिका

छुट्टी बहुत कम होने के कारण मुझे कई काम अधूरे छोड़कर इंग्लैंड भी छोड़ना पड़ा और अमेरिका जाना पड़ा। मन में यह संकल्प रहा कि जब लंबी छुट्टी मिलेगी या पेंशन लूँगा, तब एक बार फिर यहाँ आकर अपने अधूरे कामों को अच्छी तरह पूरा करूँगा।

इतने थोड़े समय में मैंने इंग्लैंड में जो सीखा और देखा है, उतना भारतवर्ष में इतने लंबे समय में भी नहीं सीख पाया था। प्रेततत्त्व की जिस प्रकार यहाँ चर्चा हो रही है और जिस तरह इस विषय में पूर्ण वैज्ञानिक पद्धति से प्रगति हुई है, वैसी प्रगति सभ्य संसार में और कहीं नहीं हुई है।

हमारे देश में जो लोग इस विषय का अध्ययन करते हैं या करना चाहते हैं, उन्हें कम-से-कम कुछ महीनों के लिए यहाँ आकर रहना चाहिए। जिन्हें इस विषय में तनिक भी विश्वास नहीं है, मेरे विचार से वे भी यहाँ आकर अपने अनुभव के बाद विश्वास करने के लिए बाध्य हो जाएँगे।

प्रसंग से कुछ अलग होते हुए भी यहाँ एक बात कहे बिना नहीं रह सकता। बचपन से लेकर आज तक मैंने इस प्रेततत्त्व के अध्ययन के लिए यथासंभव प्रयास किया है। मेरे मन में एक

दृढ़ प्रतिज्ञा थी—“यह बात सत्य है या असत्य, यह मुझे जानना ही होगा।”

मन में हमेशा यही संकल्प...

मन में यही संकल्प था, इसलिए मानो भगवान ने मुझे इंग्लैंड और अमेरिका जाने का अवसर प्रदान कर दिया। यदि यह अवसर न मिलता, तो मेरे जैसे असमर्थ व्यक्ति के लिए इंग्लैंड और अमेरिका जाना तथा वहाँ की प्रमुख संस्थाओं से सहायता प्राप्त करना कभी सम्भव न होता।

बहुत शुभ समय पर मेरा परिचय बार्ड साहब से हुआ था और जिस उद्देश्य से मैं इंग्लैंड गया था, ठीक उसी समय प्रेततत्त्व के अध्ययन के लिए बार्ड साहब जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक का इंग्लैंड आना भी हुआ।

इसी बार्ड साहब की सहायता प्राप्त करके मैं अमेरिका जाने का साहस कर सका। मेरे अमेरिका पहुँचने के लगभग दो सप्ताह बाद बार्ड साहब भी अमेरिका पहुँचे।

यहाँ एक बात का उल्लेख करना अत्यन्त आवश्यक समझता हूँ। बहुत से लोगों ने मुझसे पूछा है कि प्रेतात्माओं को बुलाने के

लिए हमें माध्यम (मीडियम) की सहायता क्यों लेनी पड़ती है? इसका उत्तर मैं यथासम्भव संक्षेप में यहाँ लिख रहा हूँ।

हमारी आत्मा अमर है। स्थूल शरीर की मृत्यु होते ही यह आत्मा शरीर को छोड़कर बाहर निकल आती है। उस समय उसका शरीर ठीक स्थूल शरीर की मूर्ति के समान होता है। स्थूल शरीर की मृत्यु से पहले आत्मा की यह नई आकृति स्थूल शरीर के भीतर से बाहर निकलती है, अथवा बाहर निकलने के बाद यह आकृति धारण करती है—यह बात हम आज तक ठीक-ठीक नहीं जान सके हैं।

लेकिन इस विषय में हमारे प्राचीन हिन्दू शास्त्रों का मत विशेष रूप से तर्कसंगत प्रतीत होता है। उनके अनुसार हम अर्थात् स्थूल शरीरधारी आत्माएँ **क्षिति (मिट्टी), अप् (जल), तेज, मरुत (वायु) और व्योम (आकाश)**—इन पाँच तत्वों से निर्मित हैं।

मृत्यु के बाद स्थूल शरीर में मिट्टी और जल रह जाते हैं, जबकि आत्मा शेष तीन तत्वों से निर्मित शरीर लेकर स्थूल शरीर से अलग हो जाती है। आत्मा का शरीर तेज, वायु और आकाश से निर्मित होने के कारण हम उसे स्थूल जगत में देख नहीं पाते।

अब प्रश्न उठ सकता है—"आकाश नाम की वस्तु क्या है?"

आज विज्ञान की सहायता से इसका उत्तर बहुत सरल हो गया है। आकाश क्या है, इस विषय में पहले मतभेद था। अब, ऐसा कहा जाता है कि आकाश ईथर नामक एक प्रकार के अदृश्य पदार्थ से बना है।

तो हमें कहना होगा कि आत्मा तीन अदृश्य पदार्थों से बनी है— **तेज, ईथर और वायु**। स्थूल शरीर से ये तीनों पदार्थ निकल जाते हैं, तभी शरीर की मृत्यु होती है। आत्मा जिन तीन पदार्थों को लेकर चली जाती है, वे सभी अदृश्य हैं; इसलिए आत्मा भी अदृश्य है।

यदि किसी प्रकार आत्मा फिर किसी देहधारी व्यक्ति से मिट्टी और जल अपने इस अदृश्य शरीर में पुनः ग्रहण कर सके, तो यह अदृश्य आत्मा फिर से दिखाई दे सकती है।

इस विषय में एक और बात का उल्लेख करना शायद अप्रासंगिक नहीं होगा। हमारे देश में योगशास्त्र में निपुण ऐसे लोग हैं और रहे हैं, जो जीवित अवस्था में आत्मा को शरीर से बाहर निकालकर उससे इच्छानुसार कार्य करवा चुके हैं और उसे वापस भी ला चुके हैं। इस प्रकार की कुछ घटनाओं का मैंने अपनी पुस्तक **"मृत्यु के बाद"** में विस्तार से वर्णन किया है। संयुक्त प्रांत के गोरखपुर के प्रसिद्ध योगी बाबा गोरक्षनाथ और

महापुरुष विजय गोस्वामी में यह शक्ति थी—यह मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है। जब योगबल से हम आत्मा को जीवित शरीर से अलग कर सकते हैं, तब परलोकगत आत्मा का फिर से जीवित शरीर में लौट आना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

अब बातों-बातों में मैं वास्तविक विषय से बहुत दूर चला गया हूँ। अब फिर उसी विषय पर लौटता हूँ।

यदि परलोकगत आत्मा फिर से हमारे सामने प्रकट होना चाहे, तो उसे किसी जीवित शरीर से मिट्टी और जल ग्रहण करना पड़ता है। क्योंकि इन दोनों तत्वों से संबंध टूट जाने के कारण ही आत्मा को जीवित शरीर छोड़कर जाना पड़ा था; अर्थात् हमारी दृष्टि से उसकी मृत्यु हुई थी।

पाश्चात्य जगत में प्रेततत्त्व के इतिहास का अध्ययन करने पर हमें पता चलता है कि **1855 ई.** में इस देश के कुछ विद्वानों ने यह मत प्रकाशित किया था कि मनुष्य के मरने पर केवल शरीर का विनाश होता है, आत्मा में कोई परिवर्तन नहीं होता। आत्मा यदि प्रयास करे तो जीवित मनुष्य के शरीर से एक प्रकार का सूक्ष्म पदार्थ ग्रहण करके कुछ समय के लिए फिर इस संसार में लौट सकती है।

उस समय इस पदार्थ को अदृश्य मानकर **“एक्टोप्लाज़्म”** **(Ectoplasm)** नाम दिया गया था। विभिन्न प्रकार के अनुसंधानों के बाद यह निश्चित किया गया कि यह वास्तव में कोई शक्ति मात्र नहीं है, बल्कि एक भौतिक पदार्थ है। यह ऐसे तत्व से बना होता है जिसे विशेष प्रयास के बिना देखा नहीं जा सकता।

जब कोई परलोकगत आत्मा किसी जीवित शरीर के भीतर से इस पदार्थ को ग्रहण करती है, तब जीवित शरीर से एक अत्यंत सूक्ष्म तरंग बाहर निकलकर आत्मा के शरीर में प्रवेश करती है और उसे कुछ समय के लिए जड़ अथवा स्थूल रूप प्रदान करती है। इस पदार्थ को बाद में **“एक्टोप्लाज़्म”** नाम दिया गया। यह बाहरी पदार्थ के रूप में जीवित शरीर को शक्ति प्रदान करने वाला पदार्थ माना गया है।

इस पदार्थ की एक विशेषता यह है कि यह प्रकाश को सहन नहीं कर सकता। इसलिए प्रेत-प्रयोग या माध्यम (मीडियम) के समय तेज प्रकाश का प्रयोग करना निषिद्ध माना जाता है।

कि यह वास्तव में भौतिक पदार्थ है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण निम्न प्रकार से प्राप्त किया गया है—

एक प्रयोग के आरंभ में मीडियम को तौलकर देखा गया तो उसका वजन **एक मन सैंतीस सेर** था। प्रयोग समाप्त होने के

ठीक पहले जब उसे फिर से तौला गया, तो उसका वजन **एक मन चौबीस सेर** रह गया।

इससे स्पष्ट रूप से दिखाई दिया कि मीडियम के शरीर का वजन **तेरह सेर कम** हो गया था। अर्थात् उसके शरीर से कुछ भौतिक पदार्थ बाहर निकल गया था। प्रेत-प्रयोगों में इसी प्रकार के पदार्थ को आत्मा के प्रकट होने के लिए आवश्यक माना गया है।

मीडियम के शरीर से **तेरह सेर वजन का कोई पदार्थ** प्रेत ने खींचकर ले लिया था। जितनी बार मीडियम को तौला गया, हर बार यही अंतर देखा गया। इससे यह अच्छी तरह ज्ञात हुआ कि **एक्टोप्लाज़्म (Ectoplasm) ऐसा पदार्थ है जिसका वजन होता है।**

**अमेरिका**

बर्ड साहब ने मुझे जो परिचय-पत्र दिए थे, उनकी सहायता से मैं अमेरिका पहुँचते ही प्रेततत्त्व के अध्ययन का कार्य आरंभ कर सका।

इंग्लैंड में रहते समय एक दिन मैंने **[सेआन्स/प्रेत-सभा]** में आत्मा द्वारा स्लेट पर लिखते हुए देखा था। किंतु जिस प्रकार वह कार्य संपन्न हुआ, उससे मैं पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो सका।

अँधेरे कमरे में स्लेट को मेज के नीचे रख दिया गया था। वहाँ वास्तव में क्या हुआ, उसे देखने या समझने का मुझे अवसर नहीं मिला। इसलिए यह बात मैं दृढ़तापूर्वक नहीं कह सकता कि वह लेख वास्तव में आत्मा ने ही लिखा था।

बर्ड साहब के परिचय-पत्रों के कारण जिन लोगों से मेरा परिचय हुआ, उनमें **स्मेली साहब (Mr. Smalley)** संभवतः सबसे प्रमुख थे। उनकी सहायता से मुझे अमेरिका के कुछ मीडियमों से परिचित होने का अवसर मिला। इसके अतिरिक्त, जब भी मुझे किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हुई, उन्होंने उसे देने में तनिक भी कंजूसी नहीं की।

अमेरिका में लगभग दो सप्ताह रहने के बाद बर्ड साहब यूरोप से वापस आ गए।

बर्ड साहब के प्रयत्न और देखरेख में तथा मेरे विशेष अनुरोध पर मेरे सामने **छः बार प्रेत-सभा (Séance)** हुई। इनमें से तीन का वर्णन मैं यथासंभव संक्षेप में यहाँ दे रहा हूँ।

पाठक जानते हैं कि बर्ड साहब को **[वैज्ञानिक संस्था/समिति]** की ओर से यूरोप में परलोक-तत्त्व के संबंध में वैज्ञानिक अनुसंधान करने के लिए भेजा गया था। वहाँ से स्वदेश लौटकर उन्होंने जो रिपोर्ट दी, उसका सारांश यह था—

"इस विषय में मैंने यथासंभव सावधानीपूर्वक अनुसंधान करके यह जानने का प्रयास किया है कि ऐसी एक शक्ति अवश्य विद्यमान है, जिसके विषय में आधुनिक विज्ञान अभी बहुत कम जानता है। इसलिए इस विषय में और अधिक अनुसंधान आवश्यक है। मेरे विचार में यह अनुसंधान हमारी **[संस्था/समिति]** की ओर से किया जाना चाहिए।"

इस रिपोर्ट के आधार पर एक **[अनुसंधान समिति/संस्था]** का गठन किया गया। बर्ड साहब उसके सचिव नियुक्त हुए। यह अनुसंधान-कार्य अभी भी चल रहा है और इसके परिणामस्वरूप परलोक के संबंध में नित्य नए-नए तथ्य और सिद्धांत सामने आ रहे हैं।

**"आत्मा अमर है और मृत्यु के बाद उसे अत्यंत सरलता से फिर से प्रकट कराया जा सकता है"**—इस बात को भी एक अत्यंत कठोर वैज्ञानिक संस्था को अंततः किसी न किसी रूप में स्वीकार करना पड़ा है।

केवल चालीस वर्ष पहले तक अमेरिका में परलोक की बातों का उपहास किया जाता था। अब लगभग प्रत्येक शहर और गाँव में परलोक-संबंधी समितियाँ स्थापित हो चुकी हैं। परलोक के विषय

में अमेरिका जितना आगे बढ़ चुका है, इंग्लैंड को छोड़कर संसार का शायद ही कोई दूसरा देश उसके समान है।

उपर्युक्त **[संस्था/समिति]** की स्थापना के साथ ही वैज्ञानिक पद्धति से परलोक के विषय में अनुसंधान आरंभ हुआ। यदि कोई व्यक्ति इस संबंध में क्रमबद्ध और विस्तृत समाचार जानना चाहता हो, तो हम उसे इस संस्था की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ने का अनुरोध करेंगे।

इस समिति की स्थापना के बाद मैं लगभग **दो महीने तक अमेरिका में** रहा। इस अवधि में मेरे सामने छः बार प्रेत-सभा हुई। ऊपर ही कह चुका हूँ कि यहाँ मैं केवल तीन सभाओं का वर्णन कर रहा हूँ, क्योंकि बाकी तीन में मुझे कोई नई बात देखने को नहीं मिली।

**(२)**

न्यूयॉर्क शहर में **[प्रेत-अनुसंधान संबंधी एक संस्था]** नाम की एक समिति है। इस संस्था के स्थापित होने के कुछ वर्ष पहले ही इस संगठन का जन्म हो चुका था। यह संस्था इतने समय से परलोक-तत्त्व का अध्ययन कर रही है कि उसके अनुभव और अनुसंधान का पर्याप्त संग्रह तैयार हो चुका है।

चूँकि अब तक इसे खुले रूप से स्वीकार नहीं किया जाता था, इसलिए इतने दिनों तक उसका **[उस संस्था]** के साथ कोई संबंध नहीं था। बर्ड साहब के यूरोप से लौटने के बाद **[उस संस्था]** के साथ **[अमेरिकी वैज्ञानिक संस्था]** का एक समझौता हुआ। इसमें यह निश्चित किया गया कि **[उस संस्था]** की देखरेख में जितने भी प्रेत-प्रयोग होंगे, उनमें **[अमेरिकी वैज्ञानिक संस्था]** के कुछ वैज्ञानिक सदस्य उपस्थित रहेंगे और वे **[संस्था]** की प्रत्येक गतिविधि की वैज्ञानिक ढंग से जाँच करेंगे।

विशेष कार्यवश मैं पहली **[प्रेत-सभा]** में उपस्थित नहीं था। दूसरी सभा में **[संस्था]** के अधिकारियों ने मुझे बुलाया। यह सभा **[एक वैज्ञानिक संस्था]** के कार्यालय के एक कमरे में हुई।

दूसरी सभा में मैं उपस्थित था और वह भी उसी कमरे में आयोजित की गई थी।

उस समय **प्रोफेसर [नाम अस्पष्ट]** अमेरिका के सबसे प्रसिद्ध **[वैज्ञानिक/अनुसंधानकर्ता]** माने जाते थे। यूरोप में भी मैंने उनकी बहुत ख्याति सुनी थी। सौभाग्य से उस समय वे न्यूयॉर्क शहर में उपस्थित थे, इसलिए इस दूसरी सभा में उन्हीं को **[निरीक्षक/परीक्षक]** नियुक्त किया गया।

इस सभा में **[मीडियम]** और मुझे मिलाकर कुल सात व्यक्ति थे। इनमें से तीन स्थानीय विश्वविद्यालय के विज्ञान-विभाग के प्रोफेसर थे।

सभा आरंभ होने से कुछ मिनट पहले प्रोफेसर **[नाम अस्पष्ट]** एक नया डाक का थैला निकालकर लाए। यह बहुत अच्छे **[कैनवास/मोटे कपड़े]** से बना था, जिसकी लंबाई लगभग चार हाथ और चौड़ाई लगभग ढाई हाथ थी।

**[प्रोफेसर/निरीक्षक]** ने प्रस्ताव रखा कि **[मीडियम]** को उसके प्रार्थना-पाठ के बाद इसी थैले के भीतर बैठना होगा।

बर्ड साहब मेरे दाहिनी ओर बैठे थे। उन्होंने धीमे स्वर में कहा, **"यह अन्याय है! [मीडियम] कभी भी ऐसा नहीं करेगा।"**

लेकिन हम सभी को बहुत आश्चर्य हुआ कि उन्होंने इस अपमानजनक प्रस्ताव पर तनिक भी आपत्ति नहीं की। उन्होंने केवल इतना कहा—

**"मैं जानता हूँ कि इस देश की सबसे बड़ी वैज्ञानिक समितियाँ इस प्रयोग की जाँच कर रही हैं। यह स्वाभाविक है कि वे मेरे प्रत्येक कार्य की विशेष सावधानी से परीक्षा करेंगी। उनके मन में किसी भी विषय को लेकर किसी प्रकार का संदेह न रहे—**

**इसका ध्यान रखना मेरा प्रमुख कर्तव्य है। यदि मैं आज इस परीक्षा में सफल हो गया, तो परलोक-तत्त्व के अध्ययन को बहुत लाभ होगा। इसके प्रचार और विस्तार के लिए मुझे किसी भी प्रकार की असुविधा सहने में कोई आपत्ति नहीं है।"**

इसके बाद **[मीडियम]** उस थैले के भीतर प्रवेश कर गया।

हमने सोचा था कि **[मीडियम]** के पैरों से लेकर सिर तक उसे थैले के भीतर बंद कर दिया जाएगा। लेकिन जब देखा गया कि प्रोफेसर **[नाम अस्पष्ट]** का पूरा शरीर थैले के भीतर...

जब उन्होंने [मीडियम] को पूरी तरह उसके भीतर रख दिया, तब दर्शकों में से कुछ लोगों ने आपत्ति करते हुए कहा कि इस तरह उस व्यक्ति का दम घुट सकता है और उसकी मृत्यु भी हो सकती है।

प्रोफेसर ने हल्का-सा मुस्कुराकर कहा, **"क्या तुम लोग समझते हो कि मैंने इतनी साधारण बात पर विचार नहीं किया है?"** इस थैले के ऊपरी भाग में कई छेद कर दिए गए हैं, जिससे [मीडियम] को साँस लेने में तनिक भी कठिनाई नहीं होगी।

इसके बाद थैले के ऊपरी हिस्से को पूरी तरह बंद करके उस पर एक ताला लगा दिया गया और ताले पर कई मुहरें लगा दी

गईं। हम सब शांत और निःशब्द होकर प्रोफेसर की इस कार्यवाही को देखते रहे। अब [मीडियम] के किसी भी प्रकार की चालाकी करने की कोई संभावना नहीं रह गई थी।

बर्ड साहब ने मुझसे कहा—

**"इस प्रकार [मीडियम] की गतिविधियों को पूरी तरह बंद करने की बात मैंने कभी नहीं सुनी। इसके बाद भी यदि कोई प्रेतात्मा आती है, तो हमारे अनुसंधान का काम बिल्कुल सरल हो जाएगा। लेकिन यदि प्रेतात्माओं का अस्तित्व वास्तव में सत्य है, तो मुझे आशंका है कि इस प्रकार [मीडियम] को अपमानित करने का उन्हें बुरा लग सकता है।"**

इसके बाद सभा विधिवत आरंभ हुई। भजन की दो पंक्तियाँ गाए जाने के साथ ही हमें अनुभव हुआ कि कमरे में किसी आत्मा का आविर्भाव हो गया है।

सबसे पहले अत्यंत हल्के नीले रंग की एक प्रकाश-ज्वाला कमरे के चारों ओर तीन-चार सेकंड तक घूमती रही। उसके बाद वह [मीडियम] के ठीक सिर के ऊपर जाकर अदृश्य हो गई।

इसके तुरंत बाद शून्य से लगभग **पंद्रह-सोलह वर्ष के एक लड़के की आवाज़** में अंग्रेज़ी में प्रश्न सुनाई दिया—

**"प्रोफेसर महाशय! यदि मैं आपके इस बैग को[मीडियम] के शरीर से बाहर निकालकर ले आऊँ, तो क्या आप यह बैग मुझे दे देंगे?"**

प्रोफेसर को यह बात बिल्कुल असंभव लगी। वे उपहासपूर्वक मुस्कुराते हुए बोले—

**"निश्चय ही। बल्कि मैं तुम्हें एक और पुरस्कार भी दूँगा। लेकिन इसे करने में कितने दिन लगेंगे?"**

शून्य से उत्तर आया—

**"मुझे लगता है कि मैं इसे बीस मिनट के भीतर पूरा कर सकता हूँ।"**

इसके ठीक बाद वही अशरीरी आवाज़ बोली—

**"आज तुम लोगों ने मीडियम को जिस नये बैग में बंद किया है, उससे मैं और मेरे साथी बहुत प्रसन्न हुए हैं। हम लोग सेआन्स में जो कुछ भी करते हैं, तुम लोग उसे मीडियम की चालाकी कहकर टाल देते हो। आज प्रोफेसर की सूझ-बूझ के कारण हमें ऐसा काम करने का अवसर मिला है, जिसे मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि तुम्हारी दुनिया में कोई भी मनुष्य**

**नहीं कर सकता। हमारे संबंध में तुम्हारे मन में जो अंधा अविश्वास है, शायद वह अब कुछ दूर हो जाएगा।"**

दो-एक मिनट तक मौन रहने के बाद उस आवाज़ ने मेरा नाम लेकर मुझे संबोधित किया और कहा—

**"देखो गुप्त बाबू..."**

"तुम्हारे देश से तुम्हारा एक निकट संबंधी हमारे यहाँ आया है। वह इस समय यहाँ उपस्थित है। उसकी एक इच्छा है कि वह तुम्हें कुछ बताए।"

यह समाचार सुनकर मैं स्वाभाविक रूप से अत्यंत व्याकुल होकर बोला, **"मेरा संबंधी! कौन है वह?"**

अशरीरी आवाज़ ने कहा, **"मिर्जापुर में—[आत्मा ने 'मिर्जापुर' के स्थान पर 'मज्जापुर' कहा था]—क्या तुम्हारा कोई संबंधी रहता था?"**

मिर्जापुर में मेरे एक बहुत निकट संबंधी रहते थे। मैंने उनका नाम बता दिया। यहाँ यह कहना उचित होगा कि भारत से मुझे जो अंतिम पत्र प्राप्त हुआ था, उसमें उनके बीमार होने या मृत्यु के संबंध में कोई समाचार नहीं था।

अशरीरी आवाज़ ने कहा—

**“हाँ! पिछले बुधवार को दोपहर तीन बजे उन्होंने हैजे से शरीर त्याग दिया है। यह समाचार तुम्हें अगली डाक से प्राप्त होगा।”**

जब मैंने और कोई प्रश्न नहीं किया, तब अशरीरी आवाज़ ने कहा—

**“तुम्हारे संबंधी तुम्हें बताना चाहते हैं कि यहाँ आकर वे बहुत सुखी हैं। उनके शरीर त्यागने के लिए तुम लोग तनिक भी शोक मत करना। तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए कि उन्होंने तुम्हारे संसार के सभी दुःख-कष्टों से छुटकारा पाकर इस चिर-सुख के संसार में प्रवेश किया है।”**

मैंने इस बात पर पूरी तरह विश्वास किया; क्योंकि मेरे ये संबंधी लगभग संन्यासी जैसे थे और उन्होंने विवाह नहीं किया था। वे हमेशा कहा करते थे—

**“इस दो दिन के संसार में सब कुछ मिथ्या है। जितनी जल्दी यहाँ से निकल जाएँ, उतना ही अच्छा है।”**

बाद में मुझे पता चला कि इस संबंधी ने ठीक उसी स्थान, समय और दिन पर इस संसार को छोड़ा था, जिसका उल्लेख प्रेतात्मा ने किया था।

इसके बाद प्रेतात्मा ने प्रोफेसर **[नाम अस्पष्ट]** से कहा—

**"तुम्हारे यहाँ आने से ठीक पहले तुमने जो पत्र लिखना शुरू किया था, उसे पूरा नहीं कर सके—यह अच्छा ही हुआ।"**

प्रोफेसर ने अत्यंत आश्चर्य से कहा—

**"इस समय मैं जो पत्र लिख रहा था, यह तुम कैसे जान गए? अच्छा, बताओ तो मैंने क्या लिखा है?"**

प्रेतात्मा ने उस अधूरे पत्र की पहली पंक्ति से लेकर उसके अंतिम लिखे हुए शब्द तक सब कुछ सुना दिया।

प्रोफेसर कुछ देर तक अत्यंत विस्मित होकर चुप बैठे रहे। फिर उन्होंने कहा—

**"आज मैं स्वीकार करता हूँ कि इस संसार में ऐसी एक शक्ति अवश्य है, जिसे आधुनिक विज्ञान अभी तक नहीं जानता। तुम वास्तव में प्रेतात्मा हो या कोई अज्ञात शक्ति—यह मैं नहीं**

**जानता। लेकिन इतना सत्य है कि तुमने ऐसा कार्य किया है, जिसे हममें से कोई भी नहीं कर सकता।"**

फिर उन्होंने पूछा—

**"अच्छा, तुम्हारा बैग खोलने का काम कहाँ तक पहुँचा? तेईस मिनट बीत चुके हैं।"**

उनके इतना कहते ही वह मेलबैग आकर प्रोफेसर की गोद में गिर पड़ा।

ठीक उसी समय प्रेतात्मा ने **"गुड-बाय, फ्रेंड्स!"** कहकर विदा ली।

हम सभी...

हम समझ गए कि सत्र समाप्त हो गया। दीपक जलाए जाने पर देखा गया कि मेलबैग का ताला और मुहर पहले जैसी ही थीं—उनमें कहीं भी तनिक-सा परिवर्तन नहीं हुआ था। किस प्रकार उसे माध्यम के शरीर से खोलकर निकाल लिया गया, हम बिल्कुल समझ नहीं सके। बैग के प्रत्येक भाग की बहुत अच्छी तरह जाँच करने के बाद प्रोफेसर बी. ने कहा, "यह संभव हो सकता है, यह मैंने अपनी आँखों से न देखा होता तो मैं कभी विश्वास नहीं करता। यहाँ तक कि मेरा सबसे निकट का मित्र

भी यदि कहता कि उसने यह अपनी आँखों से देखा है, तब भी मैं विश्वास नहीं कर पाता।"

इसके बाद सत्र समाप्त हो गया। जाते समय बर्ड साहब ने उपस्थित दर्शकों से उस दिन की घटनाओं के संबंध में उनकी राय पूछी। सभी ने खुले मन से स्वीकार किया कि उन्होंने जो कुछ देखा, वह सामान्य ज्ञान के नियमों से परे था। इस विषय में उन्हें और अधिक अनुसंधान करना होगा। लेकिन उनमें से किसी ने भी स्पष्ट रूप से यह स्वीकार नहीं किया कि यह भूत-प्रेत का कार्य था।

---

इंग्लैंड में मैंने एक स्लेट पर प्रेतात्मा द्वारा लिखने का प्रदर्शन देखा था। उसे मैंने "अभिनय" इसलिए कहा, क्योंकि उसमें किसी प्रकार की चालाकी नहीं थी, ऐसा मैं निःसंदेह विश्वास नहीं कर सका था। अमेरिका में मैंने यही घटना दो बार देखी। वहाँ किसी प्रकार की चालाकी नहीं थी—यह मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ।

बर्ड साहब की पूरी देखरेख में यह सत्र आयोजित हुआ था। ऊपर जिन डेककर साहब का उल्लेख किया गया है, वे इसके

[अध्यक्ष/निरीक्षक] थे। इंग्लैंड में जिस प्रकार यह प्रयोग दिखाया गया था, उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

जिस स्लेट पर लिखा जाना था, उसे वे अपने साथ लाए थे। एक ही आकार की दो स्लेटें हमें दिखाई गईं। हमने उन्हें यथासंभव अच्छी तरह जाँचकर देखा; वे बिल्कुल साफ थीं और ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि उन पर किसी प्रकार का लेख था।

इसके बाद हमारे सामने एक स्लेट के ऊपर एक स्लेट-पेंसिल रखकर दूसरी स्लेट से उसे ढक दिया गया। फिर कमरे की रोशनी बुझा दी गई। डेककर साहब ने स्वयं दोनों स्लेटों को पकड़कर मेज के नीचे की ओर—मेज के उस हिस्से में जो हमारी दृष्टि के विपरीत था—रख दिया। लगभग उसी समय हमें लिखने की आवाज सुनाई देने लगी।

इससे पहले हमने एक प्रश्न, जिसे [माध्यम/अन्य व्यक्ति] की अनुपस्थिति में लिखा गया था, एक लिफाफे में बंद करके रख दिया था। बाद में हमें स्लेट पर उस प्रश्न का उत्तर सुनाई दिया। लेकिन बाद में जब हमने देखा, तो स्लेट पर इस प्रकार लिखा हुआ था कि वह लगभग किसी भी प्रश्न का उत्तर हो सकता था।

जो मेज हमारे सामने थी, उसके सामने वाले हिस्से...

हम बैठे थे। उसके ऊपर एक चादर इस प्रकार डाली हुई थी कि वह मेज को ढककर प्रत्येक ओर लगभग दो फुट नीचे तक लटक रही थी। मेज के नीचे क्या था या नहीं था, यह हमने नहीं देखा।

अब अमेरिका में अपनाई गई विधि का संक्षेप में वर्णन करता हूँ।

जिस स्थान पर माध्यम की मेज रखी थी, उस स्थान की हमने बहुत सावधानी से पूरी जाँच की। कमरे के फर्श पर मैटिंग बिछी हुई थी। बर्ड साहब ने ठीक मेज के नीचे एक दरी बिछा दी। उद्‌देश्य यह था कि यदि ठीक मेज के नीचे कोई गुप्त मार्ग हो, तो वह दरी के कारण बंद हो जाए। दरी के चारों कोनों को मेज के चारों पैरों से बाँध दिया गया और प्रत्येक बंधन की रस्सी पर चार-चार मुहरें लगा दी गईं।

दो स्लेट और एक पेंसिल बर्ड साहब और मैं बाजार से खरीदकर लाए थे। उन्हें लगभग आधे घंटे तक अम्ल और चूने से अच्छी तरह रगड़कर साफ किया गया। मैं अपने प्रश्न लिखकर साथ लाया था। मैंने दो प्रश्न लिखे थे। पहला था—"मेरे पिता का नाम क्या है और उनकी मृत्यु कहाँ हुई थी?" दूसरा था—"मैं इस देश में क्यों आया हूँ और किस जहाज से आया हूँ?"

बर्ड साहब ने स्वयं दोनों स्लेटों को जाँचा और उनके कई स्थानों पर मुहरें लगाईं। इसके बाद उन्हें दो मोटे कार्डबोर्ड के ऊपर रखकर ट्वाइन (रस्सी) से अच्छी तरह बाँधा गया और फिर से मुहर लगा दी गई।

इस दिन माध्यम मेरे और प्रोफेसर डेककर के बीच बैठे थे। रोशनी बुझा दिए जाने के बाद दोनों स्लेटें मेज के ऊपर ठीक डेककर साहब के सामने रखी गईं। इंग्लैंड में, लेकिन, उन्हें मेज के नीचे रखा गया था।

डेककर साहब ने अपना दाहिना हाथ उन पर रखा। मैं उनके दाहिनी ओर बैठा था; मैंने अपना बायाँ हाथ उनके दाहिने हाथ पर रख दिया और माध्यम के बाएँ हाथ को अपने दोनों हाथों से दबाकर पकड़ लिया। कोई भी निष्पक्ष पाठक यह स्वीकार करेगा कि हमने जो सावधानियाँ बरती थीं, उनमें किसी प्रकार की चालाकी करना बिल्कुल असंभव था।

उपरोक्त व्यवस्था के तीन मिनट से अधिक समय नहीं बीता था कि हमें स्लेट पर लिखने की घस-घस की आवाज बहुत स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगी। लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि मेरा बायाँ हाथ तनिक भी हिला नहीं। पाठक ध्यान रखें कि मेरा बायाँ हाथ स्लेट के ऊपर रखा हुआ था। ऐसी स्थिति में

स्लेट पर लिखते समय मेरा बायाँ हाथ अवश्य हिलना चाहिए था, लेकिन वह बिल्कुल भी नहीं हिला।

घस-घस की आवाज बंद हो गई। हम समझ गए कि प्रेतात्मा का कार्य समाप्त हो गया है। तुरंत रोशनी जलाई गई। स्लेट...

स्लेट खोलने के समय उसकी मुहरों की हमने बहुत सावधानी से जाँच की। उनमें तनिक भी कोई गड़बड़ी नहीं मिली। दोनों स्लेटों पर बर्ड साहब ने अपने हस्ताक्षर किए थे, ताकि स्लेट बदली न जा सके। यह कहना अनावश्यक है कि उनमें हमें किसी प्रकार की चालाकी का कोई चिह्न नहीं मिला।

इसके बाद मेरे दोनों प्रश्नों के उत्तर की बात आई। जिस प्रकार के उत्तर होने चाहिए थे, ठीक उसी प्रकार लिखे गए थे। उनमें एक भी अतिरिक्त शब्द नहीं था।

यहाँ एक आश्चर्यजनक घटना का उल्लेख किए बिना नहीं रह सकता। पाठक को अवश्य याद होगा कि मेरा पहला प्रश्न था— "मेरे पिता का नाम क्या है और उनकी मृत्यु कहाँ हुई थी?" इसका सही उत्तर दे सकने वाला व्यक्ति मेरे अतिरिक्त अमेरिका में कोई नहीं था। केवल इतना ही नहीं कि इस प्रश्न का उत्तर बिल्कुल सही लिखा गया था, बल्कि वह **बंगला भाषा में** लिखा गया था। पता नहीं क्यों, मुझे पूरा विश्वास है कि यह किसी

बंगाली व्यक्ति की लिखावट थी। इतनी सुंदर लिखावट और इतनी शुद्ध वर्तनी यूरोप या अमेरिका का कोई व्यक्ति लिख सकता है, ऐसा मुझे नहीं लगता।

स्लेट पर लिखे हुए शब्द पढ़ने के बाद हमने फिर एक बैठक (séance) की। इस बार माध्यम की कुर्सी एक [विशेष उपकरण] के ऊपर रखी गई थी।(१)

इस बार भी माध्यम मेरे और प्रोफेसर डेककर के बीच बैठे थे। रोशनी बुझाते ही प्रेतात्मा का आविर्भाव हुआ। दो-तीन मिनट बाद बर्ड साहब ने कहा, "हम किसी प्रेतात्मा की मूर्ति देखना चाहते हैं। क्या यह संभव है?"

उत्तर मिला, "असंभव नहीं है, लेकिन यह हमारे बीच भी एक दुर्लभ क्षमता है। यह शक्ति प्राप्त करने के लिए हमें कठिन साधना करनी पड़ती है। क्या तुम इसे आज ही देखना चाहते हो?"

अध्यापक ने कहा, "यदि यह तुम्हारे लिए कठिन हो और इसके कारण तुम्हें विशेष असुविधा न हो, तो…"

इसके बाद लगभग छह-सात मिनट तक हम सब बिल्कुल शांत होकर बैठे रहे। दूसरी ओर से किसी प्रकार की आवाज या

प्रतिक्रिया नहीं मिली। हममें से कुछ लोगों ने सोचा कि séance पूरी तरह विफल हो गया। लेकिन तभी हमने एक आवाज सुनी—

“आज ही तुम्हारी प्रार्थना पूरी होगी! लेकिन कुछ बातें तुम लोग याद रखना। यदि इसमें थोड़ी भी चूक हुई तो माध्यम को बहुत बड़ी हानि हो सकती है; यहाँ तक कि उसके प्राण भी जा सकते हैं। तुममें से कोई भी अपनी जगह से मत उठना।”

इस समय बर्ड साहब ने कहा, “मैंने सुना है कि जब कोई प्रेतात्मा हमारी दुनिया के किसी व्यक्ति से मिलना या उससे बात करना चाहती है, तब उस आत्मा को माध्यम से शक्ति प्राप्त करनी पड़ती है। क्या यह…”

“सत्य?” आवाज ने कहा, “हाँ। हमारे शरीर सूक्ष्म पदार्थ से बने हैं। जब तक हमारे भीतर जड़ता नहीं आती, तब तक हम तुम्हारी तरह जड़ शरीरधारी लोगों के सामने प्रकट नहीं हो सकते। इसलिए हम माध्यम से कुछ मात्रा में जड़-शक्ति प्राप्त करते हैं।”

इसके बाद हम लगभग दस मिनट तक उस अँधेरे में लगभग निःशब्द बैठे रहे—लगभग इसलिए कि हममें से कुछ लोग बहुत धीमी आवाज में आपस में फुसफुसा रहे थे। अचानक कमरे के

भीतर एक बहुत हल्की प्रकाश-किरण दिखाई दी और इधर-उधर घूमने लगी। पहले उसका आकार एक छोटी टेनिस गेंद जैसा था। फिर वह धीरे-धीरे बढ़ने लगी। दो-तीन मिनट के भीतर दिखाई दिया कि उसके भीतर एक मनुष्य की आकृति है।

पहले वह आकृति छाया जैसी लग रही थी। लेकिन धीरे-धीरे वह छाया-मूर्ति एक स्पष्ट स्त्री-मूर्ति के रूप में दिखाई देने लगी। उसकी आयु लगभग 40-42 वर्ष प्रतीत होती थी। उसके चेहरे और शरीर का रंग देखकर हम स्पष्ट रूप से समझ गए कि वह श्वेतवर्ण की नहीं थी, लेकिन वह किस देश की थी, यह मैं समझ नहीं सका।

बर्ड साहब ने पूछा, "क्या मैं तुम्हारा परिचय पूछ सकता हूँ?"

मूर्ति ने कहा, "तुम्हारी गणना के अनुसार लगभग 84 वर्ष पहले मैंने कैलिफोर्निया में जन्म लिया था और लगभग 44 वर्ष पहले इस संसार से चली गई।"

जिस घर में इस स्त्री का जन्म हुआ था, उसके बारे में तथा वहाँ रहने वाले अन्य स्त्री-पुरुषों के संबंध में भी हमने बहुत-सी जानकारी प्राप्त की। बाद में जाँच-पड़ताल से हमें पता चला कि इस प्रेत-स्त्री ने जो-जो बातें बताई थीं, वे सभी सत्य थीं। उसके पिता स्पेन के एक मूर थे और उसकी माता अमेरिका की मूल

निवासी थी। इस प्रकार के जन्म के कारण हम यह समझ नहीं पाए कि यह स्त्री मूलतः किस स्थान की निवासी मानी जाए।

इस स्त्री के विषय में ठीक-ठीक जाँच करने में लगभग तीन साल लग गए। जब जाँच समाप्त हुई, तब मैं भारत लौट चुका था। लेकिन बर्ड साहब ने अपना वचन निभाते हुए जाँच के परिणाम मुझे संक्षेप में लिख भेजे थे। उनमें से कुछ अंशों का अनुवाद नीचे दे रहा हूँ—

"...मैं स्वयं [उस संस्था] की ओर से वहाँ गया था... इस स्त्री का निवास-स्थान ढूँढ़ने में मुझे विशेष कठिनाई नहीं हुई। उसका एक पुत्र और एक पुत्री अभी भी जीवित हैं। पता चला कि इस प्रेत-स्त्री का नाम एरिनी (Arini) था। उसके रिश्तेदारों के संबंध में जो-जो जानकारी मिली, उसमें कोई विसंगति नहीं पाई गई। सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि उसके पुत्र के पास..."

उसकी माँ के पास उसकी दो तस्वीरें हैं। ये तस्वीरें शायद उसके 25-26 वर्ष की आयु में खींची गई थीं। हमने जिस प्रेत-स्त्री को देखा था, उसकी आयु 30 से 45 वर्ष के बीच थी। इस आयु के अंतर को ध्यान में रखते हुए मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि यह प्रेत-स्त्री और इस तस्वीर में दिखाई देने वाली स्त्री एक

ही व्यक्ति हैं। प्रेतात्मा के अस्तित्व के विषय में इससे अधिक उत्कृष्ट प्रमाण शायद ही कोई हो सकता है।”

अब ऊपर बताए गए **[स्वचालित वजन दर्ज करने वाले यंत्र]** के संबंध में कुछ अद्भुत घटनाओं का उल्लेख करता हूँ। यह यंत्र अपने-आप वजन कर लेता था और उस वजन का परिणाम लिखता रहता था। प्रोफेसर [डेककर] यह काम कर रहे थे।

इस यंत्र के संबंध में कुछ आश्चर्यजनक बातें बताना आवश्यक है। इस [यंत्र] को चलाने का भार प्रोफेसर [डेककर] के हाथ में था। सत्र के दौरान जब से मूर्ति प्रकट हुई, तब से उसके अदृश्य होने तक वे [माध्यम] के वजन का लेखा लिखते रहे।

जहाँ [माध्यम] का वजन दर्ज किया जाना था, वहाँ एक [यंत्र] लगा हुआ था। मूर्ति प्रकट होने से पहले माध्यम का वजन **78 सेर** था। मूर्ति प्रकट होने के सात मिनट बाद यह **64 सेर** और बाईस मिनट बाद **58 सेर** हो गया। इसके बाद जैसे-जैसे मूर्ति धीरे-धीरे अदृश्य होने लगी, माध्यम का वजन फिर बढ़ने लगा।

उपरोक्त प्रमाणों से हमें मानना पड़ता है कि séance के समय कोई अदृश्य शक्ति माध्यम के शरीर से ऐसी कोई वस्तु बाहर निकाल लेती है, जिससे उसके शरीर का वजन कम हो जाता है।

पश्चिमी वैज्ञानिक प्रेततत्त्ववेत्ता इस पदार्थ को **[एक्टोप्लाज़्म]** कहते हैं।

---

शिकागो शहर का नाम बहुत लोगों को परिचित है। एक दिन बर्ड साहब ने कहा, "हाल ही में शिकागो से एक महिला यहाँ आई है। वह मेरे एक विशेष मित्र का परिचय-पत्र लेकर आई है। मेरे मित्र ने लिखा है कि 'यह महिला एक अच्छी माध्यम है। इसकी एक विशेषता यह है कि यह खुले दिन के प्रकाश में भी séance कर सकती है।'

"मैं यूरोप के सभी बड़े-बड़े शहरों में séance में बैठ चुका हूँ, लेकिन मैंने किसी भी माध्यम को दिन के समय séance करते नहीं देखा। सुना है कि इंग्लैंड में शायद एक माध्यम है जो दिन के समय séance करता है, लेकिन जिस कमरे में वह माध्यम बैठता है, उसे पूरी तरह अँधेरा कर दिया जाता है। शिकागो की यह महिला ऐसा बिल्कुल नहीं करती। यदि यह बात सच है, तो यह प्रेततत्त्व-विज्ञान में एक बिल्कुल नई बात होगी।"

इसके दो दिन बाद बर्ड साहब के अपने घर में दोपहर तीन बजे séance आयोजित हुआ। [ऊपर उल्लिखित शिकागो की महिला] के

अतिरिक्त पाँच लोग उपस्थित थे—बर्ड साहब, उनकी पत्नी, मैं और दो वैज्ञानिक।

उन अंतिम दो व्यक्तियों में से एक संगीतज्ञ थे। (मैंने सुना था कि यह व्यवस्था माध्यम के अनुरोध पर की गई थी। इसका कारण मुझे बाद में पता चला।)

बर्ड साहब के अनुरोध पर मैं अकेले एक प्रसिद्ध दुकान से दो स्लेट और एक पेंसिल खरीदकर लाया था। बर्ड साहब की सलाह के अनुसार मैंने दोनों स्लेटों के चारों कोनों पर बंगला अक्षरों में अपना नाम लिख दिया।

जिस कमरे में हम बैठे थे, उसकी एक खिड़की से केवल हल्की-सी रोशनी भीतर आ रही थी। माध्यम के अनुरोध पर वह खिड़की बंद कर दी गई। कमरे में एक दरवाज़ा और एक खिड़की थी। बर्ड साहब ने दरवाज़ा बंद कर दिया, लेकिन खिड़की खुली रही। यह कहना आवश्यक है कि कमरे में प्रकाश की कोई कमी नहीं थी। लेकिन सूर्य की किरणें कमरे के भीतर बिल्कुल भी प्रवेश न कर सकें, इसके लिए हमने विशेष सावधानी बरती।

सभा आरंभ हुई। एक स्लेट के ऊपर पेंसिल रखकर उसे दूसरी स्लेट से ढक दिया गया। माध्यम के अनुरोध पर हमने दोनों स्लेटों को एक मोटे कागज़ में लपेटकर सूतली से अच्छी तरह

बाँध दिया। (चूँकि यह पूरा काम दिन के प्रकाश में हो रहा था, इसलिए मुझे इस प्रकार बाँधने की कोई आवश्यकता नहीं लगी थी। यदि माध्यम ने न कहा होता, तो शायद हम ऐसा कुछ भी नहीं करते।)

**प्रथम परिच्छेद**

मैं दोनों स्लेटों के ऊपर अपना दाहिना हाथ रखकर बैठ गया। मेरा बायाँ हाथ माध्यम के दाहिने हाथ से जुड़ा हुआ था। माध्यम ने स्लेट को बिल्कुल भी स्पर्श नहीं किया था।

इस प्रकार बैठने के बाद माध्यम ने मुझसे पूछा, "स्लेट के ऊपर क्या लिखा जाएगा? आपकी इच्छा हो तो चित्र, गीत आदि अथवा किसी भी प्रश्न का उत्तर लिखा जा सकता है। लेकिन आप जो चाहते हैं, वह किसी को न बताएँ। उसे एक कागज़ पर लिखकर अपनी जेब में रख लें।"

मैंने अपनी जेब की नोटबुक में लिखकर रखा—"मेरे सबसे छोटे पुत्र का चित्र।"

चार पंक्तियों का एक धार्मिक गीत गाया गया और सभा आरंभ हुई। गीत की पहली पंक्ति समाप्त होने से पहले ही मुझे स्पष्ट रूप से अनुभव हुआ कि जैसे स्लेट के ऊपर कोई लिख रहा है।

मेरा हाथ साफ़-साफ़ ऊपर-नीचे होने लगा। इतना ही नहीं, लिखने की स्पष्ट "घस-घस" की आवाज़ भी वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने सुनी।

पाठक ध्यान रखें कि यह घटना दोपहर तीन बजे, साफ़ दिन के उजाले में हो रही थी। दोनों स्लेटें मेज़ के ऊपर सब लोगों के सामने रखी हुई थीं। उनका माध्यम के साथ तनिक भी संपर्क नहीं था।

ऐसी स्थिति में यदि स्लेट के ऊपर कुछ लिखा गया हो—विशेष रूप से वही चीज़, जिसकी मैंने इच्छा की थी—तो हमें यह मानने के लिए बाध्य होना पड़ेगा कि यह कार्य किसी अप्राकृतिक उपाय से संपन्न हुआ था।

लिखने की आवाज़ समाप्त होते ही माध्यम ने संकेत किया कि स्लेट खोलकर देखी जाए। मैंने स्वयं दोनों स्लेटों को बंधन से मुक्त किया। स्लेट पर जो कुछ मैंने देखा, उसे देखकर मैं विस्मय से चीख उठा—उस पर मेरे सबसे छोटे पुत्र का चित्र बना हुआ था।

मैं यह नहीं कह सकता कि वह चित्र प्रथम श्रेणी का था, लेकिन वह मेरे पुत्र का चित्र था, इसे किसी भी प्रकार नकार नहीं सकता। साफ़ दिन के उजाले में इस प्रकार की घटना को अपनी

आँखों से देखने के बाद भी यदि कोई कहे कि यह सब झूठ है, तो मुझे केवल इतना कहकर अपने मन को संतोष देना पड़ेगा कि—यदि स्वयं भगवान आकर कहें, “प्रेतात्माओं का अस्तित्व है और उन्हें बहुत आसानी से इस संसार में वापस लाया जा सकता है,” तो भी इन अविश्वासियों का दल कहेगा, “प्रभु, आप भगवान हैं, इसका प्रमाण क्या है?”

## इहलोक और परलोक

## प्रथम परिच्छेद

### आरंभ की बात

काशी के क्वीन्स कॉलेज के प्रोफेसर विनिस साहब ने मेरे जीवन की गति को किस प्रकार एक भिन्न दिशा में मोड़ दिया था, उसका संक्षिप्त वर्णन मैं पहले कर चुका हूँ। उनकी उस कृपा के लिए मैं उनका सदा कृतज्ञ रहूँगा।

यह आदर्श शिक्षक केवल मेरे विद्यार्थी जीवन में ही इस विषय में मेरी सहायता नहीं करते थे। सेवानिवृत्त होने के बाद भी वे पत्रों के माध्यम से मुझे इस विषय में उत्साहित करते रहते थे। उन्होंने मुझे कई बार लिखा था कि मैं एक बार विलायत जाऊँ; क्योंकि ऐसा करने पर मैं स्पष्ट रूप से समझ सकूँगा कि

आजकल प्रेततत्त्व का अध्ययन किस प्रकार वैज्ञानिक पद्धति से किया जा रहा है।

यह अत्यंत दुःख की बात है कि उनके जीवनकाल में मैं विलायत जाने की व्यवस्था नहीं कर सका। यदि मैं ऐसा कर पाता, तो उन्होंने जिस प्रकार अनेक रूपों में मेरी सहायता की होती, वह उन्होंने स्वयं मुझसे कहा था।

कॉलेज छोड़ने के बाद ही मुझे नौकरी के सिलसिले में बर्मा जाना पड़ा। यह बीसवीं शताब्दी के बिल्कुल आरंभिक काल की बात है।

उस समय बर्मा में प्रेततत्त्व के अध्ययन की कोई विशेष सुविधा नहीं थी। मैंने सुना था कि कुछ फुंगी (बौद्ध भिक्षु) प्रेततत्त्व का अध्ययन करते हैं और उनमें ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने इस विषय में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया है। मेरी बर्मा-यात्रा का लगभग पूरा समय बर्मा के बिल्कुल उत्तर-पूर्वी भाग में बीता। वहाँ सौभाग्य से मेरी भेंट कुछ विद्वान फुंगियों से हुई। (इसका परिणाम मैंने अपनी पुस्तक "मृत्यु के बाद" में वर्णित किया है।) लेकिन वे शायद इसलिए कि मैं भारतवासी हिंदू था, मुझे परलोक और आत्मा के संबंध में विशेष कुछ बताना नहीं चाहते थे। हाँ, वे बार-बार यह कहते थे कि परलोकगत आत्माओं को

केवल इस संसार में बुलाया ही नहीं जा सकता, बल्कि उनसे अनेक प्रकार के कार्य भी करवाए जा सकते हैं। इन फुंगियों ने मुझे ऐसी कई घटनाएँ दिखाई थीं, जिनसे मुझे यह स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा कि उनमें कुछ विषयों में अलौकिक क्षमताएँ थीं।

इसके बाद मैं नौकरी के सिलसिले में पंजाब गया। उस समय इस स्थान पर परलोक-तत्त्व की चर्चा लगभग नहीं के बराबर थी। लाहौर, अमृतसर, मुल्तान, डेरा इस्माइल ख़ाँ, रावलपिंडी आदि स्थानों में मैंने इस विषय में पर्याप्त अनुसंधान किया, लेकिन मुझे सफलता नहीं मिली।

इसके बाद मैं संयुक्त प्रांत पहुँचा। ठीक इसी समय मुझे कुछ महीनों के लिए कलकत्ता जाना पड़ा। उस समय बागबाज़ार में घोष परिवार के घर पर परलोक-तत्त्व के संबंध में कुछ-कुछ चर्चा होती थी। वे "Psychic ..." नामक एक अंग्रेज़ी मासिक पत्रिका भी प्रकाशित करते थे। उनकी दो बैठकों में मैं उपस्थित था। उनकी आत्मा बुलाने की पद्धति देखकर मुझे कुछ दिन पहले विनिस साहब के बंगले में जो कुछ देखा था, उसकी याद आ गई। ("मृत्यु के बाद" पुस्तक की प्रस्तावना देखें।) लेकिन मैं इस पद्धति को ठीक वैज्ञानिक नहीं कह सकता था।

कॉलेज छोड़ने के बाद से ही मेरी इंग्लैंड और अमेरिका जाने की इच्छा थी, लेकिन अनेक प्रकार की घटनाओं के कारण अब तक उस इच्छा को पूरा करने का अवसर नहीं मिला था। उस समय प्रसिद्ध सर आर्थर कॉनन डॉयल साहब जीवित थे। लगभग एक वर्ष से मेरा उनके साथ पत्र-व्यवहार चल रहा था। कलकत्ता से लौटने के बाद उन्होंने मुझे इंग्लैंड आने के लिए आमंत्रित किया और ऐसी व्यवस्था कर दी, जिससे बहुत कम खर्च में मेरा आना-जाना संभव हो सके। ऐसा अवसर शायद भविष्य में फिर कभी न मिले—यह सोचकर मैं इंग्लैंड के लिए रवाना हुआ।

## द्वितीय परिच्छेद

## आत्मा को बुलाना

बहुत दिनों से यूरोप और अमेरिका में एक दल यह प्रचार कर रहा था कि मनुष्य के शरीर त्यागने के बाद उसकी आत्मा सूक्ष्म शरीर में रहती है, क्योंकि आत्मा अमर है। यदि यह आत्मा किसी प्रकार किसी जीवित मनुष्य के शरीर से शक्ति प्राप्त कर सके, तो वह अनेक उपायों से अपने अस्तित्व को हमारे सामने प्रकट करती है।

जिस मनुष्य से आत्मा शक्ति प्राप्त करती है, उसे अंग्रेज़ी में “मीडियम” कहते हैं। इस पुस्तक में हम उसे “सहायक” कहेंगे।

आत्मा निम्नलिखित प्रकार से हमारे सामने प्रकट होती है—

**(१)** जब आत्मा हमारे पास उपस्थित होती है, तो वह एक निश्चित मेज़ पर "खट-खट" की आवाज़ करती है। यदि एक बार आवाज़ हो तो "हाँ" और दो बार हो तो "नहीं" प्रकट किया जाता है। तुम शायद पूछो, "क्या तुम अमुक व्यक्ति की आत्मा हो?" यदि दो बार "खट-खट" की आवाज़ हो, तो समझना होगा कि तुम्हारा अनुमान सही नहीं है।

इस प्रकार बातचीत करना बहुत कठिन और अधिक समय लेने वाला है। इसीलिए इसे प्रायः लोग पसंद नहीं करते।

**(२)** आत्मा के उपस्थित होने पर वस्तुएँ अपने-आप एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जाने लगती हैं। तुम शायद उस अदृश्य आत्मा से कहो, "यदि तुम सचमुच यहाँ आई हो, तो मेज़ के ऊपर से मेरी टोपी लाकर मुझे पहना दो।" कई बार बड़ी-बड़ी कुर्सियाँ या मेज़ें एक स्थान से दूसरे स्थान तक हवा में चलती हुई दिखाई देती हैं। कभी-कभी ऐसा भी देखा जाता है कि कोई व्यक्ति कुर्सी सहित चार-पाँच फुट तक हवा में उठ गया है।

**(३)** मृत व्यक्ति की आत्मा को बुलाने की प्रक्रिया को "सीआँस" कहा जाता है। एक मेज़ के चारों ओर लोग हाथ पकड़कर बैठते

हैं। मेज़ के ऊपर दो-एक मोमबत्तियाँ, एक वाद्य-यंत्र और कुछ ताज़े, सुगंधित फूल रखे जाते हैं।

यदि आगंतुक आत्मा बातचीत करना चाहती है, तो निम्नलिखित में से किसी एक उपाय का सहारा लिया जाता है—

**(क)** आत्मा माध्यम के मुख से अपनी बात कहती है। आत्मा की इस संसार में जैसी आवाज़ थी, माध्यम ठीक उसी स्वर में बोलता है।

**(ख)** ऊपर बताए गए एक छोटे-से यंत्र के भीतर से आत्मा की आवाज़ सुनाई देने लगती है।

**(ग)** किसी भी माध्यम का सहारा लिए बिना आत्मा की बातें सीधे सुनाई देने लगती हैं।

**(४)** आत्मा कभी-कभी लिखकर अपने मन के भाव प्रकट करती है। सामान्यतः स्लेट और पेंसिल की सहायता से यह कार्य किया जाता है। एक स्लेट के ऊपर एक पेंसिल रखकर दूसरी स्लेट से...

दूसरी स्लेट से ढक दिया जाता है। इसके बाद इन दोनों स्लेटों को कागज़ में लपेटकर सूतली या पतले तार से बाँध दिया

जाता है। कुछ समय बाद स्पष्ट रूप से सुनाई देता है कि कोई स्लेट के ऊपर लिख रहा है। लिखने की आवाज़ बंद हो जाने पर स्लेट खोली जाती है। दर्शक ने मन-ही-मन जो प्रश्न किया था, उसका उत्तर स्लेट के ऊपर लिखा हुआ दिखाई देता है।

**(५)** कभी-कभी अँधेरे कमरे में लाल रंग के प्रकाश का एक गोला दिखाई देता है। इस प्रकार का प्रकाश प्रकट होने पर यह माना जाता है कि उस कमरे में आत्मा का आविर्भाव हुआ है।

**(६)** कभी-कभी आगंतुक आत्मा एक भौतिक शरीर धारण करके दर्शकों के सामने उपस्थित होती है। इस संसार में आत्मा का जैसा भौतिक शरीर था, उसका यह नया शरीर भी ठीक वैसा ही होता है। कुछ लोग कहते हैं कि इस शरीर में आत्मा अनेक प्रकार के कार्य करने में समर्थ होती है। यह बात कितनी सत्य है, मैं नहीं कह सकता, क्योंकि इस प्रकार की घटना मैंने स्वयं कभी नहीं देखी। लेकिन मेरा विश्वास है कि शरीर धारण किए हुए आत्मा के लिए इस प्रकार का कार्य करना बिल्कुल असंभव नहीं है।

ऊपर आत्मा के प्रकट होने के जिन सात उपायों का वर्णन किया गया है, उनमें भौतिक शरीर धारण करना सबसे कठिन है। बहुत ही कम संख्या में आत्माएँ ऐसा कर पाने में समर्थ होती हैं।

**(७)** मैंने परलोकगत आत्माओं के चित्र खींचे जाते हुए अपनी आँखों से अवश्य देखे हैं, लेकिन इस विषय में मैं कोई निश्चित मत व्यक्त नहीं करूँगा। इनके पीछे किसी प्रकार की धोखाधड़ी या चालबाज़ी नहीं है, ऐसा मैं निःसंदेह नहीं कह सकता। फिर भी मैं यह भी नहीं मानता कि यह असंभव है।

**अमेरिका के प्रेततत्त्व का परिणाम — युद्ध : उसका परिणाम**

**अमेरिका में प्रेततत्त्व पर लेख-युद्ध और उसका परिणाम**

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में जब इंग्लैंड के अनेक स्थानों पर परलोक-तत्त्व का वास्तविक वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन आरंभ हुआ और देश के अनेक प्रसिद्ध दार्शनिक तथा वैज्ञानिक उसके समर्थन में खड़े हुए, तब उसका प्रभाव अमेरिका तक पहुँचने में देर नहीं लगी।

इससे पहले अमेरिका में परलोक-तत्त्व के संबंध में आम जनता में विशेष रुचि दिखाई नहीं देती थी। जो लोग इसके पक्ष में कुछ कहना चाहते थे, वे जब इंग्लैंड में इस विषय को लेकर प्रबल आंदोलन आरंभ हुआ, तब भी अमेरिका पर उसके प्रभाव को स्वीकार करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे। दोनों पक्षों में सभ्य भाषा की सीमा के भीतर एक-दूसरे को खूब खरी-खोटी सुनाई जाने लगी।

जब प्रेततत्त्ववादियों ने तरह-तरह के प्रमाण प्रस्तुत करके विरोधी पक्ष को परास्त नहीं कर पाया, तब उन्होंने कहा कि जब इंग्लैंड के बड़े-बड़े लोग इसका समर्थन कर रहे हैं, तो इसे स्वीकार न करना केवल हठधर्मिता है। विरोधी पक्ष ने कहा कि बड़े-बड़े लोग मूर्ख बन गए हैं, इसलिए यह आवश्यक नहीं कि हर कोई भी मूर्ख बन जाए।

कुल मिलाकर, उस समय अमेरिका में कोई अच्छा प्रेततत्त्वज्ञ न होने के कारण इस विवाद का कोई समाधान नहीं हो सका।

**Scientific American** अमेरिका की अत्यंत प्रतिष्ठित वैज्ञानिक संस्थाओं में से एक थी। इस संस्था से प्रकाशित होने वाली एक पत्रिका भी इसी नाम से प्रसिद्ध थी। संसार भर में उसका बहुत सम्मान था। देश में इस प्रकार का विवाद देखकर उन्होंने घोषणा की कि प्रेततत्त्व के पक्ष और विपक्ष—दोनों पक्षों के लोग उनकी पत्रिका में इस विषय पर लेख प्रकाशित करें। इसके बाद एक निष्पक्ष समिति इस विषय की जाँच करके अपना मत प्रस्तुत करेगी।

दोनों पक्षों ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और **Scientific American** पत्रिका में लेख लिखना आरंभ कर दिया।

यह लेख-युद्ध कुछ दिनों तक चलने के बाद **[नाम अस्पष्ट]** ने एक लेख प्रकाशित किया। उसमें यूरोप और अमेरिका के अनेक बड़े-बड़े लोगों के मत उद्धृत करके उन्होंने प्रमाणित करने का प्रयास किया कि प्रेततत्त्व का पूरा विषय ही धोखाधड़ी है। इस लेख में जिन लोगों के विचार दिए गए थे, उनमें से अनेक उस समय विश्वविख्यात थे और अपने-अपने क्षेत्र में दिग्गज माने जाते थे।

इस लेख के प्रकाशित होने के बाद प्रेततत्त्ववादियों की स्थिति बहुत कमजोर हो गई।

जासूसी कहानियाँ लिखने वाले प्रसिद्ध **[नाम अस्पष्ट]** का नाम बहुत लोग जानते हैं। वे इंग्लैंड के एक कट्टर प्रेततत्त्ववादी थे। उपर्युक्त लेख प्रकाशित होने के कुछ महीनों बाद **[पाठ अस्पष्ट]** में...

इसके बाद श्री 1895 साहब का एक लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने बहुत स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि श्री 9155 साहब ने अपने लेख में जिन बड़े-बड़े लोगों के नाम उद्धृत किए थे, उनमें दो-एक सामान्य लोगों को छोड़कर किसी ने भी परलोक-तत्त्व के संबंध में किसी प्रकार का मत व्यक्त नहीं किया था। श्री 1895 साहब ने श्री 0. 1)90510 के लेख का कोई खंडन न किया,

इसलिए सब समझ गए कि 917 साहब किस प्रकार के व्यक्ति थे। निस्संदेह, इसके बाद यह लेख-युद्ध समाप्त हो गया।

इसके बाद श्री 0. 1)051 साहब ने 00110 47007 के अधिकारियों के सामने निम्नलिखित प्रस्ताव रखा—"मुझे लगता है कि आप लोग प्रेततत्त्व के संबंध में सही जानकारी प्राप्त करने के लिए विशेष रूप से इच्छुक हैं। अतः मेरा प्रस्ताव है कि आप एक या एकाधिक निष्पक्ष और शिक्षित व्यक्तियों को इंग्लैंड भेजें। अब तक हमने इस विषय में जो भी वैज्ञानिक प्रमाण एकत्र किए हैं, वे आकर उनका अच्छी तरह निरीक्षण करें। यदि वे इन प्रमाणों से संतुष्ट न हों, तो मैं वचन देता हूँ कि ऐसी स्थिति में मैं सार्वजनिक रूप से स्वीकार करूँगा कि प्रेततत्त्व हमारी कपोल-कल्पना है। लेकिन जिन्हें आप भेजेंगे, वे जो कुछ अपनी आँखों से देखें, उसे ईमानदारी से स्वीकार करें।"

यह एक प्रकार से "युद्धं देहि" वाली चुनौती थी।

तृतीय परिच्छेद १९

अंततः £&/097681 को विवश होकर इस प्रस्ताव को स्वीकार करना पड़ा। इसके बाद यह निश्चित हुआ कि इंग्लैंड में 116101) की सहायता से आने वाली आत्मा जो-जो कार्य दिखाएगी, अमेरिका का प्रतिनिधि उन सबकी यथासंभव सूक्ष्म

जाँच करेगा और यह पता लगाएगा कि वे वास्तव में प्रेत के कार्य हैं या उनमें कोई छल-कपट अथवा चालाकी है।

बहुत-सी बहस के बाद यह तय हुआ कि 99921100 £&7705010 के 48९९०0716 150100755 के माध्यम से, एन 01001) 117 साहब अमेरिका के प्रतिनिधि के रूप में इंग्लैंड जाएँगे। तब 7)051 को यह समाचार देकर उनसे विशेष रूप से अनुरोध किया गया कि वे 73771 साहब की वास्तविक पहचान किसी को न बताएँ और यह भी न बताएँ कि वे इंग्लैंड क्यों जा रहे हैं।

उपर्युक्त अनुरोध का एक विशेष कारण था। प्रेततत्त्व के विरोधी कहते थे कि हम पूरी वैज्ञानिक रीति से दूसरे व्यक्ति के मन की बात जान सकते हैं। अंग्रेज़ी में इसे £51710-१1102:81197) और 11000081076 कहते हैं। व्यक्ति कौन है, यह मालूम न हो तो उसके मन की बात जानना प्रायः असंभव हो जाता है।

यहाँ एक बात का उल्लेख किए बिना मैं नहीं रह सकता। प्रेत 8190101) की सहायता से जो कुछ कहा जाता है, उसे विरोधी पक्ष &00-50209909 कहकर उड़ा देते थे।

वे कहना चाहते हैं—अर्थात जब कोई व्यक्ति 119109] से कोई प्रश्न करता है, तो उसका सही उत्तर कथित रूप से प्रश्न पूछने वाले के मन में ही रहता है। इसलिए 11811007 के लिए उस

प्रश्न का उत्तर देना बहुत आसान है। चलिए, आपकी खातिर यह मान भी लिया कि 119878)) इस 401914488190 के माध्यम से पूछे गए प्रश्न का सही उत्तर देने में समर्थ है।

लेकिन जैसा कि मैंने द्वितीय परिच्छेद में कहा है, आत्माएँ 10० प्रकार के कार्य करने में समर्थ होती हैं। इनमें से कोई भी कार्य 40०६ 170 द्वारा करना संभव नहीं है। यह किस प्रकार होता है, यह आज तक कोई नहीं बता सका है। उचित स्थान पर पाठक इसका विस्तृत विवरण देख पाएँगे।

## चतुर्थ परिच्छेद

### इंग्लैंड में प्रथम 3६7०५ का आयोजन

जब मैं इंग्लैंड पहुँचा, उसके ठीक छह दिन पहले अमेरिका से बार्ड साहब आ चुके थे। इस विषय में अधिक कुछ कहने से पहले दो-एक "अवांतर बातों" का उल्लेख आवश्यक समझता हूँ।

उस समय प्रेततत्त्व की चर्चा के लिए इंग्लैंड की सबसे श्रेष्ठ संस्था 1) (90116 01 ४১৯৪ ० ) ५१०19033 थी; 1), 11091 ১101501%6 उस समय उसके अध्यक्ष थे। मृत्यु के बाद आत्मा के अस्तित्व के संबंध में यह कॉलेज किसी प्रकार की शिक्षा नहीं देता था, क्योंकि उसके मत में यह स्वयंसिद्ध था। यहाँ

विभिन्न वैज्ञानिक प्रमाणों के प्रयोग द्वारा यह समझाया जाता था कि आत्मा का अस्तित्व है और हम उसे आसानी से इहलोक में बुला सकते हैं। उस समय परलोक-तत्त्व के अध्ययन के लिए इसे समस्त सभ्य संसार में सर्वोत्तम स्थान माना जाता था।

जब मैं इंग्लैंड पहुँचा, तब देखा कि बार्ड साहब के लिए 9०800० की तैयारी चल रही थी। उपर्युक्त 11910 (:01199 कॉलेज के अध्यक्ष [09719 साहब और €0. [०019 इस आयोजन के मुख्य कार्यकर्ता थे। सबसे पहले प्रस्ताव...

यह प्रस्ताव किया गया था कि यह 36076 कॉलेज में ही आयोजित किया जाए। लेकिन 311 साहब ने आपत्ति की। उन्होंने कहा, “यह ऐसे स्थान पर होना चाहिए, जहाँ इंग्लैंड के किसी व्यक्ति का तनिक भी अधिकार न हो।”

इस तर्क-वितर्क के समय मैं वहाँ उपस्थित था। जब बार्ड साहब को पता चला कि मैं परलोक-तत्त्व के अनुसंधान के लिए भारत से आया हूँ, तो उन्होंने प्रस्ताव किया कि इस 89804 के लिए स्थान का चयन मैं और वे दोनों मिलकर करें। 100८0 को कोई आपत्ति न होने पर हमने दो दिन तक खोजबीन करने के बाद कॉलेज के निकट ही एक कमरा चुन लिया।

इस स्थान की विशेषताएँ थीं—(1) कमरे में एक दरवाजे और एक खिड़की के अतिरिक्त आने-जाने का कोई अन्य मार्ग नहीं था। रास्ते कम होने के कारण हमारी निगरानी भी उसी अनुपात में आसान होती। हम दोनों ने निश्चित किया कि 8०1)0. के समय दरवाजे और खिड़की के पास दो उपयुक्त व्यक्ति बैठाए जाएँ, ताकि कोई बाहरी व्यक्ति भीतर न आ सके। क्योंकि हमने सुना था कि १०४7०० के समय कमरे को अँधेरा कर दिया जाता है। उस अँधेरे में कोई बाहरी व्यक्ति कमरे में आकर 8197190) से बातचीत न कर सके, इस पर निगरानी रखना हमें आवश्यक लगा।

(2) 3०/0५५ कमरे के आसपास ऐसा कोई स्थान नहीं था, जहाँ से कोई व्यक्ति कुछ बोलने पर ऐसा प्रतीत हो कि वह आवाज़ 998700-:00 के भीतर से आ रही है।

जिस कमरे को हमने चुना था, उसमें ऊपर बताए गए प्रकार की कोई चालाकी करने का उपाय नहीं था।

उस समय इंग्लैंड में क्लोन (817. 918), पाउएल (8७ ऽ1001), श्रीमती अॅसर्ण लियोनार्ड (0८. 0ऽ ) 90779 1,५0-1811), विलियम होप (8101- 11:10) [1080 आदि अच्छे माध्यम के रूप में प्रसिद्ध थे। हमारे पहले १००)) में हमने क्लोन को माध्यम के

रूप में चुना था। इसके लिए हमने उन्हें प्रति सत्र एक गिनी पारिश्रमिक दिया था।

विरोधी कहते हैं, “जब माध्यम फीस लेता है, तो अपनी कार्य-कुशलता दिखाने के लिए लोगों को धोखा देगा—इसमें आश्चर्य ही क्या है? यदि वह १०/)०० में कोई अलौकिक घटना न दिखा सके, तो लोग उसे फीस देकर क्यों बुलाएँगे? इन सभी 10110) और जादूगरों में विशेष कोई अंतर नहीं है।”

बंगला में एक कहावत है—“जिसे देख नहीं सकता, उसके चलने में भी टेढ़ापन निकालता है”, अर्थात जिसे मैं अच्छा नहीं मानता, उसमें कोई न कोई दोष निकालना बहुत आसान है। तुम 16० लो, इसलिए तुम अच्छे नहीं हो सकते। यदि तुम 199 न लेते, तो शायद मैं तुम्हें अच्छा कह सकता। यही...

इस प्रकार के तर्क देने में जिन्हें तनिक भी लज्जा नहीं होती, उनके विषय में अधिक कुछ कहना अनावश्यक है।

वे यह भूल जाते हैं कि माध्यम भी मनुष्य हैं। अन्य सभी लोगों की तरह माध्यमों की भी स्त्री, पुत्र, कन्या आदि होते हैं और उनका भरण-पोषण करना पड़ता है। यहाँ यह भी कहना आवश्यक है कि यूरोप और अमेरिका में ऐसे माध्यम भी हैं जो कोई पारिश्रमिक नहीं लेते। भारतवर्ष में भी मुझे इस प्रकार का

एक माध्यम मिला था। उसके विषय में उचित स्थान पर वर्णन करूँगा।

## चतुर्थ परिच्छेद

### इंग्लैंड का प्रथम 308106

संध्या होने से कुछ पहले मैं 98000 के निर्धारित स्थान पर पहुँचा और देखा कि 1)010 13711 तथा पाँच अन्य अपरिचित व्यक्ति वहाँ बैठे हुए हैं। इन पाँच व्यक्तियों में से एक श्री स्लोन थे। आज 191101) का "कार्य" इन्हीं के द्वारा किया जाना था। इसके बाद भी उनसे मेरी कई बार भेंट हुई। उन मुलाकातों से मैंने समझा कि वे अत्यंत सरल स्वभाव के और विशेष रूप से सीधे-सादे व्यक्ति थे। ऐसा व्यक्ति किसी को धोखा दे सकता है, यह मैं कल्पना भी नहीं कर सकता।

शेष चारों व्यक्ति अमेरिका के रहने वाले और 131 साहब के विशेष मित्र थे। इनमें से दो 10770० में उपस्थित रहने वाले थे और अन्य दो 30170 कक्ष के दरवाजे तथा खिड़की के बाहर बैठकर पहरा देने वाले थे। उद्देश्य यह था कि बाहर का कोई व्यक्ति माध्यम की सहायता न कर सके।

मेरे विचार से इस प्रकार की सावधानी की कोई आवश्यकता नहीं थी। 1)01८ साहब जैसे व्यक्ति किसी प्रकार की चालाकी को बढ़ावा देंगे—ऐसा मुझे नहीं लगता। लेकिन यह याद रखना होगा कि 91 साहब अमेरिका की एक विश्वविख्यात संस्था के प्रतिनिधि बनकर आए थे।

उन्होंने इस 588700 को इस प्रकार सम्पन्न कराने की व्यवस्था की थी कि भविष्य में कोई व्यक्ति किसी प्रकार की आपत्ति न उठा सके। उस शाम 1898099 में माध्यम सहित कुल छह लोगों के उपस्थित रहने का निश्चय हुआ था। इन छह लोगों में तीन गामोरबान, बार्ड और बार्ड के मित्र थे। 19510 साहब ने कहा कि माध्यम को इन तीनों तथा मेरे संबंध में किसी प्रकार की जानकारी नहीं है। यहाँ तक कि हममें से किसी का नाम भी उसे पहले से नहीं बताया गया था।

ठीक संध्या के समय हम निर्धारित कमरे में प्रवेश कर गए। उसके ठीक बीच में एक गोल मेज के चारों ओर छह कुर्सियाँ थीं। मेज पर फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता, एक चोव, दो स्लेट और एक छोटा हारमोनियम रखा था। [314 ने मुझे बताया कि कमरे में रखी ये सभी वस्तुएँ उन्होंने स्वयं जुटाई थीं। 19716 या माध्यम का इसमें किसी प्रकार का हाथ नहीं था।

हमारे बैठने की व्यवस्था पहले इस प्रकार थी—मेरे दाहिनी ओर बार्ड, उसके बाद दो अमेरिकी, फिर 1)0८1० और उसके बाद माध्यम—अर्थात् माध्यम मेरे और 1)051 के बीच बैठने वाला था।

हम सबके अपने-अपने स्थान पर बैठने से पहले माध्यम अपनी निर्धारित कुर्सी पर बैठ गया। तब बार्ड और उसके दो मित्रों ने माध्यम के हाथ-पैर रेशमी डोरी (818९) से इस प्रकार बाँध दिए कि हाथ-पैर से किसी प्रकार का काम करना तो दूर, वह उन्हें तनिक भी हिला न सके। जहाँ-जहाँ गाँठ लगाई गई थी, वहाँ एक-एक छोटा कागज़ रखकर उस पर बार्ड साहब के नाम की मुहर की छाप लगा दी गई।

बाद में बार्ड साहब ने मुझे बताया कि माध्यम को बाँधना होगा, यह उन्होंने पहले ही तय कर लिया था। इसलिए वे यह बाँधने की विधि एक विशेष रूप से अनुभवी नाविक से सीखकर आए थे।

लेकिन बातचीत से ऐसा लगा कि 1)0)19 साहब माध्यम को इस प्रकार बाँधने से कुछ अप्रसन्न और दुखी हुए थे। उन्होंने स्पष्ट कहा कि माध्यम को इस तरह बाँधने से परलोकवासी आत्माएँ

शायद इसे अपना अपमान समझें और संभव है कि इसी कारण वे प्रकट ही न हों।

लेकिन स्लोन ने कहा, “41)))10 साहब, आपत्ति मत कीजिए। मेरा विचार है कि आत्माएँ इससे नाराज़ होने के बजाय प्रसन्न ही होंगी। इस बंधन से उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा। आप याद रखिए कि आज अमेरिका हमारी परीक्षा ले रहा है। हमें ऐसा हर संभव उपाय करना होगा जिससे किसी के मन में तनिक भी संदेह न रहे।”

इसके बाद 1)०51० साहब 4[950, 7२00415 1527)57 तथा बार्ड के एक मित्र ०00१810) 010180810 3910608८...

भजन दो बार लगातार गाए गए। दूसरा गीत समाप्त होते ही हम स्पष्ट रूप से समझ गए कि माध्यम अत्यंत बेचैन हो उठा है। (कहना भूल गया था कि कमरे में एक छोटी मोमबत्ती के अतिरिक्त कोई और प्रकाश नहीं था। उसे भी इस प्रकार मोटे कपड़े के पर्दे से ढककर रखा गया था कि कमरे में लगभग कोई प्रकाश था ही नहीं।) उस मंद प्रकाश में जितना स्पष्ट संभव था, मैं माध्यम को देख रहा था। मुझे ऐसा लगा कि उस समय एक क्षण के लिए माध्यम के ऊपर कोई अद्भुत प्रकाश आ

पड़ा, लेकिन अगले ही क्षण वह दिखाई नहीं दिया। इसके बाद कुछ और 3०77:५ए में भी मैंने ऐसी ही बात देखी।

इस प्रकाश के प्रकट होते ही माध्यम के मुँह से एक भुतहा स्वर में, टूटी-फूटी और अशुद्ध अंग्रेज़ी में ये शब्द निकले—"मेरे पास यह व्यक्ति बहुत दूर से आया है—भारत से। यह हमारे संसार की सही जानकारी एकत्र करने आया है—इसीलिए मैं इसकी प्रशंसा करता हूँ।"

बार्ड धीमे स्वर में बोले, "आश्चर्य! मैं जानता हूँ कि यह कोई श्वेत व्यक्ति नहीं हो सकता। यह निश्चित रूप से कोई 1२०५ 170171) है।" (अमेरिका के आदिम निवासियों को इस नाम से संबोधित किया जाता है।)

जब मेरी ओर संकेत करके ये बातें कही गईं, तब मुझे विवश होकर पूछना पड़ा, "तुम कौन हो? तुम कहाँ के रहने वाले हो?"

स्वर ने कहा, "मैं कहाँ का हूँ, यह कहने पर तुम समझ नहीं पाओगे। एक समय मैं अमेरिका के एक बड़े देश का सरदार था।"

मैंने पूछा, "तुम्हें उस पार गए कितने दिन हुए?"

स्वर—"ओह, बहुत समय हो गया। इस पार हम समय का हिसाब तुम्हारी तरह नहीं रखते। जब मैंने अपना भौतिक शरीर छोड़ा, तब इस देश के सिंहासन पर कोई जेम्स बैठा हुआ था।"

मैंने पूछा, "कौन-सा जेम्स—पहला या दूसरा?"

स्वर—"मैं तो केवल एक जेम्स के बारे में जानता हूँ।"

यदि यह बात सत्य है, तो उसकी मृत्यु लगभग 300 वर्ष पहले हुई थी।

इसके बाद इस आत्मा ने बार्ड साहब से बातचीत शुरू की। बार्ड इस देश में क्यों आए हैं, इंग्लैंड से शीघ्र ही वे किस दूसरे देश में जाएँगे—बार्ड ने मन ही मन फ्रांस और ऑस्ट्रिया जाने का निश्चय किया था, लेकिन यह बात हममें से किसी को भी मालूम नहीं थी—आदि जो-जो बातें उस आत्मा ने बार्ड से कहीं, वे सभी बिल्कुल सही निकलीं।

बार्ड साहब ने बाद में मुझे बताया कि इसे ०८०-80089० के आधार पर नहीं समझाया जा सकता, क्योंकि उन्होंने आत्मा से कोई प्रश्न नहीं पूछा था; आत्मा ने स्वयं ही उपर्युक्त बातें बताई थीं। यदि कोई व्यक्ति कोई प्रश्न करता है, तो कई बार उस प्रश्न का उत्तर प्रश्नकर्ता के मन में ही मौजूद हो सकता है।

इस स्थिति में शायद प्रश्न का उत्तर प्रश्नकर्ता के मन से ही लेकर बताया जा सकता है। एक और बात है—जो लोग मन की बात पढ़ने की बात कहते हैं, उन्हें प्रश्नकर्ता के चेहरे के भाव को बहुत ध्यान से देखना पड़ता है। लेकिन इस मामले में मीडियम की आँखें बंद थीं, वह अचेत अवस्था में पड़ा था और कमरे में लगभग कोई प्रकाश भी नहीं था। ऐसी स्थिति में मीडियम के लिए बर्ड साहब के चेहरे के भाव देख पाना असम्भव था।

बाद में मैंने सुना कि जिस प्रेतात्मा ने मेरे और बर्ड साहब के साथ बातचीत की थी, उसने स्लोन के माध्यम से यह पहली बार किया था। बर्ड साहब से बातचीत के बाद वह आत्मा अदृश्य हो गई, मानो उसे यह पता चल गया हो कि आज के सीआन्स में हम दोनों ही मुख्य दर्शक हैं।

इसके बाद बाजे के भीतर से बातचीत होने लगी। क्रमशः तीन और आत्माएँ इस प्रकार प्रकट हुईं, लेकिन इनमें से प्रत्येक एक मिनट से अधिक समय तक नहीं रही। वे तीनों अलग-अलग आत्माएँ थीं, यह उनकी आवाज़ से ही स्पष्ट रूप से समझ में आ गया। उनमें से एक फ्रांसीसी व्यक्ति था। उसने एक विचित्र मिश्रित भाषा में बात की—उसमें लगभग बारह आने फ्रांसीसी भाषा और शेष टूटी-फूटी अंग्रेज़ी थी।

इस सीआन्स में कुल चार आत्माओं का आविर्भाव हुआ था।

पहली आत्मा ने मीडियम के मुँह से बात की थी; अंतिम तीन ने बाजे के मुँह से। उन चारों की भाषा, आवाज़, बोलने का ढंग आदि सब एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे। उनमें तनिक भी समानता नहीं थी। इसलिए हम सभी को स्वीकार करना पड़ा कि ये चारों पूर्णतः अलग-अलग व्यक्ति थे।

इन तीनों के चले जाने के बाद बाजा मेज से उठकर हवा में ऊपर गया और बहुत धीरे-धीरे हममें से प्रत्येक के सिर को स्पर्श करता हुआ चला गया। स्लोन ने कहा कि यह पहले आने वाली आत्मा की ओर से विदाई का अभिवादन था।

इस सीआन्स के समाप्त होने के बाद मैंने बर्ड साहब से इसके संबंध में उनकी राय पूछी। उन्होंने कहा:

"मैं स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ कि यहाँ मेरी बुद्धि ने हार मान ली है। सबसे पहले जिसकी आवाज़ मैंने सुनी, वह एक अमेरिकी आदिवासी था—यह बात मैं लगभग निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ। जिस प्रकार से उसने बात की, उसकी नकल कोई अंग्रेज या अमेरिका का कोई श्वेत व्यक्ति नहीं कर सकता। बाजे के हवा में घूमने की घटना तो आपने स्वयं अपनी आँखों से देखी है। उस समय मैं मीडियम पर विशेष रूप से नज़र रखे

हुए था। मैं यह प्रमाणित कर सकता हूँ कि बाजे में उसका तनिक भी हाथ नहीं था।”

## विलायत की एक और सीआन्स

बर्ड साहब ने इंग्लैंड में सबसे प्रसिद्ध पार्टी की कुछ सीआन्स आयोजित कीं। उनमें से चार में मुझे भाग लेने का अवसर मिला। इनमें दूसरी और चौथी सीआन्स लगभग पहली जैसी थीं, इसलिए मैंने उनका वर्णन करना आवश्यक नहीं समझा। लेकिन तीसरी बिल्कुल नए प्रकार की थी, इसलिए मैं पाठकों के सामने उसका विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। बर्ड साहब के अनुसार यह तीसरी सीआन्स सबसे अच्छी थी। इसे देखने के बाद मुझे भी स्वीकार करना पड़ा कि इंग्लैंड आने में जो सारी कठिनाइयाँ मैंने उठाई थीं, वे केवल इसी एक सीआन्स के कारण सार्थक हो गईं।

इस पुस्तक के चतुर्थ परिच्छेद में मैंने मिस्टर पाउएल का नाम उल्लेख किया है। बर्ड साहब के मत में उनके जैसा कुशल मीडियम इंग्लैंड में और कोई नहीं था। अमेरिकी प्रतिनिधि भी एक प्रकार से इसे स्वीकार करते थे। एक रविवार को उन्होंने एक सीआन्स में मीडियम का कार्य किया था। बर्ड साहब वहाँ उपस्थित नहीं थे। सुना गया कि उस सीआन्स में पाउएल ने एक अद्भुत घटना दिखाई। अगले दिन (सोमवार) बर्ड साहब ने

यह कहानी सुनकर उसी दिन उन्हें मीडियम बनाकर एक और सीआन्स आयोजित की।

इस स्थिति में संभवतः प्रश्न का उत्तर प्रश्नकर्ता के मन से ग्रहण करके दिया जा सकता है। एक और बात है—जो लोग मन की बात पढ़ने का दावा करते हैं, उन्हें प्रश्नकर्ता के चेहरे के हाव-भाव को बहुत ध्यान से देखना पड़ता है। इस मामले में माध्यम ने आँखें बंद कर रखी थीं और बेहोशी की अवस्था में मृतवत् पड़ा हुआ था, तथा इस कमरे में नाममात्र का ही प्रकाश था। ऐसी स्थिति में माध्यम के लिए बर्ड साहब के चेहरे के भाव देख पाना असंभव था।

बाद में मुझे पता चला कि जिस प्रेतात्मा ने मेरे और बर्ड साहब के साथ बातचीत की थी, वह श्लोन के माध्यम से पहली बार प्रकट हुई थी। बर्ड साहब के साथ बातचीत के बाद वह आत्मा अदृश्य हो गई, मानो उसे यह ज्ञात हो गया हो कि आज के इस सत्र में हम दोनों ही मुख्य दर्शक हैं।

इसके बाद स्लेट के भीतर से बातचीत होने लगी। लगातार तीन अन्य आत्माएँ इस प्रकार प्रकट हुईं, लेकिन इनमें से प्रत्येक पंद्रह मिनट से अधिक समय तक नहीं रही। उनकी आवाज़ों से ही स्पष्ट समझ में आ गया कि वे तीनों अलग-अलग आत्माएँ

थीं। उनमें से एक फ्रांसीसी व्यक्ति था। उसने एक विचित्र मिली-जुली भाषा में बात की, जिसमें लगभग बारह आने के बराबर फ्रांसीसी भाषा और शेष टूटी-फूटी अंग्रेज़ी थी।

इस सत्र में कुल चार आत्माएँ प्रकट हुई थीं।

पहली आत्मा ने माध्यम के मुँह से बात की थी और अंतिम तीन ने स्लेट के माध्यम से। इन चारों की भाषा, आवाज़, बोलने का ढंग आदि सभी एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे। उनमें आपस में रत्ती भर भी समानता नहीं थी। हम सभी को स्वीकार करना पड़ा कि ये चारों पूर्णतः अलग-अलग व्यक्ति थे।

इन तीनों के चले जाने के बाद स्लेट मेज़ से उठी और बहुत धीरे-धीरे हममें से प्रत्येक के सिर को स्पर्श करती हुई चली गई। श्लोन ने बताया कि यह पहली बार आई हुई आत्मा की ओर से विदाई का अभिवादन था।

यह सत्र समाप्त होने के बाद मैंने बर्ड साहब से इस विषय में उनकी राय पूछी। उन्होंने कहा, “मैं स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ कि यहाँ मेरी बुद्धि ने मेरा साथ छोड़ दिया है। सबसे पहले जिस व्यक्ति की आवाज़ मैंने सुनी, वह निश्चित रूप से एक अमेरिकी आदिवासी था—यह बात शायद मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ। उसने जिस प्रकार बात की, उसकी नकल

कोई अंग्रेज़ या अमेरिकी श्वेत व्यक्ति नहीं कर सकता। स्लेट के घूमने की बात तो आपने स्वयं अपनी आँखों से देखी है। उस समय मैं माध्यम पर विशेष ध्यान दे रहा था। मैं यह कह सकता हूँ कि स्लेट पर उसका रत्ती भर भी हाथ नहीं था।”

## विलायत का एक और सत्र

बर्ड साहब ने इंग्लैंड में सबसे प्रतिष्ठित पार्टियों में से एक का आयोजन किया। उनमें से चार में मुझे शामिल होने का अवसर मिला। उनमें से दूसरा और चौथा सत्र लगभग पहले जैसा ही था, इसलिए मैंने उनका वर्णन करना आवश्यक नहीं समझा। लेकिन तीसरा सत्र बिल्कुल नए प्रकार का था, इसलिए उसे पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। बर्ड साहब के मत में यह सबसे उत्कृष्ट सत्र था। इसे देखने के बाद मुझे स्वीकार करना पड़ा कि इंग्लैंड आने में मुझे जो भी कष्ट उठाना पड़ा, वह केवल इसी एक सत्र के कारण सार्थक हो गया।

इस पुस्तक के चौथे परिच्छेद में मैंने पाउएल (Powell) का नाम उल्लेख किया है। बर्ड साहब के मत में उसके समान कुशल माध्यम इंग्लैंड में और कोई नहीं था। डॉसन भी किसी न किसी रूप में यही स्वीकार करते थे। एक रविवार को पाउएल ने एक सत्र में माध्यम का कार्य किया था। बर्ड साहब वहाँ उपस्थित

नहीं थे। सुनने में आया कि उस सत्र में पाउएल ने एक अद्भुत घटना दिखाई।

अगले दिन, सोमवार को, बर्ड साहब ने यह कहानी सुनकर उसी दिन उसे माध्यम बनाकर एक सत्र आयोजित करने की व्यवस्था की। आज दर्शकों की संख्या, माध्यम को छोड़कर, सात थी—बर्ड साहब, डॉसन, बर्ड साहब के मित्र अमेरिका के एक पादरी और उनकी पत्नी, बर्ड साहब के दो अमेरिकी मित्र और मैं।

हमारे पहले सत्र के लिए वही कमरा चुना गया। तय हुआ कि दोपहर चार बजे सत्र आरंभ होगा। समय कुछ नया-सा था। मुझे यह मालूम नहीं था कि सत्र शाम होने से पहले भी किया जा सकता है।

आरंभ होने से लगभग चालीस मिनट पहले हम घटनास्थल पर पहुँच गए। (बर्ड साहब, पादरी, उनकी पत्नी, मैं और बर्ड साहब के दो अमेरिकी मित्र।) हमारे पहुँचने से दो-तीन मिनट पहले ही डॉसन पाउएल को लेकर वहाँ आए थे। आते ही उन्होंने माध्यम से कहा, “आज विदेश के कुछ सज्जन यह जाँच करने आए हैं कि यह प्रेतात्माओं वाली चीज़ वास्तव में क्या है। ये देखना चाहते हैं कि सचमुच दूसरी दुनिया से प्रेतात्माएँ आती हैं या

माध्यम चालाकी करके लोगों को धोखा देता है। तुम हमारे देश के एक प्रसिद्ध माध्यम हो। तुम्हें इनकी परीक्षा में सहायता करनी चाहिए।”

पाउएल थोड़ा-सा मुस्कुराया, लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

इसके बाद डॉसन ने कहा, “आज इस कमरे के एक ओर, तीन फुट से अधिक स्थान न लेते हुए, पर्दे से एक छोटे ग्रीनरूम (Green-room) में बदलना होगा। इसका...”

सारी व्यवस्था मेरे द्वारा की जा रही थी। इस छोटे-से कमरे में एक छोटी मेज़, एक स्लेट, फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता आदि रखे जाने थे। सत्र के समय पर्दा गिरा रहेगा। यह नई व्यवस्था क्यों की गई थी, मैं नहीं जानता था।

जिस स्थान को घेरकर ग्रीनरूम बनाया गया था, उसमें न कोई दरवाज़ा था, न खिड़की और न ही कोई अन्य रास्ता। जहाँ हम बैठे थे, उस स्थान को पार किए बिना इस कमरे में जाने का और कोई उपाय नहीं था।

सत्र के लिए जिस प्रकार की व्यवस्था के बारे में हम पहले बता चुके हैं, इस बार भी लगभग वैसी ही व्यवस्था की गई। दर्शकों

की संख्या अधिक होने के कारण कुर्सियों की संख्या बढ़ा दी गई।

इसके बाद पाउएल ने अपना कोट उतार दिया और अपने कपड़ों की अच्छी तरह जाँच करवानी शुरू कर दी। इसके बाद उसके कोट की सभी जेबों, यहाँ तक कि उसकी लाइनिंग (lining) तक, हमने उसकी ही बात पर पूरी तरह जाँच ली। उसने जूते उतारकर एक जोड़ी चप्पल पहन ली।

पाउएल अपनी कुर्सी पर बैठने के बाद बोला, "आप लोग मुझे इस तरह बाँध दीजिए कि मैं ज़रा भी हिल न सकूँ!"

इसके लिए बर्ड साहब पहले से ही तैयार थे। लगभग साठ फुट लंबी एक डोरी (twine) से उन्होंने पहले उसके शरीर के चारों ओर और कुर्सी के साथ कई तरह से डोरी लपेटकर उसे इस प्रकार बाँधा कि वह अपने शरीर के किसी भी अंग को रत्ती भर भी हिला न सके।

जब यह बंधन पूरा हुआ, तब देखा गया कि उसके शरीर के विभिन्न स्थानों पर सत्ताईस गाँठें लगाई गई थीं और प्रत्येक गाँठ पर बर्ड साहब की मुहर लगा दी गई थी। इसके बाद रेशमी धागे की सहायता से उसे फिर से कुर्सी के साथ बाँधा गया और इस बार सैंतालीस गाँठें लगाई गईं।

बर्ड साहब पहले ही बता चुके थे कि उन्होंने यह बंधन करने की कला अमेरिका से सीखकर आए थे। इसलिए मैं काफी दृढ़ता से कह सकता हूँ कि इस कार्य में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं थी।

लेकिन पाउएल इससे संतुष्ट नहीं हुआ। उसके बार-बार अनुरोध करने पर उसके हाथ और पैरों को अलग-अलग उसकी कुर्सी के साथ कई तरह से घुमाकर और लपेटकर विशेष रूप से मजबूती से बाँधा गया।

पाठक ध्यान रखें कि माध्यम को तीन बार, तीन अलग-अलग प्रकार से बाँधा गया था—दो बार डोरी से और एक बार रेशमी धागे की सहायता से। उसके कंधों से लेकर पैरों के तलवों तक इस प्रकार बाँधा गया था कि वह अपने शरीर के किसी भी हिस्से को रत्ती भर भी हिला न सके। यहाँ तक कि उसके लिए अपनी गर्दन तक घुमाना पूरी तरह असंभव था।

कहने की आवश्यकता नहीं कि बर्ड साहब ने यह कार्य विशेष रूप से सीखकर आए थे, इसलिए इतनी कुशलता से बाँधना संभव हुआ।

हो चुका था। सत्र शुरू होने के ठीक पहले माध्यम ने कहा, "आज प्रेतात्मा क्या करेगी, मैं नहीं जानता। लेकिन मैं कोशिश करूँगा कि वह कोई न कोई अलौकिक कार्य करे। इसलिए मेरी

विशेष विनती है—आपमें से कोई भी व्यक्ति सत्र के समय चिल्लाकर न उठे और न ही घबराकर अपनी जगह छोड़े। ऐसा होने पर परिणाम बुरा हो सकता है।”

इस बार भी माध्यम बर्ड साहब और मेरे बीच बैठा—मैं उसके दाहिनी ओर और बर्ड साहब बाईं ओर थे। पाउएल के अनुरोध पर मैंने अपना बायाँ पैर उसके दाहिने पैर के ऊपर और बर्ड साहब ने अपना दाहिना पैर उसके बाएँ पैर के ऊपर रख दिया। पहले किए गए इतने कड़े बंधन के अलावा उसके हाथ-पैर भी हमारे पूर्ण नियंत्रण में थे, इसलिए उसके द्वारा किसी प्रकार की चालाकी किए जाने की कोई संभावना नहीं रह गई थी। कहने की आवश्यकता नहीं कि उसके दोनों हाथ मैंने और बर्ड साहब ने पकड़ रखे थे।

बर्ड साहब ने बाद में मुझसे कहा था कि माध्यम के साथ हमने जो उपाय अपनाया था, उससे बेहतर उपाय और कोई हो ही नहीं सकता था। पहले सत्र की तरह आज भी बर्ड साहब के दो विशेष मित्र इस कमरे के बाहर रहकर उसके दरवाज़े और खिड़की की निगरानी कर रहे थे।

सत्र शुरू होने के बहुत थोड़े समय बाद ही प्रेतात्मा का आविर्भाव हो गया। हम यह देखकर अत्यंत आश्चर्यचकित हुए कि पहली

आत्मा की तरह यह व्यक्ति भी एक अमेरिकी आदिवासी था। दर्शकों में अमेरिकी लोगों की संख्या बहुत अधिक थी, इसलिए ऐसा क्यों हुआ, यह मैं ठीक-ठीक नहीं जान सका।

इस आत्मा की आवाज़, बोलने का ढंग, अंग्रेज़ी शब्दों का विन्यास आदि सब कुछ पहले सत्र में आए अमेरिकी आदिवासी से पूरी तरह अलग था। बर्ड साहब की भी यही राय थी। इतना ही नहीं, उन्होंने कहा कि इस व्यक्ति के वास्तविक अमेरिकी आदिवासी होने में उन्हें रत्ती भर भी संदेह नहीं था।

पहले लगभग चालीस-पैंतालीस मिनट तक आत्मा ने हम सभी से बातचीत की। यह बातचीत बहुत हद तक पहले सत्र जैसी ही थी, इसलिए उसका वर्णन करके व्यर्थ पुस्तक का आकार बढ़ाना उचित नहीं समझा। आज की जिन घटनाओं ने मुझे अत्यंत विचित्र और अलौकिक प्रतीत हुईं, केवल उन्हीं का यथासंभव संक्षेप में वर्णन कर रहा हूँ।

मेरा विश्वास है कि जो लोग प्रेतात्माओं के अस्तित्व को नहीं मानते, उनके लिए इन घटनाओं का कारण निर्धारित करना पूरी तरह असंभव है।

इस विषय में जब मैंने बर्ड साहब की राय पूछी, तो उन्होंने कहा, “आजकल विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली है। पहले जो बातें

असंभव लगती थीं, अब वे अत्यंत सामान्य बातें हो गई हैं। लेकिन आज के इस सत्र में मैंने अपनी आँखों से जो कुछ देखा, उसे संसार का सबसे बड़ा वैज्ञानिक भी यह नहीं समझा सकता कि वह किस प्रकार संभव हुआ। वह कार्य प्रेतात्मा का था, इसे मैं स्वीकार न भी करूँ, फिर भी सत्य के हित में यह कहने के लिए बाध्य हूँ कि ये कार्य सामान्य प्राकृतिक नियमों के...”

“विरुद्ध हैं। इस विषय में और अधिक अनुसंधान किए बिना मैं इससे अधिक कुछ नहीं कह सकता।” बर्ड साहब अमेरिका की एक विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक संस्था से बहुत निकटता से जुड़े हुए थे। उनके लिए स्पष्ट रूप से प्रेतात्माओं के अस्तित्व को स्वीकार करना शायद उचित नहीं था, इसलिए उन्होंने इस प्रकार की बात कहकर विषय को टाल दिया। लेकिन मैं इसे उनकी मौन स्वीकृति ही मानता हूँ।

ऊपर बता चुका हूँ कि हमने एक छोटा-सा ग्रीनरूम तैयार करके उसके भीतर कुछ वस्तुएँ रखी थीं। उनमें से एक का नाम बताना मैं भूल गया था। वह कुछ छोटी-छोटी घोड़ों की घंटियों के सेट थे। आपमें से बहुतों ने देखा होगा कि कभी-कभी घोड़ों के गले में छोटी-छोटी घंटियाँ माला के रूप में पहना दी जाती हैं। हमने ऐसी चार-चार घंटियों को जोड़कर चार मालाएँ बनाई थीं और उन्हें ग्रीनरूम में रख दिया था।

माध्यम जहाँ बैठे थे, ग्रीनरूम उनके ठीक पीछे था—माध्यम से उसकी दूरी 6-7 फीट से कम नहीं थी। सत्र शुरू होने से पहले एक बहुत छोटी लाल रोशनी के गोले को छोड़कर बाकी सारी रोशनियाँ हटा दी गई थीं। इस गोले की मंद किरणों में हम सब कुछ देख तो पा रहे थे, लेकिन अस्पष्ट रूप से। अभी शाम नहीं हुई थी, इसलिए कमरे में अँधेरा बहुत गहरा नहीं था। हम वस्तुओं और परस्पर उपस्थित लोगों को काफी हद तक स्पष्ट देख पा रहे थे।

सबसे पहले ये घंटियाँ ग्रीनरूम के भीतर बजने लगीं। 21 सेकंड के भीतर घंटियाँ ग्रीनरूम के अंदर से बजती हुई हवा में तैरते हुए मुख्य कमरे में आ पहुँचीं। इसके बाद वे हमारे चारों ओर घूम-घूमकर बजने लगीं। कभी हमारे ठीक कान के पास, कभी ठीक सिर के ऊपर, कभी बिल्कुल डॉसन के ऊपर और कभी बर्ड साहब के ऊपर।

इसके बाद वे कमरे के चारों ओर बहुत तेज़ी से घूमने लगीं। अंत में वे हममें से प्रत्येक के गाल के पास से मानो अत्यंत सावधानी से बजती हुई निकल गईं। यह घटना इतनी विचित्र थी कि हम सभी स्तब्ध होकर बैठे रह गए।

अंत में इन चार सेटों में से एक सेट कमरे के एक कोने में—माध्यम से लगभग 17 फीट दूर—एक सेट डॉसन साहब की गोद में और बाकी दो सेट ग्रीनरूम में रखे हुए पाए गए। (रोशनी जलाने के बाद हमने उन्हें इन तीन स्थानों पर पाया।)

ग्रीनरूम में फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता रखा हुआ था। घंटियों का खेल समाप्त होने के आधे मिनट के भीतर ही यह फूलों का गुलदस्ता ग्रीनरूम से बहुत धीरे-धीरे हवा में तैरता हुआ बाहर आया। पहले वह मेरे चेहरे के सामने से और फिर बाकी सभी दर्शकों के चेहरों के सामने से होकर गुज़रा।

मैंने फूलों की ठंडी छुअन को बहुत स्पष्ट रूप से महसूस किया; (बाद में पता चला कि सभी ने इसी प्रकार महसूस किया था)। इसका...

इसके बाद गुलदस्ते के फूल अलग-अलग करके प्रत्येक दर्शक को एक-एक या दो फूल दिए गए। बाद में मैंने सुना कि किसी को भी दो से अधिक फूल नहीं दिए गए थे।

फूलों के बाद फूलदान की बारी आई। वह भी कई बार हमारे कमरे में चारों ओर हवा में घूमता हुआ प्रत्येक दर्शक के सिर को छू गया। इसके बाद उसे बर्ड साहब की कुर्सी के पीछे मेज़ के ऊपर रख दिया गया।

इसके बाद ग्रीनरूम की स्लेट बाहर आई और हवा में एक बार कमरे के चारों ओर घूमने के बाद उसके भीतर से बहुत गंभीर स्वर में ऊँचे सुर में अंग्रेज़ी का एक गीत निकलने लगा। दो पंक्तियाँ गाने के बाद उसके भीतर से बहुत धीमी आवाज़ में—जो किसी स्त्री की आवाज़ जैसी थी—एक दूसरी आवाज़ पहली आवाज़ के साथ मिलकर निकलने लगी। जब तक ये दोनों आवाज़ें गा रही थीं, स्लेट लगातार घूमती रही।

इसके बाद ग्रीनरूम की मेज़ बहुत धीरे-धीरे हवा में तैरती हुई बाहर आई। फिर वह हवा में घूमने लगी। मेज़ छोटी थी, लेकिन उसे ज़मीन से 8-9 फुट ऊपर इस प्रकार घुमाना किसी मनुष्य के लिए संभव नहीं था। 23 मिनट तक घूमने के बाद मेज़ हमारे मुख्य कमरे के एक तरफ़ दीवार के पास रख दी गई।

इसके समाप्त होते ही कमरे के भीतर प्रकाश के कुछ गोले हवा में तैरते हुए दिखाई दिए। पहले वे बहुत मंद प्रतीत हुए, लेकिन 13 बार घूमने के बाद उनकी चमक धीरे-धीरे बढ़ने लगी। प्रकाश का यह खेल शायद 56 मिनट तक चलता रहा। हवा में इस प्रकाश की सहायता से अंग्रेज़ी के कुछ अक्षर तथा विभिन्न प्रकार के त्रिभुज और समचतुर्भुज जैसे आकार बनते और मिटते रहे।

इस परिच्छेद को समाप्त करने से पहले यह बता देना उचित होगा कि इस पूरे सत्र के आरंभ से अंत तक माध्यम के हाथ बर्ड साहब और मेरे हाथों तथा पैरों के बीच सुरक्षित रूप से पकड़े हुए थे। हमने जो अलौकिक घटनाएँ देखीं, उनमें माध्यम का रत्ती भर भी हाथ नहीं था—यह मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ।

बर्ड साहब ने भी स्पष्ट रूप से कहा, "आज हमने जो कुछ देखा, उसका इस पृथ्वी के किसी मनुष्य द्वारा किया जाना बिल्कुल संभव नहीं है। विज्ञान के बारे में हम अब तक जितना जान पाए हैं, वह आज की इन घटनाओं का कारण बताने में पूरी तरह असमर्थ है। मैं यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हूँ कि यह मेरी समझ और बुद्धि से परे है।"

पाठक स्मरण रखें कि बर्ड साहब प्रसिद्ध वैज्ञानिक पत्रिका *Scientific American* के एक प्रतिष्ठित अधिकारी थे। उन्होंने भी प्रकारांतर से स्वीकार किया कि उपर्युक्त घटनाएँ मानवीय क्षमता से परे थीं।

**कैम्ब्रिज का सत्र**

मैंने पहले निश्चय किया था कि इंग्लैंड में अपने अनुभवों का वर्णन इसी परिच्छेद में समाप्त कर दूँगा। लेकिन बर्ड साहब के

विशेष आग्रह के कारण मुझे एक और घटना का वर्णन करना पड़ा।

इस सत्र के समय मैं स्वयं उपस्थित नहीं था, इसलिए इसे ठीक अर्थ में प्रत्यक्षदर्शी प्रमाण नहीं कह सकता। लेकिन इसमें बर्ड साहब और डॉसन दोनों उपस्थित थे और उन दोनों ने मुझे जो कुछ बताया, मैं वही यहाँ लिख रहा हूँ। इन दोनों के प्रति मेरा इतना गहरा विश्वास है कि उनके वर्णन को मैं प्रत्यक्ष प्रमाण के समान ही मानता हूँ।

इस सत्र में माध्यम का कार्य कुमारी एडा बेसिनेट ने किया था। बर्ड साहब के अनुसार उनकी क्षमता पाउएल से किसी भी प्रकार कम नहीं थी।

बर्ड साहब प्रेततत्त्व के अनुसंधान के लिए फ्रांस, वियना और बर्लिन गए थे। उनके मत में पाउएल और बेसिनेट जैसे माध्यम शायद पूरे यूरोप में और कोई नहीं थे। उन्होंने उन्हें इतना ऊँचा प्रमाणपत्र दिया था कि मुझे विवश होकर इस सत्र की कहानी भी यहाँ वर्णित करनी पड़ी।

## सातवाँ परिच्छेद

यह सियांस कैम्ब्रिज नगर में आयोजित की गई थी। यहाँ भी माध्यम को विशेष सावधानी के साथ कुर्सी से बाँधा गया था। इस कुर्सी के ठीक पीछे लोहे का एक खंभा था। माध्यम को कुर्सी के साथ बाँधने के बाद, माध्यम और उसकी कुर्सी को एक लंबे रस्से द्वारा उस खंभे से भी बाँध दिया गया। कहना अनावश्यक है कि माध्यम किसी प्रकार की चालाकी न कर सके, इसलिए उसे इस प्रकार कठोर और कड़े ढंग से बाँधा गया था।

प्रारम्भ में, जैसा कि प्रायः होता था, एक प्रेतात्मा आई और उसने तरह-तरह की बातचीत की। इनमें से मैं केवल एक घटना का वर्णन करूँगा, क्योंकि बर्ड साहब के मत में यह वास्तव में बहुत ही अद्भुत घटना थी।

इस सियांस के होने से सत्ताईस दिन पहले बर्ड साहब अमेरिका से रवाना हुए थे। उन्हें विदा करने के लिए जो लोग जहाज़ के घाट पर उपस्थित हुए थे, उनमें बर्ड साहब के एक साले, जोनाथन, भी थे। उनके साथ बर्ड साहब की विशेष मित्रता थी।

इस सियांस में अचानक टेबल के भीतर से उसी साले की आवाज़ सुनाई दी। बर्ड साहब यह सुनकर मानो स्तब्ध रह गए।

आवाज़ बहुत धीमी और कुछ अस्पष्ट थी, लेकिन वह जोनाथन की ही आवाज़ थी, इसमें कोई संदेह नहीं था।

लेकिन क्या वह अब इस संसार में नहीं था? वास्तव में ऐसा ही था।

उस आवाज़ ने बर्ड साहब से कहा कि ठीक चार दिन पहले, बुधवार के दिन, लगभग दोपहर के समय...

चार बजे के समय उसने हमारे संसार को छोड़ दिया था। बाद में बर्ड साहब ने अमेरिका से तार द्वारा समाचार मँगवाया कि ठीक उसी दिन और उसी समय जोनाथन ने इस संसार को त्याग दिया था।

प्रेतात्मा के अस्तित्व के विषय में इससे अधिक उत्तम प्रमाण शायद ही कोई हो सकता है। यहाँ यह बात भी बता देना उचित है कि इस सियांस के माध्यम को बर्ड साहब के बारे में पहले से कुछ भी मालूम नहीं था।

पाठक को एक और बात ध्यान में रखनी चाहिए। जो लोग **टेलीपैथी** का सहारा लेकर इस घटना की व्याख्या करना चाहते हैं, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि बर्ड साहब को स्वयं अपने

साले की मृत्यु की खबर पहले से मालूम नहीं थी। इसलिए टेलीपैथी की बात यहाँ उठ ही नहीं सकती।

अब तीन अंग्रेज़ी वाद्ययंत्र लाए गए। इनमें एक छोटा रेडियमयुक्त वाद्ययंत्र भी था, जो रेडियम के कारण अँधेरे में हीरे की तरह चमक रहा था। प्रेतात्मा की बातचीत समाप्त होने के बाद इन तीनों वाद्ययंत्रों के भीतर से एक अत्यंत प्रसिद्ध अंग्रेज़ी गीत बजने लगा। बहुत स्पष्ट रूप से ऐसा अनुभव हुआ कि तीनों वाद्ययंत्रों से तीन अलग-अलग व्यक्तियों के स्वर निकल रहे हैं।

कुछ समय बाद रेडियमयुक्त वाद्ययंत्र शून्य में इस कमरे के चारों ओर घूमने लगा। उसमें रेडियम लगा होने के कारण उसका मार्ग स्पष्ट दिखाई दे रहा था। बर्ड साहब ने स्वीकार किया कि इस प्रकार शून्य में उस वाद्ययंत्र को घुमाना मनुष्य की शक्ति के बाहर की बात है।

पाठकों को याद होगा कि माध्यम को किस प्रकार अत्यंत दृढ़ता से कुर्सी और खंभे के साथ बाँधा गया था। उन बंधनों पर मुहरें भी लगा दी गई थीं। पहले उसे टॉवाइन से बाँधा गया और फिर रेशमी धागे से भी बाँधा गया था। बंधन के स्थान-जगह पर

फंदों के बजाय गाँठें लगाई गई थीं, क्योंकि रेशम की गाँठें काटे बिना खोलना असंभव था।

सियांस का खेल समाप्त होने पर प्रेतात्मा ने कहा—

“अब मैं अपने माध्यम के बंधन खोल दूँगा। लेकिन तुम लोग उसके हाथ और पैर दबाकर जिस तरह बैठे हो, उसी तरह बैठे रहना।”

इसके लगभग तीन मिनट बाद प्रेतात्मा ने कहा—

“हमारा काम समाप्त हो गया है। अब प्रकाश लाकर देख सकते हो।”

तुरंत प्रकाश लाया गया। देखा गया कि माध्यम सभी बंधनों से पूरी तरह मुक्त हो चुका था। लेकिन वह जिस प्रकार निश्चेष्ट होकर पड़ा था, उससे लगा कि उसे होश नहीं था।

बर्ड साहब इस समय माध्यम के शरीर पर हाथ रखने के लिए आगे बढ़े, लेकिन [माध्यम की ओर से] जोर से कहा गया—

“उसके शरीर को हाथ मत लगाओ। ऐसा करने से माध्यम को बहुत नुकसान हो सकता है।”

बर्ड साहब ने बाद में मुझसे कहा—

"इस प्रकार के बंधन को तीन मिनट के भीतर किस तरह खोल दिया गया, यह मेरी बुद्धि से परे है।"

हम यह घटना देखकर स्तब्ध और निःशब्द बैठे रहे।

उन्होंने कहा कि इस प्रकार की अत्यन्त अद्भुत घटना उन्होंने पहले कभी नहीं देखी। इसके बाद मैंने प्रेतात्मा से कहा—"इस काम में तुम्हारी बहादुरी मैं स्वीकार करता हूँ। लेकिन यदि तुम इस बन्धन को फिर ठीक पहले जैसी अवस्था में बाँध सको, तो मैं मानूँगा कि यह वास्तव में प्रेतात्मा का ही कार्य है।"

इसके बाद तेज प्रकाश हटा दिया गया। लगभग चार मिनट बाद हमने सुना—"बन्धन का काम पूरा हो गया है। तुम लोग आकर जाँच कर सकते हो। मोहरों और रेशमी धागे की गाँठों को अच्छी तरह देखना।"

अद्भुत बात! हमने देखा कि माध्यम ठीक पहले वाली अवस्था में ही था। जिस स्थान पर जिस क्रम की मोहर लगी हुई थी, वह ठीक उसी प्रकार लगी थी। रेशमी धागे के बन्धन में भी हमें रत्तीभर अन्तर दिखाई नहीं दिया।

उस दिन का अन्तिम प्रदर्शन—कोरस में गाना—था। लगभग आठ-दस अलग-अलग लोगों के स्त्री-पुरुष स्वर एक ही साथ शून्य से एक अंग्रेज़ी गीत को सुन्दर स्वर और लय में गाने लगे। दो-तीन स्वरों को कुछ अस्पष्ट-सा अनुभव हुआ—शब्द मानो पूरी तरह स्पष्ट नहीं निकल रहे थे। इसमें मुझे तनिक भी संदेह नहीं था कि अनेक भिन्न-भिन्न लोग गा रहे थे। सभी स्वर हमारे सिरों के ऊपर से आ रहे थे।

इस séance के बाद मैंने बार्ड साहब से प्रेतात्माओं के अस्तित्व के विषय में उनका मत पूछा। उन्होंने कहा—

“मैं एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक संस्था के प्रतिनिधि के रूप में यहाँ आया हूँ। यहाँ मैंने séance के विषय में जो-जो देखा है, मैं उसे ठीक उसी प्रकार लिखता जा रहा हूँ। मेरा यह विवरण समिति के सामने रखा जाएगा और वही समिति इसका विचार करके अपना मत देगी। मैं अभी केवल इतना कह सकता हूँ कि मैंने ऐसी-ऐसी घटनाएँ देखी हैं जो मेरी बुद्धि से परे हैं और मुझे पूर्णतः अलौकिक प्रतीत हुई हैं।”

**समापन**

कॉलेज-जीवन से लेकर आज तक, लगभग चालीस वर्षों से मैं प्रेततत्त्व-विषय को जहाँ तक सम्भव हो, समझने और सीखने का

प्रयत्न करता आया हूँ। इसी उद्देश्य से मैं भारत के विभिन्न प्रदेशों में घूमता रहा हूँ और पश्चिमी देशों के भी कुछ स्थानों की यात्रा की है। इस दीर्घ भ्रमण के फलस्वरूप प्रेततत्त्व के सम्बन्ध में जो कुछ जान सका हूँ, उसी को यथासम्भव संक्षेप में इस पुस्तक में वर्णित किया है। यदि इस पुस्तक के द्वारा मैं किसी का ध्यान इस विषय की ओर आकर्षित करने में सफल हुआ हूँ, तो मैं समझूँगा कि मेरा सारा परिश्रम सफल हुआ।

मुझसे बहुत लोगों ने अनेक बार पूछा है—"चक्र (séance) कैसे बैठाया जाता है? इसके लिए कौन-कौन-सी वस्तुएँ एकत्र करनी पड़ती हैं? कितने दिनों तक चक्र बैठाने के बाद प्रेतात्मा उपस्थित होती है?" आदि-आदि। अपने दीर्घ अनुभव के आधार पर इस विषय में जो कुछ जानता हूँ, उसे संक्षेप में बता रहा हूँ।

सबसे पहले मेरी प्रार्थना है कि कोई यह न समझे कि मैंने गुरु का पद प्राप्त कर लिया है। मैं जो कुछ कहूँगा...

मैं एक विद्यार्थी के रूप में ही अपनी बात कहूँगा। पाठक मेरी बातों को उसी भाव से ग्रहण करें। बहुत दिनों से मैं इस विद्या का अध्ययन और चर्चा करता आ रहा हूँ। इसलिए मेरा विश्वास

है कि नए विद्यार्थियों से मैं ऐसी कुछ बातें कह सकूँगा, जिनसे इस विद्या को सीखने में उन्हें कुछ सहायता मिल सकती है।

लेकिन यहाँ एक बात विशेष रूप से स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ। जो लोग इस विद्या को सीखना चाहते हैं, वे केवल प्रेततत्त्व से सम्बन्धित पुस्तकों पर निर्भर न रहें। सबसे पहले एक अनुभवी गुरु की आवश्यकता है। उपयुक्त गुरु के बिना इसे सीखना असम्भव है। इसके बाद इस विषय की पुस्तकें पढ़नी चाहिए।

एक और बात उन्हें सदैव याद रखनी चाहिए—यदि सम्भव हो तो वे कुछ समय के लिए इंग्लैंड और अमेरिका की यात्रा करके आएँ। वहाँ छह महीने में हम जो कुछ सीख और देख सकते हैं, उसे इस देश में दस वर्ष में भी सम्भवतः नहीं सीख पाएँगे।

जो लोग समझते हैं कि चक्र (séance) बैठाना बहुत सरल है—चार-पाँच लोग हाथ पकड़कर एक मेज़ के चारों ओर बैठ जाएँ और एक गीत गा दें, तो दूसरी दुनिया की आत्मा उपस्थित हो जाएगी—वे भूल करते हैं। यदि चक्र बैठाना इतना सरल होता, तो प्रत्येक घर में इसका आयोजन होने लगता।

चक्र बैठाने से पहले माध्यम का चुनाव करना पड़ता है। माध्यम ही चक्र का प्राण है। हम इस पुस्तक में कई स्थानों पर

यथासम्भव स्पष्ट रूप से कह चुके हैं कि प्रेतात्मा सूक्ष्म शरीर धारण करती है। जब तक उसके भीतर कुछ मात्रा में जड़शक्ति नहीं आती, तब तक हम उसकी बात सुन नहीं सकते और न ही उसे देख सकते हैं। चक्र में जिस व्यक्ति से प्रेतात्मा यह जड़शक्ति प्राप्त करने में समर्थ होती है, उसी को हम 'माध्यम' कहते हैं।

पाठक याद रखें कि हर कोई माध्यम नहीं बन सकता। प्रेततत्त्व-विज्ञान अभी शैशवावस्था में है। माध्यम बनने के लिए ठीक-ठीक कौन-कौन से गुण अथवा किस प्रकार का स्वभाव आवश्यक है, इसका अभी तक हमें पूर्ण ज्ञान नहीं है।

अपने अनुभव से हमने जाना है कि अच्छे माध्यमों की संख्या स्त्रियों में अधिक है। इससे यह अनुमान किया गया है कि स्त्रियों जैसी कोमल प्रकृति के बिना कोई माध्यम नहीं बन सकता। अच्छे-अच्छे माध्यमों के चरित्र का भली-भाँति विश्लेषण करके हमने देखा है कि माध्यम बनने के लिए कोमल स्वभाव का विशेष रूप से होना आवश्यक है। अब तक हमने किसी अत्यन्त रूखे या क्रोधी स्वभाव वाले व्यक्ति को माध्यम बनते नहीं देखा।

जो लोग चक्र बैठाना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि शाम के बाद कुछ लोगों को लेकर चक्र बैठाएँ। चक्र किस प्रकार बैठाना चाहिए, उसका संक्षिप्त विवरण हम आगे देंगे।

जिन लोगों को लेकर आप चक्र बैठाएँगे, उनमें कम-से-कम दो...

उनमें कम-से-कम एक स्त्री अथवा कोमल स्वभाव का कोई पुरुष अवश्य हो। सप्ताह में दो बार से अधिक चक्र नहीं बैठाना चाहिए। इस प्रकार बार-बार चक्र बैठाते रहने से उपस्थित लोगों में किसके भीतर माध्यम बनने की शक्ति है, यह समझा जा सकता है।

इस प्रकार माध्यम का चुनाव करना सम्भव तो है, लेकिन कठिन है। इसलिए हमारी सलाह है कि जो लोग प्रेततत्त्व की शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, वे किसी उपयुक्त गुरु की सहायता लें।

अच्छा माध्यम मिल जाने पर भी प्रारम्भ में किसी अनुभवी संचालक के बिना चक्र का आयोजन नहीं करना चाहिए। कई बार अवसर मिलने पर दुष्ट आत्माएँ उपस्थित हो जाती हैं और यदि उनके मन के अनुसार काम न किया जाए, तो उनके द्वारा अनेक प्रकार की हानि पहुँचाई जा सकती है।

हमें सदैव याद रखना चाहिए कि **चक्र बैठाना कोई खेल नहीं है।**

**चक्र बैठाने के नियम**

**१।** सामान्यतः एक गोल मेज़ के चारों ओर जितने लोग बैठेंगे, उतनी ही कुर्सियाँ रखनी चाहिए। कुर्सियों पर गद्दी लगी हो तो अच्छा है। अन्यथा लकड़ी की सीट वाली कुर्सियों का ही प्रयोग करना चाहिए।

**२।** माध्यम सहित उपस्थित लोगों की संख्या **विषम** होनी चाहिए, अर्थात् ३, ५, ७, ९ आदि।

**३।** इस प्रकार बैठना चाहिए कि एक व्यक्ति की दाहिनी हथेली दूसरे व्यक्ति की बाईं हथेली पर बहुत हल्के ढंग से रखी रहे। प्रत्येक व्यक्ति के दोनों पैर अलग-अलग रखे होने चाहिए; अर्थात् एक पैर को दूसरे पैर के ऊपर रखकर नहीं बैठना चाहिए।

**४।** यदि एक से अधिक महिलाएँ उपस्थित हों, तो प्रत्येक महिला को दो पुरुषों के बीच बैठना चाहिए। यदि एक से अधिक मोटे या दुबले व्यक्ति हों, तो दो मोटे अथवा दो दुबले व्यक्तियों को एक-दूसरे के पास नहीं बैठना चाहिए।

**५।** जो लोग प्रेततत्त्व में विश्वास नहीं करते अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते, उन्हें चक्र में उपस्थित नहीं होना चाहिए।

**६।** चक्र के समय उपस्थित सज्जनों का कर्तव्य है कि...

**६।** जहाँ तक सम्भव हो, मन में किसी बुरे या अपवित्र विचार को स्थान नहीं देना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति परलोक गए अपने किसी विशेष सम्बन्धी या मित्र को देखना चाहता हो, तो उसे पूरे मन से उसी व्यक्ति का ध्यान करना चाहिए।

**७।** यदि किसी ने किसी प्रकार का मादक पदार्थ या उत्तेजक द्रव्य लिया हो, तो उसे चक्र में नहीं बैठना चाहिए।

**८।** जब सब लोग हाथ पकड़कर बैठें, तब प्रत्येक व्यक्ति के दोनों हाथ बहुत हल्के ढंग से मेज़ पर रखे होने चाहिए।

**९।** जिन कुर्सियों पर दर्शक बैठेंगे, वे सभी लगभग समान ऊँचाई की होनी चाहिए।

**१०।** प्रारम्भिक चक्रों में निकट सम्बन्धियों या घनिष्ठ मित्रों के अतिरिक्त किसी और को उपस्थित रहने देना उचित नहीं है।

अर्थात् जिन लोगों को आप अच्छी तरह नहीं जानते, उन्हें उपस्थित नहीं होने देना चाहिए।

**११।** प्रारम्भ में पाँच-सात दिन लगातार चक्र बैठाने पर भी यदि कोई परिणाम प्राप्त न हो, तो अधीर नहीं होना चाहिए। लेकिन यदि चक्र उचित ढंग से बैठाया जाए, तो मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि अवश्य ही परिणाम प्राप्त होगा। फिर भी यदि कोई अनुभवी व्यक्ति चक्र का संचालन करे, तो पहले ही दिन परिणाम मिल सकता है। भारत में मैंने जिन-जिन चक्रों का आयोजन किया था, उनमें मुझे पहले ही दिन सफलता मिली थी; क्योंकि हमारे संचालक गुरुभक्त ब्रह्मचारी प्रेततत्त्व में विशेष रूप से अनुभवी थे।

**१२।** चक्र के समय मेज़ पर कुछ ताज़े और सुगन्धित फूल, एक चोंगा, एक हारमोनियम, कुछ कागज़, एक पेंसिल और एक छोटा लैम्प रखना चाहिए।

**१३।** चक्र में बैठने के बाद पहले दो या तीन तान-लययुक्त भजन या आध्यात्मिक संगीत गाना चाहिए। साथ-साथ बहुत हल्के हाथ से हारमोनियम बजाना चाहिए।

**१४।** गीत समाप्त होने के बाद बिल्कुल शान्त और निःशब्द होकर बैठे रहना चाहिए। इस समय ईश्वर का ध्यान अथवा

परलोक गए आत्मा का मन-ही-मन चिन्तन करना चाहिए। इस प्रकार आधे घंटे तक बैठने के बाद भी यदि कोई परिणाम न मिले, तो माध्यम और अन्य सभी लोगों को अपने स्थान बदल लेने चाहिए और फिर दो-एक गीत गाने चाहिए। इसके बाद भी यदि कोई परिणाम न मिले, तो उस दिन फिर चक्र नहीं बैठाना चाहिए।

**१५।** प्रारम्भिक चक्रों के समय कमरे में किसी प्रकार का प्रकाश नहीं रखना चाहिए। कमरे में बाहर से कोई प्रकार का प्रकाश अथवा तेज़/कर्कश आवाज़ प्रवेश न करे, इसका उचित प्रबन्ध करना चाहिए।

**१६।** चक्र के समय दर्शकों में से किसी को भी अपना स्थान छोड़कर नहीं जाना चाहिए। इस समय किसी को माध्यम को स्पर्श नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से माध्यम को विशेष हानि पहुँच सकती है।

**१७।** चक्र के दौरान यदि देखा जाए कि माध्यम अचेतन या अर्ध-अचेतन अवस्था में है, तो उसे होश में लाने का प्रयास कम-से-कम १०–१५ मिनट तक नहीं करना चाहिए। यदि इसके बाद भी उसकी अचेतन अवस्था दूर न हो, तो ठंडे पानी के छींटे उसके

मुँह और आँखों पर देने चाहिए। गर्मी का मौसम हो तो हल्के हाथ से हवा भी की जा सकती है।

**१८।** यदि चक्र में किसी दुष्ट प्रेतात्मा का आविर्भाव हो जाए और यदि देखा जाए कि वह जाने के लिए तैयार नहीं है, तो दो-एक ईश्वर-भक्ति के गीत गाने से कई बार अच्छा परिणाम मिलता है। ऐसी आत्मा के साथ किसी प्रकार का दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए। ऐसा करने पर परिणाम विशेष रूप से संकटपूर्ण होने की सम्भावना रहती है।

**चक्र-कक्ष**

नए विद्यार्थी के लिए प्रारम्भ में चक्र छोटे कमरे में बैठाना उचित है। कमरे का आकार लगभग ८ × १० या १० × १५ फुट से अधिक नहीं होना चाहिए। यदि माध्यम विशेष रूप से शक्तिशाली न हो, तो बड़े कमरे में चक्र प्रायः सफल नहीं होता।

कमरा रास्ते या गली से जितना दूर हो, उतना ही अच्छा है। बाहर का किसी भी प्रकार का शोर कमरे के भीतर न आए, इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

यूरोप और अमेरिका के अनेक स्थानों में चक्र-कक्ष को प्रयोगशाला की तरह सजाया जाता है। पहले कमरे को **sound-**

**proof** (बाहरी आवाज़ को भीतर आने से रोकने वाला) और **light-proof** (बाहरी प्रकाश को भीतर आने से रोकने वाला) बनाया जाता है। माध्यम के बैठने की कुर्सी **weighing machine** पर रखी जाती है, जिससे माध्यम का वजन अपने-आप दर्ज होता रहे।

हम पहले ही कह चुके हैं कि प्रेतात्मा माध्यम के शरीर से जड़शक्ति ग्रहण करके हमारे सामने प्रकट होती है। यदि वह इस जड़शक्ति को ग्रहण न कर सके, तो सूक्ष्म देहधारी प्रेतात्मा की बात हम सुन नहीं सकते और न ही उसे देख सकते हैं।

चक्र में प्रेतात्मा की...

प्रेतात्मा के प्रकट होने के बाद वजन करने वाले यंत्र से हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि माध्यम का वजन धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। चक्र समाप्त होने के लगभग ३ मिनट पूर्व से उसका वजन धीरे-धीरे बढ़ने लगता है और चक्र समाप्त होते-होते उसका सामान्य वजन फिर लौट आता है। माध्यम के वजन में यह कमी और वृद्धि इस बात का स्पष्ट प्रमाण मानी जाती है कि कोई अज्ञात शक्ति पहले माध्यम की जड़शक्ति का कुछ अंश ग्रहण कर लेती है और बाद में उसे फिर लौटा देती है।

इन सभी प्रयोगशालाओं में माध्यम की नाड़ी की गति की जाँच करने के लिए उपकरण रखे जाते हैं। इसके अतिरिक्त हाथ-पैर के साँचे लेने के लिए प्लास्टर, तरल पैराफिन आदि भी रखे रहते हैं। जिस स्थान पर प्रेतात्मा जड़ रूप में प्रकट होती है, वहाँ उसका फोटो भी लिया जाता है।

आश्चर्य की बात यह है कि कैमरे में कभी-कभी प्रेतात्मा की तस्वीर बहुत स्पष्ट दिखाई देती है, और कभी-कभी कुछ भी दिखाई नहीं देता। ऐसा क्यों होता है—यह स्वयं प्रेतात्मा भी नहीं बता सकती।

जब प्रेतमूर्ति प्रकट होती है, तब उसके हाथ या पैर के निशान प्लास्टर अथवा पैराफिन पर लिए जाते हैं। इस प्रकार के कई साँचे मैंने अमेरिका में देखे थे।

**प्रकाश का प्रकट होना**

इस पुस्तक में मैंने कई स्थानों पर कहा है कि चक्र-कक्ष में प्रेतात्मा के आविर्भाव का पहला संकेत प्रकाश का प्रकट होना है। जिस प्रकार का प्रकाश मैंने देखा था, उसका वर्णन मैं उचित स्थान पर संक्षेप में कर चुका हूँ। यूरोप और अमेरिका की प्रसिद्ध प्रेततत्त्व-सम्बन्धी प्रयोगशालाओं में इस प्रकार के प्रकाश

के संबंध में वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रयोग चल रहे हैं। उनके कुछ प्रयोगों के परिणाम मैं संक्षेप में नीचे लिखता हूँ।

१। फ्रांस के डॉ. ... ने अपने पेरिस स्थित प्रयोगशाला में छह वैज्ञानिकों के सामने एक चक्र बैठाया। एक माध्यम ने इसमें कार्य किया। चक्र आरम्भ होते ही माध्यम अचेतन हो गया।

सबसे पहले देखा गया कि प्रकाश के कई गोले मानो एक स्थान से निकलकर प्रत्येक दर्शक के चारों ओर घूमने लगे। उनके आकार भी अलग-अलग थे—कुछ साधारण गेंद के समान, कुछ मुर्गी के अंडे के समान। उनमें से कुछ अत्यन्त चमकीले और कुछ अपेक्षाकृत मंद थे।

जब तक ये प्रकाश-पुंज इधर-उधर घूमते रहे, पूरा कमरा एक प्रकार की हल्की धुंध से ढका हुआ था। उनके प्रकट होने के लगभग ३–४ मिनट बाद देखा गया कि दो छोटे प्रकाश-पुंज तरल पैराफिन से भरे पात्र के पास पहुँचे। अगले ही क्षण वे दोनों प्रकाश धीरे-धीरे उस पात्र के भीतर प्रवेश कर गए।

इसके तुरंत बाद उसके भीतर से 'छप-छप' जैसी आवाज़ हम सभी ने स्पष्ट रूप से सुनी। ऐसा प्रतीत हुआ मानो पैराफिन बहुत तेजी से हिल रहा हो।

यहाँ यह कहना शायद अनावश्यक है कि गैरे/कक्ष के ६ फुट के भीतर कोई भी व्यक्ति नहीं था।

लगभग एक मिनट बाद वे दोनों प्रकाश उस पात्र के भीतर से बाहर निकले और सीधे मेरे पास आ पहुँचे। मेरे सामने मेज़ पर पैराफिन से बने एक जोड़े हाथ (सेकण्ड-हैण्ड/हाथों की जोड़ी) रख दिए गए। ये दोनों प्रकाश ठीक इसी प्रकार दो बार और पैराफिन के पात्र के भीतर गए और दो और जोड़े हाथ बनाकर मेज़ पर रख दिए।

उपर्युक्त घटना से बहुत स्पष्ट प्रतीत होता है कि इन दोनों प्रकाश-पुंजों में किसी प्रेतात्मा के दो हाथ थे और उन्हीं के द्वारा ये हाथ तैयार किए गए थे।

**२।** सर विलियम क्रुक्स (Sir William Crookes) इंग्लैंड के एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक और प्रेततत्त्व के शोधकर्ता थे। उस समय इंग्लैंड की एक वैज्ञानिक पत्रिका में उन्होंने एक लेख में लिखा था—

"एक बार मैं एक चक्र में उपस्थित था। सबसे पहले मुझे यह कहना चाहिए कि इस चक्र में किसी प्रकार की छल-कपट या चालाकी करने का कोई अवसर नहीं था। सबसे पहले मैंने देखा कि संगमरमर की गोली के समान एक गोलाकार, चमकीला

प्रकाश कमरे में उपस्थित हुआ। वह किस प्रकार और किस रास्ते से वहाँ आया, मैं समझ नहीं सका। लगभग १८ मिनट तक वह कमरे के चारों ओर घूमता रहा। कभी वह किसी व्यक्ति को छू रहा था और कभी हमारे ठीक सिरों के ऊपर से गुजर रहा था। यहाँ यह बता देना उचित है कि इस कमरे की ऊँचाई १८ फुट थी।"

**३।** एक और अवसर पर मैंने देखा कि कमरे में एक अस्पष्ट प्रकाश के बीच एक प्रकार की धुंध उपस्थित हुई। बहुत थोड़े समय बाद मैंने देखा कि उस धुंध के भीतर धीरे-धीरे एक हाथ शून्य में इधर-उधर घूम रहा था। हाथ की पाँचों उँगलियाँ और प्रत्येक उँगली के नाखून तक हम सभी को बहुत स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

उस हाथ ने हम सभी से हाथ मिलाया। आश्चर्य की बात यह थी कि हममें से दो व्यक्तियों ने उस हाथ को सामान्य मनुष्य के हाथ के समान कुछ गरम अनुभव किया, जबकि बाकी सभी ने उसे बर्फ के समान ठंडा महसूस किया।

यूरोप और अमेरिका के और भी अनेक स्थानों पर इसी प्रकार के प्रकाश प्रकट हुए हैं। इन सभी चक्रों में अनेक प्रसिद्ध वैज्ञानिक उपस्थित थे, इसलिए उनके विषय में किसी प्रकार का

संदेह करना आसान नहीं है। पुस्तक का आकार अनावश्यक रूप से बढ़ जाएगा, इसलिए मैंने इन सभी घटनाओं को यहाँ विस्तार से नहीं दिया।

**सम्पूर्ण**

पाठकों से विदा लेने से पहले मैं एक बार फिर कहूँगा कि मनुष्य के देह त्यागने के बाद उसकी आत्मा और सूक्ष्म शरीर नष्ट नहीं होते। हम यदि उचित प्रकार से प्रयास करें, तो फिर से उसके साथ बातचीत कर सकते हैं और उसे देख भी सकते हैं। इसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है।